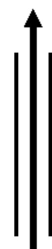
कोइली घूरि आउ



सुजीत कुमार झा



प्रकाशक

आफन्त नेपाल

कोइली घूरि आउ

बालकथा संग्रह

लेखक	: सुजीत कुमार झा
संस्करण	: पहिल
विक्रम सम्बत	: २०६९
प्रति	: ११००
©	: लेखकाधीन
मोल	: २००।- टका
प्रकाशक	: आफन्त नेपाल
आवरण सज्जा	: कैलास दास
ISBN	: 978-9937-2-5872-2
मुद्रक	: हिसि अफसेट प्रिन्टर्स, जमल काठमाण्डू

Koilee Ghuir aau

Child Stories Collection

by:**Sujeet Kumar Jha**

समर्पण

कीर्तिशेष प्रातः स्मरणीय
नानी विद्या देवी झा आ
नाना स्वर्गीय शंकर
झाक चरण तीर्थमे
समर्पित

प्रकाशकीय

ककरो मुहँ सँ सुनने रहियै एडिडैज कम्पनी जुताक कारखाना खोलवाक लेल दक्षिण अफ्रिकामे दू टा सर्वेकर्ताकेँ पठौने छल। ओहि समय दक्षिण अफ्रिकामे खासे लोक जुता नहि पहिरैत छल, एहनमे कारखाना कोना चलत ? एकटा सर्वेकर्ता अपन रिपोर्ट देलक। दोसरकेँ कहब छल दिमाग लगाओल जाएत तऽ सभकेँ पयरमे जुता पहिराओल जा सकैत अछि। कम्पनी दोसर सर्वेकर्तापर विश्वास कएलक आ कम्पनी पुरे दक्षिण अफ्रिकामे छा गेल।

करीव-करीव हमरो संस्था लग मैथिलीकेँ पुस्तककेँ सम्बन्धमे एहने स्थिति छल। किओ पढ़बे नहि करैत अछि तऽ किए निकालू ? एडिडैज कम्पनीबला बात प्रेरणा बनल। हमहुँ सभ खतरामोल लेलहुँ आ छाएल बात तऽ नहि कहि सकैत छी, मुदा दू टा पुस्तक निकालहुँ दुनूमे सफल छी।

एकरे प्रतिफल अछि हमसभ तेसरो कृति प्रकाशन करवाक साहस कएलहुँ।

फेर एकटा सुखद जानकारी करावी जे युवा पत्रकार सुजीत कुमार झा आ आफन्त नेपालकेँ जोड़ी बनल रहल आ हमसभ संग-संग तेसरो कृति लऽ कऽ आएल छी।

पत्रकार सुजीतक चिड़ै, रिपोर्टर डायरी आ जिद्दी जेकाँ वाल कथा संग्रह 'कोइली घुरि आउ' अपनेसभ पसिन करबैक से विश्वास अछि।

अपनेसभक सहयोग सदैव आफन्त नेपाल पर बनल रहत से विश्वास अछिए। आफन्त मैथिली भाषा भाषीक लेल भाषा, साहित्य, संस्कृति, शिक्षा आ स्वास्थ्य क्षेत्रमे काज करैत रहत से प्रतिवद्धता फेर सँ जनबैत छी।

पुस्तकमे जे किछु त्रुटी हेतैक औपचारिक रुप सँ सूचित कऽ देवाक लेल आग्रह करैत छी।

जय प्रकाश मण्डल
संयोजक
आफन्त नेपाल

‘कोइली घूरि आउ’: विहंगावलोकन

♦डा. राजेन्द्र विमल

नेपालीय मैथिली साहित्यक इतिहासमे झोलफलाइत भगजियार इजोतक पेट्रोमेक्स सन बालकथा संग्रह होएबाक श्रेय लेबाक कारणेँ श्री सुजीत कुमार झा लिखित ‘कोइली घूरि आउ’ -क ऐतिहासिक महत्व स्वयंसिद्ध अछि। बाल साहित्य प्रणयनक दृष्टिएँ मैथिली साहित्यक अवस्था ऋणात्मक रहल अछि। पुस्तकाकार प्रकाशनक तऽ नितान्त अभाव रहल अछिए, पत्र–पत्रिका सेहो निरन्तरता नहि पाबि सकल। सर्व प्रथम प्रयागसँ ‘बटुक’ (१९४१ ई.) प्रकाशित भेल, जे दू डेग चलि ठमकि गेल। तहिया बन्द भेलाक पश्चात् पुनः १९५९–६० सँ डेगाडेगी दए रहलाह अछि ‘बटुक’। एहि ‘बटुक’ -क काया बड्ड दूर्बल। कहियो नओ–दस त कहियो पाँच–छओ पृष्ठक। सम्पादकक रुपमे आडुर धराए बेचारे अभिभावक डा.सुधाकान्त मिश्र दू-चारि डेग चलबैत छथिन्ह – ‘बटुक’ फेर पिछड़िकए धायसँ खसैत छथि। अर्थाभावक पिच्छड़ बड़ जान लेवा होइत छैक। से किच्छु वर्षसँ ‘बटुक’ फेर निपत्ता छथि। १९५७ ई.मे डा. धीरेन्द्रक सम्पादनमे ‘धीया–पूता’क प्रकाशन प्रारम्भ भेल छल लोहना (मधुबनी) -सँ। ‘धीया–पूता’ १९७० ई. धरि ठेहुनियाँ देलक, ठाढ़ भए नीकेँ ना चलि नहि सकल। एक अंक दरभंगासँ ‘शिशु’ प्रकाशित भेल, सर्वदाक हेतु कालकवलित भए गेल। बालसाहित्यक

क्षेत्रमे एहि पत्रिका सभक महत्वपूर्ण योगदान अछि। मुदा सर्वाधिक उल्लेखनीय योगदान थिकै ‘मिथिला–मिहिर’ (१९०९ई.) -सँ प्रकाशित ‘नेना–भुटकाक चौपाड़ि ’ स्तम्भक जाहिमे नियमित रुपेँ बाल –साहित्यक विविध विधामे रचना प्रकाशित होइत रहल। नेपालमे बाल लोक कथापर आधारित देवेन्द्र मिश्र लिखित ‘बगियाक गाछ’ यद्यपि एहिसँ पूर्व प्रकाशित भेल अछि मुदा ओकर आधार लोक कथा थिक। विशुद्ध कल्पनापर आधारित ‘बालकथा’ ई पहिल थिक। एहि अकालग्रस्त बालसाहित्यमे ‘कोइली घूरि आउ’ एकटा हरियर दूभि पोनगल अछि। ई अओर घनघर होइक। कलात्मक ढंगसँ एकरा काटल–छाँटल जाइक। व्याकरणिक त्रुटिक काँट–कुश आँकर–पाथर लोढ़ल बीछल जाइक। ई अगजगमे पसरए। तेँ सबहक कान्ह लागब बांछनीय।

‘कोइली घूरि आउ’ संग्रहक कथा सभक दोसर विशेषता थिकै बालमनोविज्ञानक सूक्ष्म विश्लेषण। बच्चाक लेल, बच्चाक भाषामे, बच्चाक कथा एना लीखब जे बच्चाकेँ अप्पन कथा बूझि पड़ैक आ ओकर मोन मोहिलैक, एकगोट चुनौतीपूर्ण काज थिकै, जकरा बालमनोविज्ञानक क्षेत्रमे सूक्ष्म तथा गहन अध्ययन आ अनुभव प्राप्त कोनो सिद्ध लेखके स्वीकार कए सफलता प्राप्त कए सकैत अछि। कक्षामे दोसर स्थान पबैत पपली विज्ञानक उत्तरपुस्तिका बदलि पश्चाताप करैत अछि आ शिक्षिकासँ उपदेश पबैत अछि –‘मोनमे ईर्ष्याक नहि प्रतिस्पर्द्धाक भावना ला !’ तऽ स्कूल जाइत बच्चा अपनाकेँ विज्ञान वा पपलीक अवस्थामे पावए लगैत अछि। ‘शिष्टताक कमाल’मे राजा आ साधुक कथा होइक वनवासीक प्रयासमे हाथी, हरिण आ नढ़ेयाक कथा होइक, कछुआ आ खढ़ेयाक कथा होइक, सुगा आ कोइलीक कथा होइक, हीरा आ मोती बरदक कथा होइक, औंठीक खिस्सा होइक, नकली गहनाक खेरहा होइक, मिकी, मुन्ना जादूगर, रवि बाघ आ कारी कोइलीक कहानी होइक, चलाक अघोरी, जयजय, राजा जनकक वंशज, उपकारी कौआ, चिड़ै आ ओकर बच्चा, बाघ आ बिलाड़ि, नथुनी दास, रोशनी, चलाक हरिण, विजय आ ओकर मम्मी पापा, मक्खीचूस चुल्हाई, सेवक गाछ आ सोनी, राजा आ सुनील, बैकुण्ठ अंकलक होरी–सभ कथामे बालमनोविज्ञानक सूक्ष्म आ रोचक विश्लेषण भेल अछि।

परीलोकक अतिमानवीय, अतिरञ्जनात्मक तिलस्मी संसारकेँ छोड़ि

संसारक बालसाहित्य आब यथार्थक कठोर धरातलपर विचरण करए लागल अछि। तात्पर्य थिकै जे बालमन जँ बाल्यकालमे अतीन्द्रीय कल्पना-लोकमे संचरण करैत रहत तऽ जीवनक याथर्थसँ टकड़ाइत रहबाक चुनौती स्वीकार करबाक हिम्मति ओकरामे छीजैत जएबाक खतरा छै। ओकर बालसाहित्य ओकरा जीवनक यथार्थसँ संघर्ष करबाक उत्प्रेरणा आ संकल्प दैक,से बांछनीय। एहि बालकथा संग्रहक कोनो कथा बच्चाकेँ परीलोकमे नहि लऽ जाइत अछि। सभ एहि संसारक पशु-पन्छी, गाछ–बिरिछ आ मनुक्खक कथा छैक।

बालकथा जँ खिस्साक माध्यमसँ भूगोल, इतिहास, गणित, विज्ञान आदि विषयक ज्ञान दैक, ओकरा मानवीय संवेदना आ मूल्यसँ संस्कारित करैक तऽ ओकरा हम श्रेष्ठ बालकथाक कोटिमे रखबैक। मैथिलीक स्वनामधन्य युवा साहित्यकार श्री सुजीत कुमार झाक बालकथा एहि कसौटीपर श्रेष्ठ उतरैत अछि। प्रत्येक कथा उच्च आ शाश्वत मानवीय मूल्यसँ बालमस्तिष्ककेँ संस्कारित करबाक सफल कलात्मक आयास थिक।

१. अपन मोनमे ईर्ष्याक नहि,
प्रतिस्पर्द्धाक भावना ला।

–प्रतिस्पर्धाक भूत

२. शिष्टाचार एक अद्वितीय गुण होइत अछि जे मनुष्यकेँ मात्र सम्मान नहि दिअबैत अछि, अपितु ओकर काज सेहो सहज बना दैत अछि।

–शिष्टताक कमाल

३. एकतामे बल होइत अछि। जखन एकसँ दस, दससँ सय आ सयसँ हजार संगी बनि जाइत छैक तऽ कोनो काज करब आसान भऽ जाइत अछि

–वनबासीक प्रयास

४. सभसँ तेज दौड़ऽबला जानवर भेलाक बादो खढ़ेया समाज आइधरि एकटा कछुआसँ हारि जएबाक दुःख मनबैत अछि।... हम नहि चाहैत छी अहाँक समाज एगो एहि बातक लेल दुःखी रहए ...। (संवेदनशीलता ! विमल)

–कछुआ फेर जीतल

५. 'हम हुनका ताकब, हुनका कोटर सजाबऽमे सहायता करब,' कठखोधी बाजल।

'चिल्होरिसँ हम वचन दैत छी फेर कहियो ककरो हृदय नहि दुखाएब', मेना बाजल।

– कोइली घूरि आउ

६. जहिना हरेक चमकैत चीज सोना नहि होइत अछि, तहिना हरेक मिठ्ठ बाजऽवला अहाँक हितैषी वा मित्र होएत से आवश्यक नहि अछि। सहीमे मित्र तऽ उएह होइत अछि जे समस्यामे काज अबैत अछि।

– चलाक हीरा बरद

एहि प्रकारे एक–एक कथा किछु शाश्वत सत्यक उद्घाटन करैत अछि सार्वकालिक मूल्यक स्थापना करैत अछि। विशेषता ई थिकै जे कोनहु कथा उपदेशात्मक शैलीमे नहि लीखल गेल अछि, अपितु मनोरञ्जक, सरस आ कौतुक कौतूहलपूर्ण घटनाक कार्य-कारण श्रृङ्खलाक उपस्थापनद्वारा सत्य संधानक क्रम आगा बढ़ाओल गेल अछि, जाहिसँ बच्चा ओहि सत्यकेँ बिना झिझकने अङेजि लैत अछि। प्रत्येक कथाक परिवेश नेपालक मिथिला खण्ड अछि जे एतुक्का बच्चा–बच्चीकेँ सहज लगैत अछि।

'पंचतंत्र'क स्मरण करबैत ई कथा सभक आकार लघु थिकै। अगुताएत नहि। नेपालीय मिथिलाञ्चलक भौगोलिक अवस्थिति, साँस्कृतिक पृष्ठभूमि, शैक्षिक पर्यावरण, राजनैतिक सामाजिक संरचना आदिक पृष्ठभूमिमे सार्वभौम मूल्यक आधारपर नेना–भुटकाक व्यक्तित्वक युगानुकूल विकासक हेतु प्रतिबद्धताक सँग रचित 'कोइली घूरि आउ'क कथा वर्तमान नेपालक हिंसाग्रस्त समाजमे करुणा, प्रेम, एकता, शान्ति, आशावादिता, उत्साह, सकारात्मकता सन्देश देबाक कारण सेहो श्लाघनीय थिक।

❐

बालकथाक प्रयोजन की ?

♦डा. रमानन्द झा 'रमण'

सुजीत कुमार झाक दू टा बाल कथा, जेना 'ठेलाबाला' (गामघर, १० अक्टूवर, १९९५ ई.) पढने रही। फेर किछु दिनक बाद महाकवि रमाकान्त झाक महाकाव्य 'व्यथा' पर केन्द्रीत एक लेख ओहि पत्रिकामे पढबाक अवसर भेटल। सर्जनात्मक एवं विवेचनात्मक- दुनू प्रकारक बाटपर डेग उठौनिहार नव प्रतिभाक औरो रचना पढ़बाक उत्सुकता बढ़ैत रहल। सम्भव थिक एक-दू बेर देखादेखी भेल हो, मुदा साहित्यकार सँ बेसी पत्रकारक रुपमे। से एहि हेतु जे साहित्यकार घण्टा, दू घण्टा बैसि बतिएबामे आनन्द लैत छथि आ पत्रकार किछु टिपलनि आ फुर्र। ओहूँमे जँ कोनो संघति आ नजरि पड़ि गेलथिन, त गप्पे नहि हो।

एक दिन दरभंगामे श्री चन्द्रमोहन झा 'पड़वा' अभरलाह। टुघरैत–टुघरैत पहुँचि गेलहुँ हुनक पुरखाही डेरा। 'चिड़ै' देखए देलनि। कहलनि, 'सोनिताएले छैक। अहूँक बखरा राखल अछि।' हम उनटबैत छलहुँ आ ओ हमर मुखाकृति पढ़ैत छलाह। जाइत काल लिखि–पढि हाथमे दए देलनि। जएह रोगीकेँ भावय, सएह बैदा फरमाबय।

गत जुनमे जनकपुरमे सुजीतसँ 'रिपोर्टर डायरी' भेटल। उनटा पुनटाकेँ देखल तँ डा. भीमनाथ झाक 'टावर चौक'सँ मोन पड़ि गेल। मोनमे सोचलहुँ, लेखक पत्रकार छथि, अवश्य ई रिपोर्ट सभ लिखि-लिखि गोरने नहि जाइत छल होएताह। आ जँ छपल छनि तँ प्रकाशन स्थल एवं तिथिके छपेबासँ कोन परहेज ? तथापि, सुजीतक ई तेसर रुप छल। मुदा, दोसर (साहित्य समीक्षा) आ तेसर

(सामाजिक राजनीतिक घटनाक्रम वा भ्रष्टाचारक विरुद्ध पक्षपातहीन समीक्षात्मक रिपोर्ट) काजमे आन कोनो समानता हो वा नहि, मुदा दुनू लेखन बेसी काल अप्रीतिकरे होइत अछि। जे साहित्य समीक्षक सदक्षिण लेखनकला, कुशल नहि रहैत छथि, वा पातपर अहगरके परसि नहि दैत छथिन, तँ आत्ममन्थन बिना कएने कतेको रचनाकार आमिल पीबि लैत छथि। मुदा, ई धरि अवश्य जे पत्रकार जकाँ जानक खतरा साहित्य– समीक्षककेँ नहि रहैत छनि। तकर कारण छैक जे एक निर्भीक आ नीर-क्षीर विवेकी पत्रकारक लक्ष्य ओहि वर्गक लोक बेसी होइत छथि, जतय मायावी एवं दानवीशक्ति अत्यन्त सहज सुलभ अछि। 'रिपोर्टर डायरी' पढ़ि अनुभव भेल अछि जे पत्रकार सुजीत कुमार झामे निर्भीकता एवं अन्वेषणप्रियताक गुण असामान्य रुपेँ विद्यमान अछि।

हमरा समक्ष इन्टरनेटसँ डाउनलोड कएल सुजीतक प्रकाश्य बालकथा संग्रह 'कोइली घूरि आउ'क पाण्डुलिपि अछि। पाण्डुलिपि देखि प्रसन्नता भेल। संगहि जिज्ञासा सेहो। जिज्ञासाक कारण भेल जे ई बालकथा सभ ककरा लेल लिखल जाइछ ? एकर पाठक के ? के पढि आनन्द लेत ? के प्रेरणा ग्रहण करत ? के ओहिसँ लाभाविन्त होएत ?

बालकथाक लेखन पहिल लक्ष्य बालवर्गहिकेँ होएवाक चाही। परञ्च, से एहि बात पर निर्भर अछि जे मैथिली भाषी, समाजक गृहभाषा नीति की छनि ? ओ अपन बाल बच्चाक संग मैथिलीमे सम्भाषण करैत छथि वा नहि ? यदि मैथिलीमे सम्भाषण करैत छथि तँ हुनक सन्तानक रग-रगमे मैथिली समाएल रहत। मैथिली हुनक संस्कार बनि जाएत। अपन महान सँस्कृति एवं साँस्कृतिक सम्पदाक ओ संवाहक एवं संरक्षक बनल रहताह। एहन परिवारक सन्तान मैथिलीक माध्यमसँ वा वैकल्पिक विषयक रुपमे मैथिली नहिओ पढने रहैछ, तैओ अपन भाषा, मैथिली पर वर्ग रहैत छनि। बालसाहित्ये नहि, अन्यो प्रकारक मैथिलीक साहित्यमे रुचिक विकास होइत रहैछ। ओ मैथिली साहित्य पढ़ताह, मैथिलीक बालकथा तकताह आ ओहिमे रुचि लेल करताह। आ जँ ओ बजार एवं लाभप्रदताक बसातमे प्रभावशाली वा शासकीय भाषाक गरे ओडठि गेल छथि, तँ ओहि घरक धियापुतामे मैथिली प्रति अनुराग विकसित नहि होइत छैक। ओ मैथिली नहि, बजारक भाषा वा शासकीय भाषा बजैत अछि। तखन, मैथिली भाषा साहित्यक प्रति अभिरुचिक कोन प्रश्न ? मैथिली भाषा आ ओहिमे सुरक्षित पारम्परिक ज्ञानक स्रोतक विलुप्तिक बाटके प्रशस्त करबामे ओ सहायक होइत अछि।

मैथिलीक बालकथा विकासक दोसर महत्वपूर्ण कारक थिक प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा मैथिलीक माध्यमसँ देल जाएब। एकर अभावमे बालवर्ग स्वयं नहि पढि सकैत अछि आ ने वर्गमे पढाओल जएतैक। तखन मैथिली बालकथाकप्रति रुचि विकासित होएब सम्भव नहि रहैछ। मुदा, इहो मैथिलीक गृहभाषा नीतिएपर निर्भर करैछ जे ओ सार्वभौम मानवाधिकार घोषणाक अनुच्छेद २६ मे जे साँस्कृतिक सुरक्षाक कवच छैक, तकरा प्रति कतेक तत्पर छथि। जतय धरि दक्षिण मिथिलामे मैथिलीक माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षाक प्रश्न अछि, स्वतन्त्रताक प्रथमहि दशाब्दमे नीतिगत निर्णय भेल छल। किन्तु प्रशासनमे मैथिली विरोधीक चलतीसँ कार्यान्वयन अद्यावधि लम्बिते अछि। उत्तर मिथिलाक किछु जिलाक किछु विद्यालय एहि लेल नामित अछि आ ओहि क्षेत्रक धियापुताकेँ मैथिलीक माध्यमसँ शिक्षाक सुविधा अवश्य प्राप्त छैक। बाल साहित्यक विकास आ संरक्षणक लेल ई स्थिति अनुकूल अछि।

बाल साहित्यक लेखन प्रकाशन तथापि होइत रहबाक अन्य प्रमुख कारण अछि, सरकारी गैर सरकारी स्तरपर चलाओल जाए रहल विभिन्न प्रकारक प्रोत्साहन एवं पुरस्कार योजना। एकर पृष्ठभूमिमे अछि वैश्विक चिन्ता। चिन्ताक कारण अछि बजार आ सूचना तकनीकीक उठल उजाहिमे विश्वक कतेको भाषाक विलुप्त भए जाएब वा विलुप्तिक कनगी पर पहुँचि जाएब। भाषाक सँग केतेको संस्कृति एवं पारम्पारिक ज्ञानक स्रोत जखन लुप्त भए गेल तँ विश्वसमुदायक लेल ई चिन्ताक कारण भेलैक। एहि चिन्तामे विभिन्न देशक सरकारक सँग भारत आ नेपालक सरकार सेहो अछि। एम्हर आबि बाल साहित्य लेखनकेँ प्रोत्साहित करबाक निमित्त अनेक प्रोत्साहन/पुरस्कार योजना आरम्भ कएल गेल अछि। भारतमे साहित्य अकादमीद्वारा 'बालसाहित्य पुरस्कार' देवाक निर्णयक वाद सँ दक्षिण मिथिलामे धराधर पोथी छपय लागल अछि। नेपालमे सेहो बाल साहित्य लेखनके प्रोत्साहित करबाक लेल अनेक पुरस्कार योजनाक जनतब अछि।

बाल साहित्यक लेल दू टा विन्दु अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि – भाषा एवं विषय वस्तुक रोचकतापूर्ण शैलीमे शिक्षाप्रद होएब। ओना साहित्यक सभ विधाक प्रभावक अभिव्यक्तिक लेल भाषा एवं शिल्पक महत्व छैक। मुदा, बाल साहित्यक लेल किछु विशेषे महत्व छैक। ओहूँमे कथाक भाषा तँ औरो सहज एवं सरल होएबाक चाही। तखनहि, ओ मनलग्गू भए सकत। रोचकता विषयक सँग भाषाक माध्यमे अबैत छैक। एहि लेल अपेक्षित रहैछ जे छोट एवं सरल वाक्यक

प्रयोग कएल जाए। उपवाक्य नहि रहैक। विशेषण वा क्रिया विशेषणक प्रयोगसँ भाषा आक्रान्त नहि रहए। लच्छेदार भाषा देखि विमुख भए जएबाक पूर्ण सम्भावना रहैक छैक।

बालकथाक लेल वाक्य गठनहि नहि, शब्द चयनक सेहो पर्याप्त महत्व छैक। अपरिचित शब्दक प्रयोग, अभिव्यक्त विचारक सहज सम्प्रेषणमे अवरोध उत्पन्न करैत अछि। अतएव, सामान्य जीवनमे प्रयुक्त शब्दावलीक प्रयोग बालकथाक लेल बेसी श्रेयष्कर अछि। ओहूँमे घर आँगनमे बाजल जाइत शब्दक प्रयोग विशेष प्रभावक होइत छैक। बालकथामे साँस्कृतिक शब्दक प्रयोग सेहो महत्वपूर्ण अछि। एहिसँ स्वतः अपन संस्कृतिक परिचय होइत जाइत छैक। बालवर्गमे मोनेमोन पढ़बाक अपेक्षा, उच्चारण करैत पढ़बाक प्रवृति देखल गेल अछि, अतएव, सहज सुलभ उच्चारणवाला शब्दक चयन अपेक्षित अछि। एहि सन्दर्भमे ई चिन्ताक कारण थिक जे दुनू पारक नवका तूरक मैथिलीक लेखकक भाषा, एकहि स्रोतक प्रभावसँ आक्रान्त भेल जाइछ – वाक्य विन्यास एवं शब्द सम्पदा, दुनू रुपमे।

कोइली बसन्तक उद्घोषक थिक। ओ सुरम्य एवं वैविध्यपूर्ण प्रकृतिक प्रतीक थिक। 'कोइली घूरि आउ' प्रतीकात्मक अछि। ई बढि रहल प्रदूषण एवं जैविक विविधतापर भए रहल सांघातिक प्रहार एवं ओहिसँ मानव अस्तित्व पर जे संकट अएलैक अछि, तकरहि चिन्ताकेँ व्यक्त करैत अछि।

'कोइली घूरि आउ'मे संकलित कथाक पात्र तीन क्षेत्रसँ लेल गेल अछि - पंक्षी, पशु- जानवर एवं मनुष्य। मुदा, सभमे कोनो ने कोनो एहन बात रोचक ढंगे अवश्य कहल गेल छैक जे धियापूताक गुणात्मक व्यक्तित्व निर्माणमे सहायक होएतैक। बाल साहित्यक जे पहिल शर्त अछि, तकरा सुजीतक प्रस्तुत कथा संग्रह पुरा करैत अछि।

हमरा विश्वास अछि विषय वस्तुक चयन एवं अपन पाठकीयताक लेल सुजीतक बाल कथा संग्रह 'कोइली घूरि आउ' वाल वर्ग तऽ सहजहि पसीन करत, मैथिलीक वाल साहित्यक अध्येता तथा सुधी एवं प्रबुद्ध समुदायक बीच सेहो आकर्षण एवं चर्चाक विषय बनत।

प्रो. हरिमोहन झा जयन्ती
१८ सितम्बर, २०१२ ई.
पटना

यात्रा चलैत रहए

♦अमर चन्द्र अनिल

हमरा बहुत दिन सँ इच्छा छल मैथिलीमे बालकथासभ सेहो अवितैक ।

सुजीतक पहिल कृति कथा संग्रह चिड़ैक विमोचन करवाक अवसर हमरे भेटल छल । ओ विमोचन समारोहमे हम कथाकारसभ सँ आग्रह कएने छलहुँ जे धीयापुताक लेल सेहो किताव लिखल जाए । प्रसन्ताक गप्प ई अछि जे हमरा कहला एक वर्ष नहि वितैत भाइ सुजीत 'कोइली घूरि आउ' बाल कथा संग्रह लिख लेलन्हि ।

बुढमे ककरो कहबैक मैथिली सिखए लेल, ई कठीन काज हएत । धीएपुता सँ आदत लगाबए पड़त । अर्थात वच्चाकेँ मैथिली भाषा दिस आकर्षित करय पड़त ।

हमरा लगैया सुजीतक ई कथा संग्रह एहिमे सफल हएत । मुदा एकटा किताव अएला सँ मात्र नहि हएत । अन्य साहित्यकारसभकेँ सेहो बाल मनोविज्ञान पर केन्द्रीत भऽ कऽ कलम चलाबए पड़त ।

हम कोनो साहित्यकार नहि छी, मुदा नीक पुस्तक पढए सँ रुचि रखैत छी ।

फेर कोनो किताव नीक लागल तऽ एक वा दू वैसारमे पढि लैत छी । सुजीतक 'कोइली घूरि आउ' एतेक रोचक लागल एक्के बैसारमे पढि लेलहुँ । सुजीतक 'चिड़ै', 'रिपोर्टर डायरी' आ 'जिद्दी' पुस्तक सेहो पढने छी ।

'कोइली घूरि आउ' पढलाक बाद ई कहि सकैत छी साहित्यकार सुजीतमे दिन सँ दिन निखार आबि रहल अछि ।

मैथिली साहित्यमे जाहि लगनशीलताक संग सुजीत आगा बढि रहल छथि ओ अपना पीढिकेँ नेतृत्व करता से हमरा विश्वास अछि ।

पत्रिका, रेडियो आ टिभीमे एक संग काज कएलाक बादो पुस्तक लेखन दिस आगा बढि रहल छथि जे प्रशंसनीय अछि ।

कथा कहवाक शैली सुजीतकेँ अन्य कथाकार सँ फरक अछि । पत्रिकारिता शैलीमे रहल ओ कथासभ पाठककेँ एना कऽ आकर्षित करैत अछि विना पढौने छोड़बे नहि करैत अछि । फेर एकर भाषा सेहो बोल चालक भेलाक कारण लोककेँ विना कठिनाईकेँ पढा दैत अछि ।

अन्तमे सुजीत भाइकेँ लेखन यात्रा एहिना चलैत रहौक से शुभकामना दैत छियैन्हि ।

समाजसेवी

कोइली जेकाँ कुहकैत सुजीतक बालकथा सभ

♦श्याम सुन्दर शशि

एक वर्षक अभ्यन्तर तीन गोट पुस्तक प्रकाशन कऽ मैथिली साहित्याकाशमे जगजियार भेल युवा साहित्यकार एवं संचारकर्मी सुजीत कुमार झाक एक गोट आओर कृति बाजारमे अएवाक वास्ते छानपगहा तोड़ि रहल अछि। सुजीत नव विधा लऽ कऽ पाठक समक्ष अएवाक तैयारीमे जुटल छथि आ ओ थिक –बाल कथा संग्रह 'कोइली घूरि आउ'। २७ गोट बाल कथासभक ई संग्रह निश्चित रुपेण मैथिलीक पाठक आ समीक्षक लोकनिकेँ नीक लगतन्हि। बाल मनोविज्ञानके विकछवैत ई कथासभ भिन्न-भिन्न परिवेशक अछि आ नेना भुटकाक वास्ते ज्ञानवर्द्धक सेहो। संग्रहमे संग्रहित किछु कथा बेर-बेर सुनल आ पढल जेकाँ लगैछ तऽ किछु कथा नव सेहो बुझना जाइछ।

अपन सकृयता आ मैथिली प्रेमक कारणे पत्रकारिता मात्र नहि साहित्य क्षेत्रमे सेहो अलग स्थान बनावएमे सफल सुजीत कुमार झाक पूर्व प्रकाशित दू गोट कथा संग्रह आ संचारकर्मी रुपमे हुनक पूर्व प्रकाशित लेखसभक संग्रह 'रिपोर्टर डायरी' आम पाठकके नीक लगलन्हि। यद्यपि समीक्षीय दृष्टिएँ मीन मेष निकालवाक पर्याप्त जगह अछि तथापि मैथिलीमे पुस्तक लिखव आ एकरा प्रकाशन कराएव दुःशाध्य कार्य अछि। सुजीत एहि कार्यमे निपुन छथि। समग्रमे कही तऽ सुजीतक तीनू कृतिके मैथिली पाठक लोकनि आह्लादपूर्वक स्वीकार कएलन्हि। पाठक आ आलोचक लोकनि सेहो हुनक कृतिसभके सराहना कएलन्हि। खास कऽ नव रचनाकारक दृष्टिए हुनकर रचनासभक कूड़ विश्लेषण नहि भेल

अपितु दोषसँ बेसी गुणपर दृष्टिपात कएल गेल। नव साहित्यकार सभकेँ एतेक लाभ तऽ भेटवाके चाही ने।

२७ गोट बाल कथासभक संग्रह 'कोइली घूरि आउ'मे विभिन्न परिवेशक कथासभ संग्रहित अछि। अंग्रेजी आवासीय विद्यालयसभमे प्रारम्भिक कक्षासँ शुरु होवएवला अप्राकृतिक प्रतिष्पर्धाक सुन्दर चित्र संग्रहक पहिल कथा 'प्रतिस्पर्धाक भूत'मे देखल जाऽ सकैछ। अभिभावक अपन-अपन धीया पूताके कक्षामे प्रथम होइत मात्र देखए चाहैत छथि। वास्तविकता ई अछि जे एकगोट कक्षामे दर्जनो विद्यार्थी रहैत अछि आ प्रथम केओ एक्कहि गोटे भऽ सकैत अछि। कक्षामे प्रथम होएवाक वास्ते बाल बालिका गलत काज करवाक लेल सेहो उद्यत भऽ जाइत अछि। ई कथा धीया पूताक वास्ते मात्र नहि अपन-अपन बाल बालिकाके प्रथम होएवाक लेल बाध्य बनावएवला अभिभावक वास्ते सेहो सिख अछि।

बाल कथा लिखवाक आ कहवाक विभिन्न शैली होइत अछि। सुजीत सेहो एहि शैलीसभक अवलम्बन कएने छथि। संग्रहमे प्रतिष्पर्धाक भूत, शिष्टताक कमाल सहितक यथार्थताक धरातलपर लिखल कथासभ अछि। एहि कथासभक कथावस्तु वास्तविक आ बाल मनोविज्ञानके बहुत लग अछि। ज्ञानवर्द्धक तऽ अछिए। एकरा अतिरिक्त चिड़ै चुनमुन, जनावर आ विभिन्न मिथकके आधार बना सेहो कथा गढ़ल गेल अछि। कछुआ फेर जीतल, कोइली घूरि आउ, चलाक हीरा बरद आदि एहि श्रेणीक कथासभ अछि। एहि श्रेणीक कथासभ सेहो सुन्दर अछि आ ज्ञानवर्द्धक सेहो। बाल मनोविज्ञानके विकछवैत ई कथासभ नव संदेश सेहो दैत अछि। किछु पूर्व प्रचलित बाल कथासभक नयाँ सिरासँ पुनःलेखन कएल बुझना जाइछ। यथा 'कछुआ फेर जीतल' कथाके लेल जा सकैछ। ई कथा पढलासँ बुझना जाइछ जे पूर्व पठित कथाक नयाँ संस्करण पढि रहल होइ। शैली आ विषय वस्तुक हिसावसँ पुरान होइतहुँ संग्रहक किछु कथा नयाँ स्वाद दैत अछि। एक गोट लेखकके वास्ते ई पैघ विशेषता अछि। साहित्यमे एहन प्रयोग होइत रहल अछि।

सुजीतक भाषामे निरन्तर निखार आवि रहल अछि। विद्यमान बाल कथा संग्रहक भाषा आ शैली अत्यन्त सरल अछि। सम्भवतः सुजीत कथा लिखैत काल धीया पूताक मनोविज्ञानके दृष्टिमे राखि लिखने होइथ। सम्प्रति सुजीतके नव विधाक नव कथा संग्रहक वास्ते बधाई।

किछु हमरो

♦सुजीत कुमार झा

हमहुँ बालकथा लिखतहुँ बच्चेसँ मोन होइत छल । मोन होबएके कारण छल बच्चामे नंदन किताब बहुत पढैत छलहुँ । पण्डौलसँ मंजु दिदी अबैत छल तऽ हमरा लेल अन्य सनेष जे अनैत छल से तऽ अनबे करैत छल सँगहि दू चारि महिनाके नंदन अवश्य अनैत छल जकरा हम महिनो लगा कऽ पढैत छलहुँ । पढलाक बाद बेर–बेर मोन होइत छल ऐना तऽ हमहुँ लिख लेबैक । मुदा जखन हम कथा लिखब शुरु कएलहुँ तऽ कथा मे हमर प्रवेश प्रेम कथासँ भेल । फेर समाजिक विषय सभपर हमर कथा केन्द्रित होबए लागल ।

ओना बाल कथा लिखी से इच्छा कायमे छल । एक दिन त्रिभुवन विश्व विद्यालय मैथिली विभागक विभागाध्यक्ष परमेश्वर कापड़ि हमर कार्यालयमे एलथि आ कहए लगलथि आब बाल कथा लिखु । बाल कथा पढने तऽ छलहुँ मुदा कोना लिखी तकर तरकिब नहि छल । परमेश्वर सर हमरा पढए लेल करिब एक सय हिन्दी बाल कथा देलन्हि आ किछु सुझाव सेहो । फेर हुनके आदेशसँ लिखब शुरु कएलहुँ आ संग्रह जोगर कथा तैयार भऽ गेल ।

ओना एफएम एशोसिएन वानक केन्द्रीय उपाध्याक्ष राजेश कुमार कर्ण, नेपाल पत्रकार महासंघ धनुषाक अध्यक्ष रामअशिष यादव, साहित्यकार अशोक दत्त, नाटककार अवधेश पोखरेल आ हमर पिसा चन्द्रमोहन झा 'पड़वा' सेहो बेर–बेर सुझाव दैत रहला अर्थात प्रेरक बनैत रहलथि । कतेको कथाके पूर्णतामे हुनकर सभक महत्वपूर्ण योगदान रहल । अन्त्यमे

आदरणीय अशोक दत्त जी तऽ भाषाक शुद्धिधरि सेहो देखि देलन्हि । एकटा बात सहजे स्वीकार करब बाल कथा लिखब बहुत दूरुह काज लागल । अन्य संग्रहसँ बाल कथा बहुत फरक होइत छैक ।

एहिमे भूमिका लिखिकऽ डा. राजेन्द्र विमल, डा. रामानन्द झा 'रमण', अमरचन्द्र अनिल आ श्याम सुन्दर शशि हमरा पर बहुत उपकार कएलन्हि एहिके लेल हुनकर चारु गोटेके ऋणी छी । सँगहि भाई अमरकान्त अमर, खुश्बु झा आ कैलास दास के सेहो बहुत योगदान रहल अछि । कैलास जी तऽ हमर अन्य कथा जेकाँ एकरो पेज डिजाइन कएलन्हि । भाई सुधीरचन्द्र आचार्य के कतबो धन्यवाद व्यक्त करब कमे हएत । ओ हमर पुस्तक कोना जल्दी प्रकाशित होइक एहिके लेल बेर–बेर तगेदा करैत रहैत छथि । आदरणीय धर्मेन्द्र झा, वृज कुमार यादव, उमेश साह, जीवनाथ चौधरी आ गुरु बीएम खनालक प्रति सेहो अभार व्यक्त करैत छी ।

फेरसँ पुस्तकके प्रकाशनक लेल आफन्त नेपाल आगा नहि आएल रहैत तऽ ई पुस्तक अपने सभ लग नहि आएल रहैत । ओ संस्थाक कार्यक्रम संयोजक जय प्रकाश मण्डल, संस्थाक उपाध्यक्ष प्रदीप यादव आ फिडा इन्टनेशनलक रविन्द्र दासके प्रति सेहो हृदयसँ धन्यवाद दैत छी ।

ई पुस्तक लिखएमे भाई अतिश मिश्र, जीतेन्द्र झा, सीमा चौधरी, रोशन झा, ईश्वरचन्द्र झा, संजीव कुमार झा, मुकेश पाठक, विनोद महतो, जयन्त ठाकुर, प्रकाश प्रेमी, घनश्याम मिश्र,रुपेश सिंह, राकेश सिंह, बटुकनाथ झा, विजय मस्तके सेहो सहयोग महत्वपूर्ण रहल ।

आदरणीय पाठक लोकनि हमर अन्य पुस्तक जेकाँ एकरो अपन हृदयमे स्थान देबैक से विश्वास अछि । अपनेक स्नेह कायम रहलै तऽ जल्दिए एकटा नयाँ पुस्तक लऽकऽ आएब से वचनबद्धता व्यक्त करैत छी ।

sujitjha100.80@gmail.com

विषय सूची

प्रतिस्पर्धाक भूत

'बाबा हमर रंगक डिब्बा तऽ घरेपर छुटि गेल,' विज्ञान बाबा संग चौकपर जाइतकाल बाजल।

'विज्ञान, रातिमे अपन ब्याग तैयार कऽ कऽ नहि सुतल छलएँ की ?'

बाबा कनी जोड़ सँ बजला।

'बाबा रातिमे पढ़िते–पढ़िते बहुत अबेर भऽ गेल, एहिद्वारे रातिमे ब्यागकेँ तैयार नहि कऽ सकलहुँ आ भोरमे जल्दी जल्दीमे रंगक डिब्बा राखब बिसरि गेलहुँ,' विज्ञान उत्तर देलक।

'जो दौड़ कऽ आनि ले हम एतहि ठाढ़ छी,' बाबा बजला।

विज्ञान दौड़ कऽ घर गेल आ रंगक डिब्बा लऽ कऽ चौक पर चलि आएल। जखन ओ चौकपर पहुँचल तऽ बाबा देखलन्हि जे विज्ञानकेँ संग जाएबला बच्चा ठाढ़ नहि छल। ओ ओतए ठाढ़ लोकसभ सँ पुछलन्हि,' सिद्धार्थ स्कूल जाएवला बस चलि गेल की ?'

एक व्यक्ति बाजल,' जी एखने एक मिनेट पहिने गेल अछि।'

बाबा तमसाइत बजला,' विज्ञान तोरा स्कुल छोड़ए कैं जएतहुँ , तोहर पापा तऽ आँफिस चलि गेल हेतहुँ आइ छुट्टी लऽ ले।'

' बाबा आइ हमर दू टा विषयक परीक्षा अछि। एक म्याथकेँ आ दोसर ड्राइङ्गकेँ। हम अंकलकेँ संग मोटरसाइकिल पर चलि जाएब।'

विज्ञान जखन कक्षामे पहुँचल तऽ ओहि बसमे आबएबला एकटा मित्र बाजल,' विज्ञान आई अबेर किए भऽ गेलौक ?'

विज्ञान ओकरा अबेर सँ आबएकेँ कारण बता देलक।

ओ बाजल,' विज्ञान आइ बसमे पपली बहुत प्रशन्न भऽ रहल छल। अपन संगीकेँ कहि रहल छल जे आइ विज्ञान नहि आएल अछि। आब तऽ हमही प्रथम भऽ जाएब। '

'विज्ञान हरेक वर्ष कक्षामे प्रथम अबैत छल आ पपली द्वितीय, एहिद्वारे ओ विज्ञान सँ ईर्ष्या करैत छल। विज्ञान आँखि उठा कऽ पपली दिस देखलक, ओकर चेहरा पर तामस आ ईर्ष्याक भाव स्पष्ट देखाई दऽ रहल छल।

किछुए देरमे परीक्षा शुरु भऽ गेल। पहिने म्याथकेँ भेल आ बादमे ड्राइङ्गकेँ। मैडम पपलीकेँ बजौलन्हि आ कहली,' पपली ई परीक्षाक काँपीसभ टिचर रुममे आलमारीमे राखि आ, ई चाभी ले। ताला बढिया जेकाँ लगबिहे। '

पपली कापी आलमारीमे राखि चाभी मैडमकेँ दऽ देलक। किछु दिनकबाद काँपी जाँचि मैडम कक्षामे बाँटि देलन्हि। जखन विज्ञान म्याथकेँ पेपर देखलक आश्चर्यमे छल। ओकरा ५० अंकमे मात्र २५ आएल छल, जखन की ओकर परीक्षा बढिया जेकाँ बनल छल।

ओकर पुरा काँपीमे लाल नजरि आबि रहल छल। कारण पुरेमे जिरो एक दू लिखा गेल छल। हम तऽ एना नहि कएलहुँ अछि ओ ध्यान सँ एक बेर फेर पेपर दिस तकलक आ मैडम दिस जा कऽ बाजल, मैडम हमरा काँपीमे जिरो एक दू लिखल अछि ओ हम नहि लिखलहुँ अछि। '

' की मतलव यदि तो नहि लिखलए अछि तऽ ई फेर कैं लिख देलकैक,' मैडम तमसा कऽ बजली।

'ई तऽ हमरा नहि बुझल अछि मैडम, मुदा ई हमर लिखाबट नहि अछि,' विज्ञान दृढ स्वरमे बाजल।

मैडम काँपी लऽ ध्यान सँ देखए लगली हुनका लागल लड़का सही कहि रहल अछि। ई अनावश्यक शव्दकेँ कोनो महत्व नहि छैक। मैडम सोचए लगली ई काज ककर भऽ सकैत अछि। सोचिते- सोचिते हुनकर ध्यान आएल परीक्षा देबए दिन ओ पपलीकेँ काँपी आलमारीमे राखएकेँ लेल देने छली तऽ की ई काज ओकरे भऽ सकैत अछि ? भैयो सकैत अछि। कारण ओ

विज्ञान सँ बहुत ईर्ष्या करैत अछि।

विज्ञानकेँ काँपीमे अंक बढा कऽ मैडम काँपी ओकरा दऽ देलक।

पिरियड समाप्त भेलाक बाद मैडम पपलीकेँ अपना संगे टिचर रुममे लऽ गेली आ बहुत प्रेम सँ बजली,'पपली एकटा बात पुछियौ, सते-सते कहबए ? '

'जी मैडम,' पपली बाजल।

'म्याथकेँ परीक्षा दिन हम तोरा आलमारीमे काँपी राखए लेल देने छलियौक ?'

'मैडम ओ तऽ हम राखि आएल छलहुँ,' पपली बाजल।

'पपली, हमर बात एखन समाप्त नहि भेल अछि। ई कह तो ओहि दिन विज्ञानकेँ काँपीमे की कए देलही ?' मैडम कनीक कड़ा स्वरमे पुछली।

पपलीक चेहराक रंग उड़ि गेल मुदा डेराइत–डेराइत बाजल,' मैडम हम किछु नहि कएलहुँ अछि।'

'देखि, यदि सही–सही बता देलए तऽ हम तोरा माफ कऽ देबौक अन्यथा प्रिन्सिपल आ तोहर मम्मी पापा सँ बात करय पड़त,' मैडम बजली।

पपली कानए लागल। बाजल, 'मैडम हम अहाँकेँ सत-सत कहैत छी, प्लीज अहाँ ककरो नहि कहबैक।'

'पपली तो तऽ हमर कक्षाक प्रतिभाशाली छात्रा छए, यदि तो स्वयं अपन गलती स्वीकार कऽ लए तऽ हम ककरो किछु नहि कहबैक, मैडम कनी शान्त स्वरमे कहली।

मैडम सँ आश्वासन पेलाक बाद कनैत–कनैत पपली बाजल, ' मैडम हम ओहि दिन जखन काँपी राखए गेलहुँ, तऽ टीचर रुम खाली छल हम विज्ञानकेँ काँपी निकालि कऽ किछु–किछु लिख देलहुँ।'

'तो एना किए केलही ?' मैडम बजली।

'मैडम, हम सभ दिन कक्षामे द्वितीय अबैत छी। हमर मम्मी पापा बेर–बेर कहैत रहैत अछि जे तो प्रथम किए नहि अबैत छए ? हम जखन रिपोर्ट बुक पर हस्ताक्षर कराबए लेल जाइत छी तऽ ओ कहैत छथि तो अगिला बेर प्रथम नहि अएबे तऽ हम हस्ताक्षर नहि करबौक। मैडम हम प्रथम आबएकेँ लेल विज्ञानकेँ काँपीमे एना कएलहुँ अछि।'

छोट पपलीक ई बात सुनि मैडम स्तब्ध रहि गेली। ओ सोचए लगली

आइकाल्हि हरेक माए वाप सोचए लागल अछि जे ओकर बच्चा प्रथम होइक मुदा ई कोना सम्भव भऽ सकैत अछि ? कक्षामे प्रथम तऽ एकहिटा वच्चा हएत। माता पिता ई नहि सोचैत छथि हुनकर ई भावना वच्चाकेँ कोन बाटपर लऽ जएत। एहिमे बेचारी पपलीक कोन दोष ?

पपलीकेँ बुझबैत मैडम कहली,' पपली पढाईमे तो बहुत तेज छए मुदा पता नहि तोरा रिपोर्ट बुकमे खेलकुद, सफाई, अनुशासन, उपस्थिति, आदीकेँ सेहो अंक भेटैत अछि। मुदा विज्ञान प्रत्येक गतिविधिमे भाग लैत अछि, एहिद्वारे ओ तोरा सँ बेसी अंक अनैत अछि। यदि तहुँ सभ गतिविधिमे भाग लेबए शुरु कऽ दएँ तऽ तहुँ प्रथम आबि सकैत छएँ। प्रथम आबएकेँ लेल एहि प्रकारकेँ गलत काज नहि करवाक चाही। अपन मोनमे ईर्ष्याकेँ नहि प्रतिष्पर्धाकेँ भावना ला।'

' जी मैडम हम अहाँक बात स्मरण राखब आ आगा जा कऽ कोनो गल्ती नहि करब।'

मैडम पपलीकेँ पीठ थपथपबैत बजली,' जो अपन कक्षामे अगिला बेर प्रथम आबि कऽ देखा।'



शिष्टताक कमाल

एक समयकें बात अछि। एकटा राजा जंगलमे शिकारक लेल निकलल छलथि। शिकार खोजैत-खोजैत ओ बहुत आगा बढि गेलथि, हुनका कोनो शिकार नहि भेटल। लगातार चलैत रहलाक कारण राजाकें बहुत प्यास लागि गेल।

सेवक पानिक लेल ओ जंगलमे बहुत खोजी कएलक मुदा पानिकें कतहुं निशान नहि छल। दूर-दूर धरि कोनो पोखरि, नदी, ईनार नजरि नहि आबि रहल छल, जतए पानि भेटए। थाकि हारि कऽ सभ घुमहे बला छल की तखने एकटा सेवककें दृष्टि किछु दूर बनल फुसक कुट्टीपर पड़ल। सभकें लागल शायद ओतए पानि भेटत।

राजा एकटा सेवककें पानि आनए लेल आदेश देलन्हि।

सेवक कुट्टीक समीप पहुँच गेल। ओ भितर हुलकी मारि कऽ देखलक ओतए एकटा वृद्ध साधु ध्यान मुद्रामे बैसि साधना कऽ रहल रहथि आ लगेमे घैलि राखल छल।

सेवक शीघ्र भितर गेल आ साधु लग जोड़ सँ बाजल,' बुढा एक लोटा पानि दिअ ?'

जोड़ सँ आएल आवाज सुनि साधु आँखि खोललन्हि आ बजला,'हमरा लग कनिके पानि अछि, हम अहाँकें नहि दऽ सकैत छी।'

सेवक फिर्ता आबि कऽ राजाकें पुरे घटना बतौलक।

राजा एहि बेर मन्त्रीकें पानि लाबए पठौलन्हि , मुदा किछु देरकबाद मन्त्री सेहो खाली हाथ चलि अएला।

आश्चर्य चकित राजा एहि बेर स्वयं जाएकें निर्णय लेलन्हि।

कुट्टीक आगामे गेलाक बाद सभ सँ पहिने वृद्ध साधुकें प्रणाम कएलन्हि आ भितर जाएकें आज्ञा मंगलन्हि।

भितर अएलाक बाद शिष्टता पूर्वक याचक जेकाँ कहलन्हि,' साधु महराज हमरा बहुत प्यास लागल अछि, यदि कनी पानि देव तऽ बहुत कृपा हएत।'

वृद्ध साधु राजाकें सम्मान पूर्वक बैसौलन्हि आ घैलिमे रहल पुरे पानि पिआ देलन्हि। एतेबे नहि साधु राजा सँ कहलन्हि,' हे राजन, यदि अपने चाही तऽ एतए किछु देर विश्राम कऽ सकैत छी।'

राजा साधुकें धन्यवाद देलन्हि आ ओतए सँ विदा होबएकें आज्ञा मंगलन्हि।

जाए सँ पूर्व वृद्ध साधु सँ पुछलन्हि,' साधु महाराज, अपने पहिने सेवक आ मन्त्रीकें पानि देबए सँ अस्वीकार कऽ देने छलहुँ मुदा हमरा पानि देलहुँ एना किए ? '

वृद्ध साधु कनी विहँसि कऽ बजला, 'राजन, हुनकरसभक व्यवहार

शिष्ट नहि छल , बाणी मधुर नहि छल जखन की अपनेक व्यवहार शिष्ट अछि एहिद्वारे सुखल स्थानमे सेहो पानि देलहुँ।'

किछु देर राजा दिस तकैत साधु फेर बजला,' राजन शिष्टाचार एक अद्वितीय गुण होइत अछि, जे मनुष्यकें मात्र सम्मान दिअबैत अछि अपितु ओकर काज सेहो सहज बना दैत अछि। एकरा विना मनुष्य पशुक समान अछि।'

दरवारमे अएलाक बाद राजा अपन राज्यक सेवक, सेना आ अन्य जनताक लेल शिष्टाचारक शिक्षा अनिवार्य कऽ देलन्हि।



वनबासीक प्रयास

रौदी पड़ल छ्ल । आम लोकके मात्र नहि वनबासीके सेहो पानिक एक-एक बुन्दक लेल दूर-दूर भटकऽ पड़ि रहल छ्ल । ई देखि कऽ एक दिन हीरा हाथी अपन मित्र सभके घरपर बजोलक ।

'मित्र, अहाँ सभके बुझले अछि रौदी पड़ल छैक आ पानि बहुत दिक्कतसँ भेट रहल अछि । तँए हम चाहैत छी जे किए नहि हम सभ मीलि कऽ जङ्गलमे एकटा इनार खुनाबी, जाहिसँ हमरा सभके पानिक लेल दूर-दूरधरि नहि जाए पड़ए ।'

'हीरा भाइ, इनार खुनब कोनो आसान काज नहि अछि, अहाँके शायद ई नहि बूझल अछि जे जखन रौदी पड़ैत अछि तऽ जमीनक निच्चा जे पानि होइत अछि, सेहो बहुत निच्चा चलि जाइत अछि,' मोती वानर बाजल ।

'आओर तऽ आओर एहन रौदमे काज कएलासँ हमरा आओर बेसी पियास लागत आ पानिकेँ कतहुँ अता-पता नहि अछि, एनामे सोचू पियाससँ हमरा सभके की हाल हएत,' राजु भालु कहलक ।

'आओर कि इनार खुनलापर पानि तऽ पता नहि कखन निकलत मुदा ओहिसँ पहिने पियाससँ हमरा हालत अवश्य खराब भऽ जाएत,' बिट्टु हरिण सेहो सोचैत कहलक ।

'मित्र, ई मेहनतक काज अवश्य अछि, मुदा सोचू एक बेर यदि हम इनार खुनऽमे सफल भऽ गेलहुँ तऽ पानि पिवाक संकट सभ दिनक लेल समाप्त भऽ जाएत आ ई पानि हमरा सभके दोसरो काजमे प्रयोग हएत,' हाथी अपन मित्र

सभके उत्साह बढ़बैत बाजल ।

'नहि बाबा नहि, हमरा सभके एहि प्रचण्ड रौदमे परेशान नहि होएबाक चाही,' वानर गम्भीर साँस लैत बाजल ।

'यदि रौदमे काज करवामे परेशानी होइत अछि तऽ हम सभ रातिमे सेहो काजकऽ सकैत छी । आइ-काल्हि रातिमे इजोरिए रहैत अछि,' हाथी अपन सुझाव देलक ।

'हमरा सभके तऽ माफे करु, हमरासँ ई काज नहि हएत,' हाथीके मित्र सभ कहलक आ फेर सभ ओकर मजाक उड़बैत एक-एक कऽ ओत्तऽसँ घसैकि गेल ।

हाथी मनेमन निश्चयकऽ लेलक बरु किओ ओकर संग दैक वा नहि दैक मुदा ओ इनार बनएबाक प्रयास अवश्य करत ।

ओहि साँझ हाथी कोदारि लऽकऽ अपन घरक आगा कोरऽ लागल ।

हाथीके कोरैत देखि ओतऽ लगपाससँ जाए आबऽबला वनबासी सभ आश्चर्यसँ देखऽ लगल । ओ सभ रंग-विरंगक बात करऽ लागल मुदा हाथीपर एकर कोनो प्रभाव नहि पड़ल आ ओ कोरैत रहल ।

हाथीके कोरैत-कोरैत बहुत समय बित गेल । जखन ओ थाकिकऽ बैसि रहल आ अराम करऽ लगल तखने चद्दरिसँ अपन मुँह नुकओने भालु ओतऽ पहुँचल ।

'राजु, अहाँ ?' हाथी चौंकल ।

'हँ, हम । जखन हम देखलहुँ जे अहाँ नहि मानलहुँ आ एतऽ आबिकऽ कोरबाक मूर्खतापूर्ण काजकऽ रहल छी तऽ हमरासँ नहि रहल गेल ।'

'हमरा लागल जे हमरो अपन मित्रके मद्दति करबाक चाही, तँए हम एतऽ एलहुँ अछि । ओना अहाँ ककरो ई नहि कहब जे हम एहि मूर्खतापूर्ण काजमे अहाँके मद्दति करऽ आएल छलहुँ, नहि तऽ सभ हमरापर हँसत,' भालु कहलक तऽ हाथी विहुँसिकऽ माथ हिला देलक ।

'अच्छा हमरा कोन दिस कोरबाक अछि ?' भालु पुछलक । तखने ओकरा दूरसँ अपना दिस किओ अबैत देखाइ देलक ।

'लगैत अछि किओ एम्हरे आबि रहल अछि । यदि आबऽबला हमरा अहाँके संग देखि लेत तऽ ओ हमरो मजाक उड़ाओत । हम एना करैत छी जे ओकरा जाएधरि कतहुँ नुका जाइत छी ।' भालु हरबड़ाकऽ बाजल आ नुकएबाक लेल एम्हर-ओम्हर स्थान ताकऽ लगल । जखन ओकरा कोनो स्थान नहि भेटल तऽ ओ

हाथीद्वारा खूनल खधियामे पैसि गेल। हाथी गम्भीरतासँ आगा अबैत आकृतिके देखऽ लागल, जे के चारुभर चकुवाइत ओकरा दिस आबि रहल अछि।

'हीरा, असगरे जमीनके खुनैत-खुनैत थाकि गेल छी की ? चिन्ता नहि करु, आब हम आबि गेल छी अहाँके सहयोग करबाक लेल,' हरिण लगमे आबिकऽ बाजल।

'हरिण, अहाँ हमरा मद्दति करबाक लेल अएलहुँ अछि, एहिके लेल बहुत-बहुत धन्यवाद अछि।'

'मुदा हीरा, अहाँ ककरो नहि कहब जे हम अहाँके सहयोग ...'

'ठीक छैक, हम ककरो नइँ कहब जे अहाँ एतऽ आएल छी,' हाथी एखनधरि एतबे कहने छल कि हरिणके वानर अबैत देखाइ देलक।

'वानर एतऽ की कऽ रहल अछि ? कतहुँ ओ हमरा देखि नहि लिए !' हरिण घबराकऽ बाजल आ ओहो हाथीद्वारा बनओल गेल खधियामे नुका रहल।

'हीरा, एखन किओ अहाँ लग ठाढ़ छल ?' वानर हाथी लग आबि पुछलक।

एहिसँ पहिले कि हाथी कोनो उत्तर देए पाछूसँ सोनू नढ़िया सेहो आबि गेल। सोनू यानी नढ़िया आ वानर एक दोसरके देखिकऽ चौंक गेल।

'बानर अहाँ एतऽ की कऽ रहल छी ?' नढ़िया चौंकैत बाजल।

'हम कनेक एम्हर घुमऽ आएल छलहुँ तऽ सोचलहुँ जे हीरासँ बात कऽ ली,' वानर हरबड़ाकऽ बाजल।

'आश्चर्यक बात अछि, ई तऽ पहिल बेर देखि रहल छी जे किओ छोटकी कोदारि लऽकऽ घुमऽ निकलल अछि,' नढ़िया व्यंग्य सँ भड़ल स्वरमे ओकरा हाथक कोदारि दिस इशारा करैत बाजल।

'हमर बातके छोरु आ ई कहू जे अहाँ हाथमे ई खुर्पी लऽ कऽ एहि ठाम की कऽ रहल छी ? वानरके प्रति प्रश्न सूनि नढ़िया सकपका गेल।'

'देखू नुकएलासँ कोनो फाइदा नहि अछि एतऽ अपना दुनूगोटे हीराके मद्दति करऽ आएल छी।'

'बस एतेक ध्यान राखब आवश्यक अछि जे ई बात अन्य मित्र सभके पता नहि लागए नहि तऽ ओ सभ कहत जे काल्हिए तऽ हीराके मजाक उड़ओलक आ आइ एतऽ चलि आएल छी,' वानर कहलक तऽ नढ़िया माथ हिलाकऽ हँ कहि देलक।

' ओना हम अहाँ दुनूके किछु देखाबऽ चाहैत छी,' हाथी नढ़िया आ वानरसँ

कहलक।

'की ?' दुनू गम्भिरतासँ हाथी दिस देखऽ लागल। हाथी विहुँसिकऽ खधिया दिस घूमिकऽ बाजल, 'अहाँ दुनू खधियासँ बाहर निकलू,' हाथीक स्वर सूनि भालु आ हरिण खधियासँ बाहर निकलल। हाथी, हरिण, भालु, नढ़िया आ बानर पाँचो एक-दोसरके देखिकऽ लजा गेल आ चुपचाप ठाढ़ भऽ गेल।

'मित्र, आब जखन अहाँ सभ एतऽ आबिए गेल छी तऽ हमरा सहयोग करु। एना चुपचाप ठाढ़ नहि रहू,' हाथी कहलक आ खधियामे जा कऽ खुनऽ लगल तऽ ओहो सभ ओहिमे सहभागी भऽ गेल।

ई बात जखन हाथीक अन्य मित्र सभके जानकारी भेलै तऽ ओ सभ सेहो सहयोग करऽ लेल पहुँच गेल।

दू-तीन दिन हाथी आ ओकर मित्र मण्डलीद्वारा बनओल जाएवला इनारके प्रयासक विषयमे अन्य बनबासीके पता चलल आ ओहो सभ सहयोग करबाक लेल पहुँच गेल।

हजारक सँख्यामे बनबासीके अएलासँ एक्के हप्तामे इनार बनि गेल आ ओहिमे पानि आबऽ लागल।

ई देखिकऽ सभ बनबासी खुसीसँ नाचऽ लागल आ हाथी तथा ओकर साथीके प्रशंसा करऽ लागल।

'ई प्रशंसाक अधिकारी हम आ हमर संगी मात्र नहि अपने सभ सेहो छी। अपने सभक सहयोगसँ हम सभ ई इनार खुनऽमे सफल भेल छी।'

'यदि मात्र हम आ हमर साथी मीलिकऽ ई ईनारके निर्माणक विषयमे प्रयास करितहुँ तऽ हमरा सभके बहुत समय लागैत,' हाथी कहलक।

'ठीक कहैत अछि हीरा, आइ एहि बातके हमहुँ मानि लेने छी जे यदि कोनो बढ़ियाँ काज असगरो शुरु कएल जाए तऽ धीरे-धीरे दोसर सेहो अपने आप ओहिसँ जूड़ि जाइत अछि।'

'एकतामे बल होइत अछि। जखन एकसँ दश, दशसँ सय आ सयसँ हजार संगी बनि जाइत छैक, तऽ कोनो काज करब आसान भऽ जाइत अछि,' वानर कहलक तऽ ओतऽ उपस्थित सभ सहमति भऽ माथ हिलबैत थपड़ी बजाबऽ लागल।



कछुआ फेर जीतल

एकटा खढ़िया कछुआ लग पहुँचल आ ओ एक बेर फेरसँ दौड़बाक प्रतियोगिता करबाक लेल कह' लागल । ओ कहलक जे ओकर एक पूर्वज पहिने दौड़मे हारिक' खढ़िया समाजकेँ नाम नीचाक' देने अछि तँए हम दौड़केँ जीतक' नव पीढ़ीक नाम रोशन कर' चाहै छी, कलङ्कके धोब' चाहै छी ।

कछुआ शुरुमे एहि प्रतियोगिताकेँ ल'क' ओतेक उत्सुक नहि छल । मुदा खढ़ियाक दवावक आगा अन्ततः झुकिए गेल ।

निश्चित दिन आ समयपर जंगलक राजा सिंह सिटी बजा क' दौड़ शुरु करबओलन्हि । खढ़िया दौड़क' करीब-करीब पुरा बाट मिनटेमे पारक' लेलक । ओ अन्तिम रेखासँ मात्र किछु दूर आगा छल कि सुस्तएबाक लेल किछु देर रुकि गेल । ओ सोचलक जे ओ कछुआकेँ देखिते दौड़ पूरा क' लेत । मुदा जहिना ओकर पूर्वजकेँ निन्न लागि गेल छल तहिना ओकरो संगे भेल ।

किछु देरक बाद कछुआ पहुँचल । खढ़िया लग पहुँचलाक बाद कछुआ किछु देर रुकल आ सोच' लागल ।

किछु देरक बाद ओ खढ़ियाकेँ निन्नसँ जगओलक आ बाजल, 'अहाँ की क' रहल छी ? की अहाँकेँ पूर्वजद्वारा अहाँक समाजकेँ नाम नीचा भेल बात स्मरण नहि अछि ? की अहाँकेँ बूझल नहि अछि अहाँकेँ एत' सुतलासँ नव पीढीकेँ कतेक वेइज्जत हएत ? उठू, आ बाँकीक दौड़ पूरा करु ।'

किछु देर रुकैत कछुआ बाजल, 'हमहूँ पाछूसँ अबैत छी'

फेर किछु बिलमिक' खढ़िया आगा बाजल, 'प्रिय कछुआ जखन अहाँ स्वयं दौड़ जीत सकैत छलहुँ, तखन अहाँ हमरा किए जगेलहुँ ? '

किछु सोचैत कछुआ बाजल, 'हमरा दौड़क' जीत वा हारके कोनो महत्व नहि अछि, सभ जनैत अछि जे हम सभसँ धीरे चलैत छी मुदा अहाँ संग एना नहि अछि । सभसँ तेज दौड़' बला जानवर भेलाक बादो खढ़िया समाज आइधरि एकटा कछुआसँ हारि जाएबाक दुःख मनाबैत अछि .....।'

'हम नहि चाहैत छी अहाँक समाज अगो एहि बातक लेल दुखित रहौक,' कछुआ बाजल ।

कछुआक ई बात सूनिक' खढ़ियाकेँ आँखिमे नोर चलि आएल, ओ कछुआकेँ हृदयसँ लगा लेलक आ बाजल,' कछुआ एहि बेर अहाँ दौड़ आ हृदय दुनू जीत लेलहुँ ।'

कछुआ आ खढ़ियाक बार्तालाप सूनिक' जंगलक राजाकेँ मात्र नहि ओहिठाम उपस्थित सभके आँखि भरि गेल ।



कोइली घूरि आउ

कोइली नैहरि सँ १५ दिनक बाद घूरल, किछु गम्भीर मुद्रामे लागि रहल छल। पड़ोसी आश्चर्यमे छल, सभकेँ एहि बातकेँ बुझबाक इच्छा छल। सभकेँ उत्सुकता रहै जे कोइलीसँ एहि चुप्पीके रहस्य पूछल जाए। सभ मीलिकऽ ओकरा बजएबाक प्रयास कएलक।

कोइली बिहुँसि कऽ बाजल, 'हमरा नैहरिमे भागवतक कथा चलि रहल छल, स्वामीजीक प्रवचनसँ हमरापर बुहत प्रभाव पड़ल अछि। हम किछु एहन करबाक सोचि रहल छी, जाहिमे वर्षो दिनसँ हमरा जातिपर लागल दाग धोआ जाए।'

'हम बुझलहुँ नहि,' बगड़ा बाजल।

'आब हम अपने खोंतामे अण्डा देब, स्वयं ओकर पालन पोषण करब। दोसरके कष्ट नहि देब, ' कोइली लजाइत बाजल।

सभके सभ हँसि पड़ल।

कोइली आश्चर्यसँ बाजल, 'एहिमे हँसऽके कोन बात भेलैक ?'

'खोंता बनाबऽ अएबो करैत अछि की नहि ?' सुगा कटाक्ष कएलक।

'कोइली, किए एतेक कष्ट करबाक लेल सोचि रहल छी ? कौआके खोंता तऽ अछिए,' मेना आँखि मटकबैत बाजल।

कोइली कानऽ सनके मुँह बनाकऽ बाजल, 'हमरा तऽ बुझाइत छल अहाँ सभ प्रोत्साहन करब।'

हे भगवान ! सुगा कान पकैरिकऽ नाटकीय अन्दाजमे बाजल, 'हम मात्र किछु पुछलहुँ अछि जे अहाँके खोंता बनाबऽ अबैत अछि की नहि ?'

'नहि अबैत अछि, तऽ सिख लेब साल दू सालमे।'

कौआ व्यंग्य करैत बाजल, 'तहियाधरि हम छी ने, हिनकर अण्डा सेबऽ आ बच्चा पालबाक लेल। '

कोइली उदास भऽकऽ बाजल, 'खोता बनाबऽ सहीमे हमरा नहि अबैत अछि, मुदा हम अपन अण्डा अपने घरमे देब। '

'घर कतऽसँ आएत ? बजारसँ किन कऽ आनब की ?' सुगा मजाक उड़ओलक।

कोइली दुःखी भऽकऽ बाजल, 'हम एकटा कोटर सेहो ताकि लेलहुँ अछि।'

मेना चिचिआइत बाजल, 'कोटरके बात कएलहुँ अछि, कठखोधी अहाँके मारि देत। '

सुगा बाजल, 'कोइली अहाँ हरेक समय दोसरेके मालपर कब्जा करऽपर किए सोचैत रहैत छियैक।'

'हम जे कोटर तकलहुँ अछि ओ ककरो बनाओल नहि अछि। ओ प्रकृति निर्मित अछि।'

प्रकृति निर्मित की भेलैक कहैत सभ एकेबेर हँसय लागल। इमहर कोइली कानयसन मोन बनाकऽ दोसर दिस ताकय लागल। मुदा अन्य चिड़ै सभ पर खासे फरक नहि पड़ल ओसभ घण्टो परिहास करैत रहल।

चिल्होरिके तबियत किछु दिनसँ बढ़ियाँ नहि छल। बाहर निकलैत नहि छल। भोरमे बहुत अबेरधरि कोइलीके कुहू-कुहू सुनाइ नहि देलक, इम्हर दानापानिक खोजीमे चिड़ै सभ निकलि रहल छल। चिल्होरि एक-दूटा चिड़ैसँ कोइलीक बारेमे पुछलक तऽ काल्हिके घटना पता चलि गेल। ओ मेना, सुगा आ बगड़ासँ कहलक ,'अहाँ सभ हुनकर मजाक किए उड़ओलियै ? दुःखी भऽकऽ ओ कतहुँ चलि गेल बुझाइए।'

सुगा माथ झुकाकऽ बाजल, 'हमरा सभके एहन कोनो मोन नहि छल।'

'हमरासँ गल्ती भऽगेल अछि। हमरा सभके कोइलीके मजाक नहि उड़एबाक चाहि, 'बगड़ा, मेना आ सुगा एकहि संग बाजल।

'ककरो मजाक उड़ाएब बढ़ियाँ बात नहि । किओ बढ़ियाँ काज करऽ चाहैत अछि तऽ ओकरा सहयोग करबाक चाही, 'चिल्होरि बाजल ।

चिल्होरि कटखोधीसँ कहलक, 'अहाँ कतऽ छलहुँ ? अहाँ खोंता बनाबऽमे माहिर छी, अहाँ तऽ कहि सकैत छी जे खोंता बनाबऽ हम सिखाएब ।'

चिल्होरि चारु कात तकैत बाजल, 'हम सभ चिड़ै अलग-अलग छी मुदा एकटा गाछपर रहैत छी, तऽ हमरा सभके एकेटा परिवार जेकाँ रहबाक चाही । एक-दोसरके दुःख-दर्दमे संग रहबाक चाही । आब चलू कोइलीके तकैत छी । कोनो गाछपर बैसिकऽ कानि तऽ नहि रहल छथि ।'

'हम हुनका ताकब, हुनका कोटर सजाबऽमे सहयता करब, 'कटखोधी बाजल ।

चिल्होरि दिस तकैत मेना बाजल, 'हम बचन दैत छी फेर कहियो ककरो हृदय नहि दुखाएब । '

एते कहैत ओ अपना साथी सभसँ बाजल,'चलू कोइलीके खोजऽ ।' एक संग सभ कोइलीकेँ ताकऽ फुरफुराकऽ उड़ैत बाजल, 'कोइली घूरि आउ ।'



चलाक हीरा बरद

बलदेव नामक एकटा किसान छल । हुनका लग दूटा बरद छल । हिरा आ मोती । दुनू बहुत मेहनती आ अज्ञाकारी बरद छल । बलदेव सेहो अपन पारिवारिक सदस्य जेकाँ मानैत छला आ ओकरा सभक खान-पिनपर विशेष रुपसँ ध्यान दैत छला ।

हिरा मोती छल तऽ मित्र, मुदा दुनूमे सहोदर भाइ जेकाँ प्रेम छल । जेकी हिरा उमेरमे मोतीसँ बड़का छल तँए ओकर हरेक बात मोती मानैत छल । दोसर दिशि हिरा सेहो मोतीके बहुत स्नेह करैत छल ।

मोती, हिरा जेकाँ बुधियार नहि छल, ओ स्वभावसँ चञ्चल छल, ओकर बहुत इच्छा होइत छल जे देश-दुनियाँ घुमी मुदा हिराके सम्झएलाक बाद ओ अपन इच्छाकेँ मारि लैत छल ।

गामक लगेमे एकटा जंगल छल । ओहि जंगलमे एकटा बुढ़ बाघ रहैत छल, जे बुढ़ भेलाक कारण लाचार भऽ गेल छल । कहिओ-कहिओ मात्र ओकरा शिकार पकड़ाइत छल ।

एहिना एक बेर ओ कतेको दिनसँ भूखल छल आ शिकारक खोजीमे जंगलमे घूमि रहल छल, तखने ओ एकटा नढ़ियाकेँ देखलक । कहुना-कहुनाकऽ ओ नढ़ियाकेँ पकड़ि लेलक । नढ़िया अपन प्राण रक्षाक लेल नेहोरा करए लागल । ओ प्रार्थना कएलक, 'सरकार, अहाँ हमरा छोड़ि दिअ, हमर बच्चा अहाँकेँ अभारी रहत ।'

बाघ बाजल, 'एहिसँ हमरा की लाभ भेटत ? हमरा तऽ जोड़सँ भूख लागल अछि, हम तऽ तोरे खएबौ ।'

नढ़िया डेराइत-डेराइत पुछलक,'सरकार यदि हम प्रत्येक दिन अहाँकेँ लगमे शिकार लाबिकऽ दी, तऽ अहाँ हमरा छोड़ि देब ?'

आन्हरा माँगए दूटा आँखि । बाघ नढ़ियाकेँ चेतावनी दैत कहलक, 'यदि तोँ हमरा धोखा देबेँ तऽ स्मरण राख हम तोहर पूरे परिवारकेँ मारिकऽ खा जएबौ । मुदा आइ हम अपन भूख कोना मेटाउ ? '

किछुए देर पहिने नढ़िया एकटा कोनो जानवरके शिकार कएने छल, ओ ओहे शिकार बाघके दऽ देलक । प्रत्येक दिन एकटा शिकार लऽकऽ अएबाक निर्देशन दऽकऽ बाघ ओतऽसँ चलि गेल । नढ़िया सोचलक एकदिनक लेल जान तऽ बँचल ।

मुदा एखन समस्या टरल कहाँ छल ? ओकरा प्रत्येक दिन शिकार देबाक छैक । बड़का जानवरके शिकार करबाक समार्थ्य ओकरा नहि छल आ छोट जानवरके शिकारसँ बाघके पेट कोना भरि सकैत छल ? नढ़ियाके प्रत्येक दिन बाघके डाँट फटकार सुनऽ पड़ैत छल ।

एक दिनक बात अछि नढ़िया शिकारक खोजीमे घुमैत-घुमैत ओहि गाम दिशि पहुँचल । संयोगसँ ओकर नजैरि मोती बरदपर पड़ल । ओ सोँचलक की एहि बरदके बाघ लग सोँपि दी तऽ तीन-चारि दिनधरि शिकार पकरबाक झञ्झटसँ मुक्ति भेट जाएत आ एहि क्रममे अपन बाल-बच्चा सहित एहि मनहुस जंगलके छोड़ि देब । इएह षड़यंत्र रचैत ओ मोतीसँ अत्यन्त मृदु स्वरमे बाजल,'मित्र कुशल छी ?'

'हम तऽ अहाँकेँ चिन्हबो नहि करैत छी तऽ कोना मित्र भेलहुँ ?' मोती उत्तर देलक ।

'यदि बातचीत भेल तऽ मित्रता अपने-आप भऽ जाएत । कि हम ठीक कहलहुँ ने ? ओना अहाँ उदास किए छी ?' नढ़िया पुछलक ।

मोती चुपे रहल ।

नढ़िया झुट्ठेके अपनत्व भरल स्वरमे बाजल,'अहाँके कोनो नहि कोनो दुःख तऽ अवश्य अछि,आ अहाँ दुःखी छी । अहाँ निर्भीक भऽकऽ अपन मोनक बात हमरासँ कहि सकैत छी ।'

मोती दुःखीत स्वरमे बाजल,'मित्र हम देश-दुनियाँ घुमऽ चाहैत छी जंगल, पहाड़, नदी-नाला सभ देखऽ चाहैत छी ।'

नढ़ियाक आँखिमे खुशी चमैकि उठल, ओ बाजल,'मित्र अहाँ हमरा संग जंगल चलू, हम अहाँके सभ चीज देखाएब ।'

मोती बाजल,'मित्र, मुदा जंगलमे तऽ बड़का-बड़का बाघ होइत अछि कहीं ....'

नढ़िया एक बेर फेर झुठ बाजल,'बितल महिना जंगलमे सर्कसबला आएल छल ओ सभ खतरनाक जानवरके शहर लऽ गेल, आब तऽ जंगलमे हरिण, नढ़िया, खढ़िया जेहन जानवर सभ बँचि गेल अछि । अतः अहाँके डेराएके कोनो आवश्यकता नहि अछि । '

'मुदा यदि....'

'चिन्ता छोरु मित्र कहियाधरि अहिना हऽर बहब, दौनीमे काज आएब ... रातिमे तैयार रहब, हम अहाँके जंगल लऽ जाएब । ई कहि कऽ नढ़िया जंगल चलि गेल ।'

नढ़ियाके मिश्री सनक बातक जालमे मोती फँसि गेल । ओ जंगल जएबाक योजना बनाबऽ लागल ।

किछु देरक बाद जखन हिरा आएल, तखन मोती ओकरा सभ कथा सुनओलक । हिरा ओकरा नढ़ियाक बातके भरोसा नहि करबाक सलाह देलक । मुदा ओकर सम्झौलाक मोतीपर कोनो असर नहि पड़ल ।

अमावास्याक राति छल । चारु दिसि अन्हार,हाथके हाथ नहुँ देखाइक । रातिके अन्तिम पहरमे नढ़िया आएल आ ओ मोतीके नहुएँसँ बजओलक । मोती तऽ पहिनहिसँ तैयार छल । ओ नढ़िया संग जंगल भागि गेल । दोसर दिन मोतीके नहि देखि बलदेव परेशान भऽ गेल । ओ बहुत खोजला, मुदा मोतीके कतहुँ अत्ता पत्ता नहि चलल । हिराकेँ विश्वास भऽ गेल जे मोती नढ़ियाक संग जंगल भागि गेल । ओ मोतीके बँचएबाक युक्ति सोचऽ लागल । एमहर, जहिना मोती जंगलमे पहुँचल ओकरा बाघ आ नढ़िया घेर लेलक । बाघके आगामे देखि मोतीके बूझऽमे चलि आएल जे हम षड़यंत्रमे फँसि गेल छी । मृत्युके आगा देखिकऽ ओकर हाथ-पएर सुखा गेल आ मस्तिष्क सुन्न भऽ गेल । ओ कँपैत स्वरमे नढ़ियासँ कहलक,'अहाँ धोखा देलहुँ अछि ।'

नढ़िया बाजल, 'ई जंगल अछि, एतऽ हरेक वलशाली जानवर अपनासँ कमजोर जानवर पर निर्भर रहैत अछि अर्थात् ओकरे भोजन बुझैत अछि। जकरा अहाँ धोखा कहैत छियै, ओकरा हम चतुराइ कहैत छियै।'

मोतीके लागल आब ओकर अन्त निकट आबि गेल अछि।

जखन बलदेव थाकि हारिकऽ घर पहुँचला, तखने हिरा पगहा तोरिकऽ जंगल दिशि भागल। बलदेव पकर-पकर...के आवाज लगबैत ओकर पाछू दौड़ल। जे किओ बलदेवके आवाज सुनलक हिराके पकरऽ दौड़ल। परिणाम ई भेल जे आगु-आगु हिरा आ पाछू-पाछू बलदेव सहित २०-२५ गोट व्यक्ति। हिरा तेज गतिसँ दौड़ रहल छल। आ जहिना जंगलके भीतर पहुँचल, जोड़-जोड़सँ भोकरए लागल।

संयोगसँ ओकर आवाज मोती सेहो सूनि लेलक। ओहो भेमियाएल। हिरा ओहि दिसि बढ़ऽ लागल जेमहरसँ आवाज आबि रहल छल। किछुए देरमे ओ मोतीके खोजि लेलक। तखने भीड़क आवाज आएल। आवाज सूनिकऽ बाघ आ नढ़िया डेरा गेल आ ओतऽसँ भागि गेल।

हिराके आगामे देखिकऽ मोतिके आँखिमे नोर छिलैक आएल। ओ कनैत बाजल,'हमरा माफ कऽ दिअ मित्र आइ अहाँ हमरा बचा लेलहुँ नहि तऽ ....'

हिरा उत्तर देलक, 'जहिना हरेक चमकैत चीज सोना नहि होइत अछि, ओहिना हरेक मिठ बाजऽबला अहाँक हितैसी वा मित्र हएत से आवश्यक नहि अछि। सहीमे मित्र तऽ उएह होइत अछि जे समस्यामे काज अबैत अछि।'

मोती अपन गलती मानि लेलक आ भविष्यमे ओ एहन गलती नहि करबाक प्रण लेलक। किछुए देरक बाद सभ खुशी-खुशी गाम घूरला दोसर दिसि भूखल बाघ, नढ़ियाके मारिकऽ खा गेल।



औंठी

माँके औंठी हेरा गेल छल। सोनाक औंठी ! आँटा गुथैत-गुथैत ओ ओकरा उतारिकऽ बर्तन राखऽ बला पटहापर राखि देने छली। फेर भोजन बनाबऽके धरफरीमे पहिरब बिसैरि गेल रहथि।

भोरक समय सभकेँ जल्दी छल। दुनू बच्चा सृष्टि आ गोनू स्कूल जा रहल छल आ पापा अफिस। तँए पुरे घरमे हलचल मचल छल।

सृष्टिकेँ मौजा नहि भेटि रहल छल तऽ माँकेँ अवाज लगा रहल छल। पापाकेँ सेभिङ्ग ब्लेड नहि भेटि रहल छल। माँ दौड़-दौड़कऽ भानस घरसँ अबैथि। आ सभकेँ काज निपटाकऽ फेर भानस घरमे चलि जाइत छली।

काम काजमे पुरे दिन बीत गेल। बर्तन माजऽबाली काज कऽ कऽ चलि गेल। सृष्टि आ गोनू स्कूल जा कऽ चलि आएल। पापा सेहो अफिससँ आबि कपड़ा बदैलिकऽ टिभी देखऽ बैसि रहला।

माँ सभक लेल चाह जलपान बनाकऽ अनली तखने अचानक पापा पुछला,' रीना, अहाँक औंठी कतऽ अछि ?' माँ चौककऽ अपन आंगुरकेँ देखली। हँ , औंठी तऽ सहीमे नहि छल।

फेर अचानक ध्यान अएलैन्हि, आँटा गुथैत काल बर्तन राखऽबला पटहापर राखि देने छली। ओ दौड़कऽ भानस घरमे गेली मुदा औंठी ओतए नहि छल।

आब तऽ माँके चेहरा उड़ि गेल छल। ओ पुरे भानस घर छानि मारली मुदा औंठी कतहुँ नहि भेटल। भानस घरेमे किए, बेडरुम आ ड्राइंग रुम सेहो

ताकल गेल मुदा औंठीक कोनो अतापता नहि छल। माँकेँ उदास चेहरा देखि पापा बिहुँसिकऽ बजला, 'एहिमे एतेक परेशान होएबाक आवश्यकता नइँ छैक ? आखिर औंठीए तऽ छल, कोनो हिराके हार थोरहे छल !'

' ई तऽ ठीक अछि, मुदा घरसँ कतऽ गेल ?' माँ एखनो चिन्तित छली।

' हँ बस ! इएह तऽ चिन्ताक बात अछि, अहाँके स्मरण अछि अहाँ औंठी उतारिकऽ भानस घरमे रखलहुँ से ?'

' हँ हँ, हमरा बढ़ियाँ जेकाँ स्मरण अछि हम, इएह पटहापर आटा गुथैत काल अपन औंठीकेँ उतारिकऽ रखने छलहुँ।'

' पापा, कतहुँ अपना घरमे बर्तन माजऽवाली तऽ औंठी गाएब नहि कऽ देलक ?' गोनू अपन शंका व्यक्त कएलक।

' नहि, गोनू बेटा ! हमरा सभकेँ दोसरपर एहि तरहें शक नहि करवाक चाही। गरीब होबऽके मतलव ई नहि अछि जे ओ चोर अछि,' पापा गोनूकेँ सम्झओलैन्हि।

'हँ, बबिता माए एना नहिकऽ सकैत छथि ओ वितल १२ वर्षसँ काजकऽ रहल छथि हमरा हुनकासँ कहियो शिकायत नहि रहल। यदि हुनका जानकारी भऽ जाए जे हम सभ हुनकापर शक करैत छी तऽ हुनका बहुत खराब लागत। भऽ सकैत अछि ओ काजो छोड़िकऽ चलि जाथि। हमरा सभकेँ हुनक स्वभिमानकेँ चोट पहुँचएबाक कोनो अधिकार नहि अछि गोनू बेटा, ' माँ सेहो पापाक बातक समर्थन कएली।

' सरी माँ हमरा एना नहि सोचबाक चाही,' गोनू पश्चाताप भरल स्वरमे बाजल।

' ठीक छैक कोनो बात नहि, ' पापा गोनूके पिठ थपथपओलैन्हि।

' मुदा औंठी गेल कतऽ ?' एखनधरि चुपचाप ठाढ़ि सृष्टि बाजल।

' हँ, इएह तऽ बुझबाक अछि, ' माँ बजली।

औंठीक खोज कतेको दिन होइत रहल मुदा ओ नहि भेटल। एक दिन माँ बजली, ' लगैत अछि कोनो मुस मरि गेल अछि।'

गोनू बाजल,' हँ माँ किछु गन्हा रहल अछि ! लगैत अछि मुस एहि पटहाक नीचा जा कऽ मरल अछि।'

पटहापर दाइल, चाउर, चिकस, चिनी, चाहपत्ती, तेल, मसाला सभ

राखल छल। गोनू आ माँ ओकरा एक-एक कऽ हटओलक फेर पटहाकेँ ठेलकऽ देखलक तऽ दंग रहि गेली ओतऽ तऽ मुस बड़का बिल बनओने छल। बिलक लगपास नहि जानि कतेको खाएबला चीजसभ कुतैरिकऽ रखने छल। मुस अपने बिल्लुरमे मरल छल।

गोनू खुर्पीसँ बिल्लुरकेँ बड़का बनओलक तऽ ओकर नांगरि चमकल ओ चुट्टासँ ओकर नांगरि पकरिकऽ बाहर खिचलक, खटाक आवाजसँ औंठी सेहो बाहर खसल,एकरा देखिकऽ गोनू आ माँ दुनू आश्चर्यमे छल।

साँझमे अफिससँ घर अएलाक बाद पापाकेँ जखन पता चलल ओ हँसैत कहला, 'अच्छा तऽ ई बात अछि ! औंठीमे आँटा लागल हएत ओकरे चक्करमे मुस ओकरा अपना बिल्लुरमे लऽ गेल हएत। '

'हँ-हँ, इएह भेल हएत पापा !' सृष्टि ताली बजबैत बाजल।

फेर घरमे सभ गोटे बहुत देरधरि ओहि हेराएल औंठीक विषयमे बात करैत रहल जे आब भेट गेल अछि।



नकली गहना

ई कथा नेपालक सिरहा जिलाक एकटा छोटका गामक अछि। एहि गाममे रामचन्द्र नामक एकटा मास्टर छलाह। ओ बच्चा सभके ट्युसन पढ़बैत छलैथि। एहिसँ हुनकर परिवारक जीवन चलैत छल। एक दिन रामचन्द्रक कनियाँ रीमाके मोनमे नैहरि जाएके इच्छा भेलैन्हि। रीमा रामचन्द्रसँ कहलैन्हि तऽ एहिपर रामचन्द्र, 'अहाँ असगरे चलि जाउ, संगे गेलासँ ट्युसनपर प्रभाव पड़त।'

रीमा बात बूझि गेली। ओ नैहरि जाएके तैयारीमे लागि गेली जाएसँ पहिने ओ मास्टर पतिसँ कहलैन्हि,'हमर विवाह भेला कए साल भऽ गेल मुदा अहाँ हमरा एक्कोटा गहना बनाकऽ नहि देलहुँ अछि। एनामे नैहरि गेलापर दुनू गोटेके बेइज्जत हएत से नहि लगैत अछि ? कमसँ कम एकटा सोनाक मंगलसूत्र बना दिअ।'

'रीमा अहाँके तऽ बढ़ियाँ जेकाँ बूझल अछि हम एकटा सधारण शिक्षक छी बहुत मुस्किलसँ गृहस्थी चलैत अछि। एहनमे गहनाके लेल कोना पैसा आनब ?' रामचन्द्र अपन कनियाँ रीमाके सम्झओलैन्हि।

'हमर माएके देल चाँदीके हँसुली अछि ओकरा बेचिकऽ हमरा मंगलसूत्र बना दिअ ?' रीमा जिद्द कएली।

रामचन्द्र एकटा सोनारक दोकानपर गेलाह आ चाँदीके हँसुली दऽकऽ ओकर

कोइली घूरि आउ

बदलामे सोनक मंगलसूत्र बनाबऽ कहलैन्हि। एहिपर सोनार बाजल, 'हँसुलीके बदलामे कनिको सोन नहि भऽ सकैत अछि तखन मंगलसूत्र कोना सम्भव हएत। बरु असलीए सोना सन देखऽमे नकली गहना भेटैत अछि ओ भऽ जाएत।'

सोनार किछु सुन्दर मंगलसूत्र देखओलैन्हि। रामचन्द्र एकटा पसिन कऽ अपना कनियाँके दैत कहलैन्हि,' किछु दिनक लेल नकली सोनक मंगलसूत्र पहिरु, दोसर बेर असली सोनक मंगलसूत्र बना देब।'

रीमाके कनिक कालक लेल दुःख भेलैन्हि जे नकली सोनक गहना अछि मुदा फेर सोचलैथि किच्छो अछि मुदा नैहरिक लोक थोरे बुझत।

रीमा अपन पति दिशि तकैत कहलैन्हि, 'हम अपन नैहरि बलाके एहिके असलीए गहना कहब, अहूँ सभके इएह कहबैक।'

रीमा अपन नैहरि गेली तऽ हुनकर भाइ तपेश्वर आ भौजी बहुत प्रेमसँ स्वागत कएलकैन्हि। भौजी अपन ननदिके गलामे गहना देखि बहुत खुशी भऽ पुछली, ' रीमा अहाँ ई गहना कहिया बनएलेहुँ ?'

'किछुए दिन भेल अछि, भौजी। हुनका लग एकटा व्यापारीक बेटा पढ़ैत अछि ओ परीक्षामे फस्ट कएलक तऽ ओकर पिता ई गहना उपहार देलैन्हि अछि।'

रीमाक भौजीक मोनमे सेहो इच्छा भेलैन्हि,'हमरो लग एहन गहना होइत हमरा गर्दैनिमे आओर कतेक नीक लगैत।'

ओहि राति रीमाक भौजी अपन पति तपेश्वरसँ गहनाक विषयमे कहलैन्हि।

तपेश्वर बहुत पढ़ल-लीखल नहि छलैथि मुदा ओ बाप-दादाक जमीनकेँ बढ़ियाँ जेकाँ उपजबैत छलैथि आ गृहस्थी चलबैत छलैथि। तपेश्वरकेँ अपन कनियाँक इच्छा भेलैन्हि तऽ ओ सोचलथि पैसा अबैत जाइत रहैत अछि कनियाँके एकटा इच्छा भेल अछि तऽ किए नहि पुरा कऽ दी। तपेश्वर कहलैन्हि, 'अहाँ चिन्ता नहि करु काल्हिए शहर जा कऽ अहाँ लेल गहना आनि देब।'

तपेश्वर किछु धान बेचलैन्हि आ सोनारक दोकानपर पहुँचला। मंगलसूत्रक दाम पुछलैथि तऽ हुनकर हाल बेहाल भऽ गेल। लागल एहि मंगलसूत्रक लेल आधासँ बेसी धान-चाउर बेचऽ पड़त, एनामे कोना भरि साल घरक गाड़ी चलत।

तपेश्वरके स्थिति देखि दोकानदार बाजल,'भाइजी, नकली सोनाके सुन्दर मंगलसूत्र सेहो अछि, सस्तामे भेटत, की देखाउ ?'

एहि शब्दक सँग दोकानदार जे देखौलकैन्हि ओकरा देखिकऽ तपेश्वर आश्चर्यचकित भऽ गेलैथि। ओहिमेसँ एकटा मंगलसूत्र रीमाक मंगलसूत्र सन छल। तपेश्वर सोचलैन्हि,'रीमाके गहना असली सोनाक अछि आ ई नकली सोनाके तइयो बहुत सुन्दर अछि एहि अन्तरके किओ बुझियो नहि सकत। तपेश्वर बिना कोनो हिचकिचाहटिके ओ गहना किन लेलैन्हि आ घर चलि एला। गहना देखिकऽ कनियाँ बड़ खुशी भेली किए त ओ अनमन रीमाक मंगलसूत्र सन छल। मुदा तपेश्वर कनियाँके स्पष्ट रुपसँ जानकारी द ऽ देलैन्हि जे ई असली नहि अछि। संगहि ओ कनियाँके बचन देलैन्हि जे ओ दोसर बर्ष अवश्य असली सोनक गहना बना देता। कनियाँ तपेश्वरक बात मानि लेलैन्हि।

रीमा भौजीके गहनाके अपनेसन देखिक ऽ आश्चर्यमे छली मुदा ओ असली सोनाकें बूझिक ऽ ईर्ष्यासँ भरि गेली। रीमा आ भौजी एक दोसरसँ भितरे भितर ईर्ष्या करैत पुरे दिन बितओलैन्हि। ओहि राति दुनूके निन्न नहि आएल।

दोसर दिन जुड़शीतल छल। घरके बच्चा सभ थाल-माटि खेल रहल छल। तपेश्वर आ हुनक कनियाँ पड़ोसीके घरमे थाल-माटि खेल ऽ चलि गेला। रीमा अवसरि ताकिक ऽ अपन मंगलसूत्र भौजीके मंगलसूत्र लग राखि हुनकर मंगलसूत्र उठा लेली। एहि तरहें हुनकर मंगलसूत्र बदैलि लेल गेल।

ओहि दिन रातिमे भौजी सेहो अवसर पाबिक ऽ रीमाके गहनाके उठा लेली आ अपन गहना ओहि स्थानपर राखि देली फेर कि छल दुनू गहना फेरसँ अपन–अपन हाथमे चलि आएल, मुदा दुनू ई सोचिक ऽ सन्तुष्ट छली जे हुनकर गहना आब असली गहना अछि। जुड़शीतल आनन्द पूर्वक सम्पन्न भेल, रीमा अपन सासुर चलि अएली। दोसर साल भौजी सोनाक गहना किन ऽबाक लेल जिद्द नहि कएलैन्हि एहिपर तपेश्वर मनेमन खुश छला।

एहि प्रकारे रामचन्द्र ई सोचि क ऽ डेराएल छला जे दोसर साल रीमा असली सोनाक गहनाक लेल जोर लगओती। मुदा रीमाके एहि बातक भ्रम छल जे हुनका लग असली सोनाक गहना अछि। रीमा रामचन्द्रसँ एहि विषयमे किछु नहि कहलैन्हि। हुनका आश्चर्य भेल आ मनेमन प्रशन्न भेलैथि जे कमसँ कम आफत त ऽ टलल।



मिकीक तकिया

सेवा नामक आनाथालयमे मिकी नामक ९ वर्षीय बालिका छल। ओ बहुत सुन्दर, साफ आ सभके चहेती छल ई देखिक ऽ ओकर सङी-साथी सभ बहुत जरैत छल।

आनाथालय मुस्किलसँ कहुना आगा बढ़ि रहल छल। हरेक समय पैसाक अभाव रहैत छल। आनाथालयक धीया-पुताके हरेक समय कोनो अतिथिक आगमनक प्रतीक्षा रहैत छलै, जे ओकरा सभक लेल कोनो नीक चीज आनय। जओं कोनो अतिथि अबैत छल त ऽ ओकरा सभकें नीक भोजनक व्यवस्था भ ऽ जाइत छलैक। नहि त ऽ उएह पानि सनके दालि आ मोटका चाउरक भात खा क ऽ समय बिताब ऽ परैत छलैक। कहिओ-कहिओ किछु विशेष स्नेही अतिथि बच्चा सभक लेल बढ़ियाँ कपड़ा आ खेलौना सेहो अनैत छल। जकरा देखिक ऽ सभके मुहँपर मुस्की चलि अबैत छल।

जेँकी आनाथालय अभावसँ बढि रहल छल, तँए बड़का बच्चा सभके सेहो काज बाँटि देल गेल छल। किछुके थारी-बाटी माँज ऽके, अल्लु सोह ऽके, चाउरमे आँकर बिछ ऽके, ओछायन मिलाब ऽके, घर बाहरके आदि काज देल गेल छल।

मिकीक दिन भोरे चारि बजेसँ शुरु भ ऽ जाइत छल। सभसँ पहिले ओ भोरे उठिक ऽ एक-डेढ़ घण्टा पढ़ैत छल, तकर बाद देल गेल किछु काज निपटबैत छल तखन स्कूल जाइत छल। जत ऽ स्कुलसँ घुरलाक बाद अन्य

बच्चा सभ खेल≀ कुद≀ लगैत छल तत≀ मिकी पढाइमे लागि जाइत छल आ साँझ पड़लाक बाद सँभुका काज निपटबैत छल ।

एहि बेर बहुत दिनसँ कोनो अतिथिक आगमन नहि भेलाक कारण ओहे पातर दालि आ भात खाइत-खाइत बच्चा सभ दिकिया गेल छल ।

एक राति जखन मिकी अपन ओछायनपर सुत≀ आएल त≀ बजरौरी तकिया देखि ओकर मोन दुःखी भ≀ गेल । जत≀ ओकर ओछायन छल तत≀ खिड़की छल । खिड़कीसँ आकाश साफ नजैरि आबि रहल छल । मिकी सभसँ चमकैत तारा दिस तकैत बाजल, 'कतेक उपर आकाशमे अहाँ रहैत छी हमरा सभपर दया नहि अबैत अछि ? कमसँ कम खान पिन नहि त≀ एकटा फोम बला तकिया हमरो ककरोसँ दिया दिअ ।'

एकर किछु देरक बाद मिकीके निन्द आबि गेल । रातिमे अबेरसँ सुतबाक कारणे ओहि दिन मिकी अबेरसँ उठल । दौड़ैत भागैत स्कूल पहुँचल । स्कूलसँ आनाथालय घूरिक≀ अएलाक बाद अतिथि कक्षमे भीड़ देखि ओ बूझि गेल जे कोनो अतिथिके आगमन भेल अछि । भितर पहुँचलाक बाद देखलक, एकटा बहुत सुन्दर महिला आएल अछि ओ सभ बच्चाक लेल कोनो ने कोनो गिफ्ट अनने छल । मिकी गिफ्ट लेबाक लेल लाइनमे लागि गेल । ओ लाइनमे सभसँ पाछू छल । ओकरा मनेमन डर भ≀ रहल छल । ओकर नम्बर अबैत–अबैत गिफ्ट बँचत कि नहि ? एमहर साथीसभ ओकरा खौंझा रहल छल । ओकरा बेर-बेर कहि रहल छल, 'देखिहें, तोहर नम्बर अबैत-अबैत सभ गिफ्ट समाप्त भ≀ जएतौ ।' मुदा मिकी ओहि बातक ध्यान नइँ देलक ।

जखन ओकर नम्बर आएल त≀ ठीके ओहि महिलाके झोरा खाली भ≀ गेल छल । मुदा ओ महिला बिहुँसिक≀ बजली, 'अहाँ त≀ मिकी छी ने ? अहाँक लेल हम एकटा फोम बला तकिया अनने छी ।' एते कहैत ओ महिला सुन्दर सन लाल तकिया निकालिक≀ देली । आ बजली,'अहाँके इएह इच्छा छल ने ? देखू, हमरा पता अछि जे एहि तकियामे एकटा जादू सेहो छैक । एहि तकिया आगा अहाँ किछु मङबै त≀ भेट सकैत अछि, मुदा एहि बातके ध्यान देब≀ पड़त जे कहिओ किछु गलत चीज नहि मङब जाहिसँ ककरो कोनो हानी होइक । ई तकिया हरेक समय अहाँके सँग देत । '

मिकी ओ तकिया प्राप्त कएलाक बाद बहुत प्रशन्न भ≀ गेल । ओहि राति

बहुत आरामसँ सूतल । अन्य बच्चा सभके सेहो बढ़ियाँ–बढ़ियाँ समान सभ भेटल छल । ओहो सभ खुश छल । मिकीके साथी आदी अपन लाल फ्रक देखा-देखाक≀ मिकीके सिहाब≀के प्रयास कर≀ लागल मुदा मिकी अपन गिफ्टसँ प्रसन्न छल । आखिर ओकर इच्छा अनुसार सामान जे भेटल छल । ओ ओहि राति सभसँ बेसी चम्कैत ताराके मनेमन धन्यवाद देलक ।

एक दिन मिकी ओहि तकियापर माथ राखिक≀ सूतल छल । ओ देखलक जे ओकर स्कूलक अन्य बच्चा पानि पिबाक लेल वाटरबोतल अनैत अछि । ओ सोच≀ लागल जे जओं ओकरा लग सेहो एहने बोतल होइत ? ओकरा आश्चर्य तखन भेल जखन दोसरे दिन ओकर शिक्षक घोषणा कएलक जे चित्र प्रतियोगितामे ओकरा प्रथम पुरस्कार भेटल अछि आ ओकरा एकटा सुन्दर वाटरबोतल देल जाइत अछि । मिकी ई त≀ बूझि गेल जे ई सभ जादू बला तकियाक कमाल अछि आ ओ प्रसन्न रह≀ लागल । ओ जे चाहैत छल ओ पुरा भ≀ रहल छल । मुदा ओ ओहि महिलाके बात हरेक समय स्मरण रखैत छल जे कहियो ककरो हानी पहुँचाब≀ बला कोनो चीज नहि मांगल जाए । ओहुना मिकी स्वभावतः ककरो हानी पहुँचाब≀ वाली नहि छल ।

मुदा मिकीके मनेमन सभ इच्छा पुरा होइत देखि आदी जरि रहल छल । तँए आदी मिकी कि करैत अछि ताहिपर बेसी ध्यान देब≀ लागल । एक दिन आदी देखलक जे मिकी अपन तकियासँ किछु कहि रहल अछि । आदी सतर्क भ≀ क≀ सुन≀ लागल, मिकी कहि रहल छल,' प्रिय तकिया, अहाँ कतेक सुन्दर छी अहाँ हमर सभ आवश्यकता पुरा करैत छी, हम बहुत दिनसँ आइसक्रिम नहि खेलहुँ अछि । काल्हि हमरा आइसक्रिम खुआ देब, प्लीज ।'

आदीके मिकीके प्रशन्नताक राज बुझ≀मे चलि आएल दोसर दिन जखन सभ बच्चा स्कूल जा रहल छल, आदी पेटमे दर्दक बहाना बनाक≀ आनाथालयमे रुकि गेल । सभके जाइत देखि ओ तुरन्त अपन तकिया मिकीके तकियासँ बदैलि लेलक आ ओकर तकियापर अपन तकियाखोल लगा लेलक आ अपन तकियापर ओकर ।

आदी खुशी-खुशी ओ जादू तकियापर माथ राखिक≀ आराम कर≀ लागल । आदीके मोनमे खोट त≀ छलहे ओ जहिना तकियापर हाथ रखलक ओकरा मोनमे तुरन्त आएल जे ओ सभसँ पहिले ई माँगए की मिकीके किछु खराब

होउक । ओ तकियापर माथ राखिक ई इच्छा कएलक जे मिकीके स्कूलमे खुब डाँट परैक ।

मुदा आदीके ई बात पत्ता नहि छल की किछु खराब बात माँगिते तकियाक दैवी शक्ति समाप्त भ जाइत अछि । ओ जखने ई बात मोनमे रखलक त ओ तकिया देब वाली महिला ठाढ़ भ गेल । ओ महिला सहीमे परी छल जे ओ खूब चमक बला तारापर रहैत छल । उएह मिकीके इच्छापर तकिया देने छल । मुदा हुनका देखिक बहुत आश्चर्य भेल जे ई तकिया त हम मिकीके देने छलहुँ, ई आदी लग केना अछि ।

ई बात बुझमे चलि अएलै तँए ओ आदीसँ कहली,'जे दोसरके खराब देखैत अछि, ओकरा संग खराबे होइत अछि । हमरा पुरा विश्वास अछि तोँ जादू बला तकिया मिकीसँ चोरओने छैं । एकर सजाय ई अछि जे मिकीके आब एके संगे दूटा माँग पुरा हएत आ तोरा आब किछु नहि भेटतहुँ जाधरि तोँ नीक काज नहि करबे ।

ताबत मिकी सेहो स्कूलसँ घूरि आएल आ ओ पुरे बात सुनलक त मोनमे फुराइए नहि रहल छल जे कि कएल जाए । ओ परीसँ माफ क देबाक लेल निवेदन कर लागल । ई देखिक आदीके आँखिमे नोर चलि आएल । ओ ई ईर्ष्यासँ मिकीके खराब चहैत छल मुदा एत मिकी ओकरा लेल माफी मागि रहल अछि । ओ परीसँ कहलक,'हमरा अहाँक शर्त स्वीकार अछि हमर खराबपन हमर आँखि अन्हरा देने छल आब खूजि गेल अछि । शर्तक अनुसार बढियाँ काज करबाक कोशिस करब ।'

आदी मिकी दिशि तकैत बाजल,'बहिना, हमरा माफ क दिअ आ हमरा अपना जेकाँ बनमे मदत क दिअ, हम अहाँक सभ दिन अभारी रहब ।'

मिकी आदीके गलासँ लगा लेलक । परी दुनू बहिनाके ई शुरुवात देखि बिहुँसि रहल छली ।



बहादुर मुन्ना

मुन्नाके मम्मी पापा विजनेश टूरपर काठमाण्डू जा रहल छलाह । ओ एहि टूरके परिवारक संग छुट्टी मनएबाक टूरमे परिवर्तन कर चाहैत छलाह मुदा मुन्नाके परीक्षा एखन समाप्त नहि भेल छल । तँए ओ सभ मुन्नाके अपना संग नहि ल जा रहल छलैथि ।

ओ सभ ई निर्णय कएलैन्हि जे मुन्नाके आण्टी लग छोड़िक विजनेश मिटिङ्गके एटेण्ड कर चलि जाइ आ दोसरे दिन घूरि आबी । एहि तरहे छुट्टी बितएबाक योजना समाप्त भ गेल ।

ओना हुनका अपन दश सालक बेटाके पहिल बेर असगरे छोड़िक जाएके दुःख सेहो भ रहल छल मुदा मुन्ना चिन्तासँ मुक्त आ शान्त छल ।

मुन्ना मम्मी पापाके स्वयं सम्झओलक जे हुनकासँ निश्चिन्त रहौथ आ विजनेश टूरपर मज्जासँ जाउथ ओ स्वयं बढ़ियाँ जेकाँ रहत ।

मुन्ना ई सावित कर चाहैत छल जे ओ एकटा जिम्मेवार वालक अछि । ओ पापाके एहि बातसँ सेहो खुश छल कि विजनेश टूरसँ घूरिक अएलाक बाद गीतार आनि देताह ।

मम्मी पापाके गेलाक बाद मुन्ना नहा-धोक तैयार भेल आ जलपान कएलाक बाद आण्टी संग स्कूल चलि गेल । ओ परीक्षा देलक । परीक्षाक बाद घरे लग साथी सभ संग दिन भरि क्रिकेट खेललक । दोसर दिन भोरेसँ पानि पड़ लागल छल । मुन्ना भरि दिन टिभीपर कार्टून देखैत रहल । बिच-बिचमे ओ घड़ी सेहो

देखैत छल। अत्याधिक पानि पड़लाक कारणे ओकर मम्मी पापाके फ्लाइट केन्सिल भऽ गेल छल, आब ओ सभ परात भेने अओताह। बुद्ध एयर भोरे जनकपुर चलि अबैत अछि तँए मुन्नाके मम्मी पापाक लेल बड़ बेसी चिन्ता नहि छल अर्थात् रातिएके तऽ बात अछि। मुन्ना घड़ी देखलक। रातिके १ बाजि रहल छल। भोर होबऽमे एखनो चारि घण्टा बाँकी छल।

मुन्ना खिड़कीके नजदिक जाकऽ बर्षाक बुन्दके खसैत देखऽ लागल तखने ओ अपन घरक बगलमे तीन चारिटा लोकके घुसैत देखलक ओना ओ सभ मेन गेट खोलिकऽ भितर जा रहल छल। ओकरा सभके भितर घुसऽके समय आ तरिकासँ मुन्ना बूझि गेल जे ओ सभ चोर अछि।

ओ बिना समय बरबाद कएने अपन आण्टीके जानकारी देलक। आण्टी सूतल छली मुदा मुन्नाके बात सूनिकऽ हरबड़ाकऽ उठली। आण्टीके बुझऽमे नहि आबि रहल छल जे ओ की करैथि ?

'ओहि घरमे के रहैत अछि आण्टी ?' मुन्ना पुछलक।

'ओहि घरमे साहजी इन्जिनियर साहेब अपन कनियाँक संग रहैत छथि। हुनकर बच्चा कोनो दोसर शहरमे रहैत अछि। हे भगवान ! आब हम सभ की करु ?' आण्टी बजली।

'आण्टी, हमरा लग एकटा आइडिया अछि। अपने ओ घरबला अंकल आण्टीके फोनपर कहि दियौ जे ओ अपन रुमके भितरसँ बन्दकऽ लैथि, कनिको आवाज नहि निकले।'

आण्टी मुन्ना दिस आश्चर्यसँ तकैत छलीह। तखने फेरसँ मुन्ना बाजल, 'एहि तरहे ओ सभ सुरक्षित भऽ जाएत आ हम जाकऽ मेन गेट बन्दकऽ दैत छी एहि तरहे चोर भीतर बन्द भऽ जाएत आ हम सभ पुलिसके जानकारी दऽ देब।'

'हँ, ई बढ़ियाँ आइडिया अछि। हम एखने फोन करैत छी मुदा मुन्ना अहाँ सावधान रहब,' आण्टी कहलैन्हि आ नम्बर मिलाबऽ लगली।

साह जी निसभेर सूतल छलैथि फोनपर चोरके भीतर घुसऽके समाचार सूनि डेरा गेलैथि। ओ सभ बिना आवाज कएने झट्टसँ अपन बेड रुमक गेट बन्दकऽ लेलैथि। मुन्ना सावधानीसँ मेन गेट पर पहुँच गेल आ आण्टीके इशाराके प्रतीक्षा करऽ लगल।

जहिना आण्टी हँ कहलैन्हि, ओ बाहरसँ मेन गेट बन्दकऽ लेलक आ सावधानीसँ

पएर बारने अपन घरमे चलि आएल। ताहिके बाद ओ सभ पुलिसके खबरि कएलैन्हि। चोर निफिक्किर भऽकऽ साह जीक घरमे घरक समानसभ बान्हऽ लागल तखने पुलिसक गाड़ीक साइरन बाजल ओ सभ माल लऽकऽ भागबाक प्रयत्न कएलक मुदा मेन गेट बन्द छल।

ओ सभ बूझि गेल जे गेट बन्द अछि आ ओ फँसि गेल अछि। ताहिके बाद चोर खिड़की बाटे भागबाक प्रयास करऽ लागल मुदा सभ खिड़कीपर लोहाके मजगुत ग्रिल लागल छल। ओ सभ भागऽ नहि सकल।

एहि प्रकारे बदलैत स्थितिसँ परेशान भऽ ओ सभ निर्णय लेलक जे घरके कोनो व्यक्तिके नियन्त्रणमे ली जाहिसँ स्वंयके ओकरा बदलामे छोड़ा सकी मुदा बेड रुमक गेट भीतरसँ बन्द देखि ओ सभ बूझि नहि पाबि रहल छल जे आगा की कएल जाए ?

किछुए देरक बाद पुलिस घरक भितर आबि गेल, पुलिस ओहि चोर सभके पकड़ि लेलक। इन्स्पेक्टर ओहि चोर सभके चिन्ह लेलक। ओ सभ बड़का अपराधी समूहक छल। बिचक महिना सभमे बहुतो घरमे चोरी कएने छल। ओहि चोर सभके काज करबाक तरिका गजब छल। ओ चलाकीसँ नोकर वा घरक लोकसँ घरक चाभी लऽ लैत छल आ फेर ओहि चाभीके डुप्लिकेट बनालैत छल, फेर ओही चाभीसँ बिना ताला तोड़ने ककरो घरमे चलि जाइत छल। ओना ताला तोड़ऽके सेहो ओकरा सभ लग औजार छल। बहुत बेर तऽ ककरो नजरिमे अएने बिना लूटिकऽ भागि जाइत छल मुदा आजुक दिन ओकरा सभक लेल खराब छल। ओहुना खराब कामक नतिजा एक ने एक दिन खराबे होइ छै मुन्ना ई सोचिते छल, तखने पुलिस ओकरा सभके थानामे लऽ जएबाक लेल धकिअबैत पिटैत आगा बढ़ल मुदा इन्स्पेक्टर मुन्नाके ओकर बहादुरी आ समझदारीक लेल धन्यबाद देबाक लेल रुकि गेल आ पिठ थपथपबैत कहलक, 'अहाँ बहुत बुधियार छी खूब पढ़ू आ आगा बढ़ू, अहाँक बुधियारीसँ ई सभ पकड़ल गेल।'

जखन मुन्नाके मम्मी पापा घर अएलैथि तऽ इन्स्पेक्टर कहलकैन्हि जे जिल्ला प्रशासन कार्यालयक दिससँ मुन्नाके बहादुरीक लेल इनाम देल जाएत। मुन्नाक मम्मी पापाके खुसीक ठेकान नहि छल। हुनका सभके मुन्नापर गर्व भऽ रहल छल।



चमत्कारी लोक

एकटा चमत्कारी लोक छल। ओ एतऽ ओतऽ घुमैत रहैत छल। ककरो समस्यामे पड़ल देखि, ओ ओकरा सहयोग करए आगा बढ़ि जाए।

एक बेर ओ घुमैत-घुमैत एकटा बजारमे पहुँचल। ओकरा भूख लागल तऽ ओ मिठाइके दोकानपर चैलि गेल। दोकानदार बिलकुल राजशाही ठाठमे रहैत छल। मुदा छल बहुत कञ्जुस।

ओ युवक ओकरासँ खएबाक लेल किछु मंगलक। दोकानदार ओकर भेषभुषा देखिकऽ पहिने पैसा मंगलक। युवकद्वारा खएलाक बाद देब कहलाक बादो ओ पहिनहि पैसा लेबऽ पर अड़ि गेल। ओ युवक तमसाकऽ दोकानसँ निकैलि गेल।

एमहर, युवक दोकानदारक आँखिसँ दूर भेल तऽ दोकानक सभ मिठाइ गायब भऽ गेल। दोकानदार चकरा गेल। ओ बूझि नहि पाबि रहल छल जे ई की भऽ गेल ? 'कतहुँ ओ युवक जादूगर तऽ नहि छल ?' ओ सोचलक आ ओ युवककेँ खोजी करऽ आगू बढ़ल। बहुत दूर गेलाक बादो ओ युवक नहि भेटल मुदा दोकानदार ओकरा खोजैत रहल।

एमहर युवक बहुत आगू निकलि गेल रहए। ओ थाकि गेल रहए तँए एकटा गाछक नीचामे आराम करऽ लागल। लगेमे रहल गाम दिशिसँ एकटा मजदूर आबि रहल छल। युवक लगमे बजओलक आ कहलक, 'हम बहुत थाकि गेल छी। हमरा बहुत पियास लागल अछि, की हमरा अहाँ सहयोग करब ?'

मजदूर बाजल, 'लगेमे इनार छै, हम जाकऽ पानि आनि दैत छी। आओर

कोनो सेवा हुअए तऽ कहब ?'

युवक बाजल, 'पानि पिआकऽ कनी हमरा पएर दबा दिअ बहुत दर्द भऽ रहल अछि।'

मजदूर पानि लऽकऽ आएल आ बाजल, 'मालिक, हम अपन काजपर जा रहल छी, अबेर भेलाक बाद हमरा काज नहि भेटत तऽ हमरा रातिमे घरमे भोजन नहि बनत।'

'एकर चिन्ता अहाँ नहि करु, ' युवक बाजल।

मजदूर युवककेँ पएर दबाबऽ लागल। बहुत देरक बाद युवक बाजल, 'आब छोड़ि दिअ, हमर सभ थकान उतरि गेल, आब अहाँ घर जाउ अहाँक कनियाँ प्रतीक्षा करैत हएत।'

'मुदा हम तऽ कमाए जाइत छलहुँ, ' मजदूर बाजल।

'नहि आब अहाँ घर चलि जाउ,' युवक कहलक।

मजदूर घर गेल तऽ ओकर घरसँ भोजनके बहुत सुगन्ध आबि रहल छल। घर पहुँचकऽ ओ बहुत दिनक बाद भात, दालि, तरकारी आ तरुवा खएलक। ओकरा आश्चर्य भऽ रहल छल। कनियाँ भोजनक व्यवस्था आखिर कोना कएलक? ओ कनियाँसँ पुछलक तऽ कनियाँ बजली,' अहीं तऽ समान सभ पठओने छलहुँ, एक गोटे ई सभ समान देने छल।'

मजदूर बूझि गेल ई सभ ओही व्यक्तिके चमत्कारसँ भेल अछि। ओ पुरे घटना अपन कनियाँके सुनओलक। कनियाँ बहुत प्रशन्न भेल। ओ बाजल, 'चलू जल्दीसँ हम हुनका बजाकऽ अनैत छी, हम दिन राति हुनकर सेवा करब। ओ सभ किछु हमरा देताह।'

मजदूर आ ओकर कनियाँ युवककेँ खोजीमे ओहि स्थानपर पहुँचल, जाहि स्थान पर युवक आरामकऽ रहल भेटल रहथि। मुदा ओहि स्थानपर किओ नहि छल। दुनू गोटे अन्य स्थान सभपर सेहो खोजऽ लागल ओ कतहुँ नहि भेट रहल छल। दुनू पागल जेकाँ हुनका खोजि रहल छल।

जाइत-जाइत युवक एकटा चौबटियापर ठाढ़ भऽ गेल, किछुए देरक बाद ओहि चौबटियापर एक दिशिसँ दोकानदार पहुँचल, तऽ दोसर दिशिसँ मजदूर।

ओकरा सभके देखलाक बाद युवक बाजल, 'अहाँ सभ हमरा खोजि रहल छी,

हम एतहि छी ।'

दुनू गोटे ओ युवककेँ अपना-अपना संग ल' जाए चाहैत छल । दोकानदार मिठाइके लोभ द' रहल छल, मजदूर सेवा करबाक । युवक दुनू गोटेके शान्त कएलक । फेर सभसँ पहिने दोकानदारसँ कहलक,'अहाँ कि बुझैत छी मिठाइके लोभसँ हमरा बान्हि लेब ? दिन भरि एकके चारि लेब' बला, अहाँ हमरा कि खुआएब पिआएब ? ओहि दिन हम भूखल पियासल अहाँक दोकान पर पहुँचलहुँ मुदा अहाँ हमर कपड़ा देखिक' पैसा मांग' लगलहुँ ।'

एकर बाद युवक मजदूर दिशि घूमल आ बाजल,'अहाँ हमरा बढ़ियाँ लागल छलहुँ, अहाँमे परोपकारक भावना अछि । मुदा बादमे अहाँके मोनमे लोभ आबि गेल अछि । अहाँ मेहनत आ मजदुरीसँ पेट पालि लैत छी, ई बढियाँ अछि अपन बाट नही छोरु । '

दुनू लजाक' युवककेँ पएर पर खैसि पड़ल । बाजल,'आइसँ हम सभ कोनो प्रकारक लोभमे नहि पड़ब ।'

दुनू गोटे युवककेँ प्रणामक' अपन-अपन दिशामे चलि गेल । युवक सेहो अपन बाटपर चलि पड़ला ।



गायन प्रतियोगिता

चितवनक सौराहा जंगलक राजा रवि बाघक दरबारमे गीत प्रतियोगिताक आयोजन छल । जंगलक बड़का नामी–नामी गायक सभ जम्मा भेल छल । कारी कोइली, गिन्नी मेना, गणेश हाथी,सौरभ सुगा, चंकी बानर जेहन जंगलक चर्चित गायक सभ पहुँचल छल । सभके आश्चर्यक ठेकान तखन भेल जखन रामु कौआ सेहो गीत गाबय लेल ओत' पहुँचल । सभ ओकर नेनपन पर हाँसए लागल । जंगलके सभ लोक ई बुझैत छल जे रामु कौआ सँ बेसुरा किओ गीत नहि गाइब सकैत अछि । सभ गोटे ओकरा बुझौलक सेहो । मुदा ओ नहि मानलक आ प्रतियोगितामे सहभागी भ' गेल ।

किछु देरकबाद दरवार लगाओल गेल । रवि बाघ सिंहासन पर बैसि रहला आ ओ गायन प्रतियोगिता शुरु करबाक आदेश देलन्हि । एकरबाद पुरे महौल संगीतमय भ' गेल । सभ गायक एक सँ एक बढिक' गीत गौलक । मुदा कारी कोइली त' कमाले क' देलक । ओकरा जेहन गीत किओ नहि गाबि सकल । सभसँ अन्तमे रामु कौआके गीत गाबयके अवसर भेटल । ओकर गीत सुनि क' ओतए उपस्थित सभ लोक हाँसए लागल । रामु कौआ ओहि सँ बहुत दुखित भेल । ओ ओतए सँ उड़िक' चलि गेल । ओकरबाद पुरस्कारक घोषणा कएल गेल । जेना की आशा छल, ओहिना भेल । कारी कोइलीके विजेता घोषित कएल गेल । ओ बहुत खुशी भेल । ओकरा पुरस्कारक सँगहि रवि बाघ एक वर्षक लेल 'दरबारी गायक' उपाधी प्रदान कएलन्हि ।

समारोह समाप्त भेलाक वाद कारी कोइली के बधाई दऽ सभ गायक सभ फिर्ता चलि गेल। बाद मे ई खबर पुरे जंगल मे पसरल कि रामु कौआ जंगल छोड़ि कऽ भागि गेल अछि। ओकरा बहुत खोजल गेल, मुदा ओ नहि भेटल।

समय वितैत गेल। कारी कोइली आब पहिने जेकाँ नहि रहि गेल छल। ओ बहुत घमण्डी भऽ गेल छल। ककरो सँ सीधे मुँहे बात नहि कऽ रहल छल। किओ गीत गबैत छल तऽ ओकरा ओ मजाक बना कऽ उड़ा दैत छल। कहैत छल, 'तोरा गीत नहि गाबय अबैत छौ। कौआ जेकाँ गीत गबैत छेएँ।' ओकर एहि बात के किओ विरोध नहि करैत छल। सभके बुझल छल ओकरा जेहन केओ गीत नहि गाबि सकैत अछि। एहि तरहे एक वर्ष बीत गेल।

रवि बाघ फेर सँ प्रतियोगिताक आयोजना कएलन्हि। सब एक बेर जम्मा भेल। मुदा आश्चर्यक बात ई छल जे किओ गीतक प्रतियोगितामे सहभागी होबए नहि चाहैत छल। किओ कारी कोइली कैं चुनौती स्वीकार नहि कएलक। अन्तमे रवि बाघ कारी कोइली के विजेता घोषित करबाक निर्णय लेलन्हि। एहि निर्णय सँ जंगलवासीमे निराशाक लहरि दौड़ गेल। किओ नहि चाहैत छल कारी कोइली दरबारी गायक बने। ओकर व्यवहारक कारण लोक ओकरा पसिन नहि करैत छल। तैयो चुप रहब सभके मजबुरी छल। कारण कारी कोइलीक प्रतिस्पर्धा करबाक ककरो बसक बात नहि छल।

तेकर एक वर्षक बाद फेर सँ प्रतियोगिताक आयोजना भेल। ओहुँमे कोइली सहित सभ गायक गायिका भाग लेलक। प्रतियोगिता चलिए रहल छल ओहि समयमे ओतए एकटा विचित्र सन चिड़ै आएल। ओकर पुरे शरीर छाउर रंगक छल। ओ बहुत सुन्दर लागि रहल छल। सभ शान्त भऽकऽ ओकरा देखय लागल। ओ चिड़ै रवि बाघके प्रणाम कएलक आ बाजल ' सरकार हम गीतक प्रतियोगितामे सहभागी होबए चाहैत छी।'

रवि बाघ किछु कहथि ताहि सँ पहिने कारी कोइली बाजल, 'किए अपन मजाक बनाबय चाहैत छेएँ। हमरा सँ किओ जीत नहि सकत।'

'हम तोहर चुनौती स्वीकार करैत छियौक,' भसमाहा चिड़ै कोइली के

जवाब दैत बाजल।

राजा सहित सभ लोकके उत्सुकता बढ़ि गेल। रवि बाघ प्रतियोगिता शुरु करबाक आदेश देलन्हि। पहिने कारी कोइली गीत गौलक। जकरा बहुत प्रशंसा कएल गेल। जखन भसमाहा चिड़ै गीत गाबय शुरु कएलक तखन सभके अचरज भेलैक। कारी कोइरी सेहो आश्चर्यमे छल। ओकरा विश्वास नहि भऽ रहल छल, भसमाहा चिड़ै एतेक बढ़िया गाबि सकत। रवि बाघ भसमाहा चिड़ैके विजेता घोषित कएलन्हि आ संगहि 'दरबारी गायक' के रुपमे उपाधी प्रदान कएलन्हि। कारी कोइलीक घमण्ड चुर–चुर भऽ गेल छल। ओ माथ झुकोने एकटा कोनमे ठाढ़ छल।

पुरस्कार देलाक बाद रवि बाघ भसमाहा चिड़ै सँ ओकर परिचय पुछलन्हि ताहि पर ओ बाजल, 'हमर नाम रामु कौआ अछि।'

ई सुनि कऽ रवि बाघ के आश्चर्यक ठेकान नहि रहल। किओ एहि बातके मानएके लेल तैयार नहि छल जे एहि प्रकारक कौआ गीत गाबि सकैत अछि। कौआ उड़ि कऽ नजदिके रहल पानि मे स्नान कएलक। तेकर बाद ओकर पुरान रंग चलि आएल। एकरबाद सभके विश्वास भऽ गेल। कारी कोइली ओकरा सँ क्षमा मंगलक आ सफलताक रहस्य पुछलक। रामु कौआ कहलक,'प्रतियोगितामे हारलक बाद हमरा उपहास भेल छल। जाहि सँ बहुत दुःखी छलहुँ, हम जंगल छोड़िकऽ दोसर जंगल चलि गेलहुँ। ओतए हम बहुत लगनसँ अभ्यास कएलहुँ। जकर प्रमाण अहाँ सभक आगु मे अछि। '

'मुदा रुप बदलिकऽ किए एलेहुँ अछि ? बात हमरा बुझयमे नहि अबैत अछि,' रवि बाघ द्वारा पुछलाक बाद कौआ बाजल, 'यदि हम रुप बदलिकऽ नहि अवितहुँ तऽ अपने हमरा बेसुरा गाबयवाला रामु कौआ बुझिकऽ प्रतियोगितामे सहभागी होबय नहि दैतहुँ।'

रामु कौआक उत्तर सुनिकऽ राजा ओकर प्रशंसा करय लगला आ पुरे जंगलके अभ्यासक महत्वके पता चलि गेल।



अघोड़ी धरायल

ओहि दिन भोरे–भोर दिपेशक मम्मी घरक मुल गेट खोलिते एकाएक चिचिया उठली। बाहर प्राङ्गणमे सिन्दुर लागल हड्डी राखल छल। हुनका चिचियाएकेँ आवाज सुनि दिपेशक पापा दौड़ कऽ बाहर एला, हड्डी देखी कऽ ओहो आतंकित भऽ गेलथि। हुनका सभ बीच बातचीत चलिए रहल छल कि बाहर सँ एकटा अघोड़ीके आवाज आएल, 'अलख निरञ्जन, साधु के किछु भिक्षा दिअ।'

दिपेशक मम्मी गेट खोललथि।

'ओह ! वहिन जी अहाँ किछु परेशानी मे छी जेना लगैत अछि।' कहि किछु देर आँखि मुनि लेलन्हि। फेर आँखि खोलि कऽ बजला, वहिन जी, किओ अहाँ घर पर जादू टोना कऽ देलक अछि। किओ गलत चीज अहाँक घर पर राखि देलक अछि।'

'हँ महाराज एखने हमर आँगनमे ई मनहुस हड्डी भेटल अछि,' दिपेशक मम्मी हाथ जोडि कऽ डेराइते–डेराइते बजली।

'हँ...., ई तऽ सही मे कोनो काएले हड्डी अछि।'

'हम एकरा बाहर फेकि दियै महराज,' पापा बजला।

'छुबो नहि करब। एहि मन्त्रके काटय आ बेअसर करयके लेल अनुष्ठान करय पड़त। एक हजार रुपैया खर्च लागत, 'अघोड़ी बजला।

'हम तैयार छी। कोनो प्रकारे एकरा एकर शक्ति समाप्त करु बाबा,'

मम्मी कलैप कऽ बजली।

'अवश्य–अवश्य ! हम काल्हि भोरे एतय आएब ई सभ चीज तैयार कऽ कऽ राखब अनुष्ठान पुरे दिन चलत। रातिमे हम आ हमर चेला एतही रहब। भोजनके व्यवस्था खाली कऽ देब,' कहि कऽ बाबा एकटा लिष्ट मम्मीकेँ दऽ देली आ फेर नाटकीय रुपमे चलि गेलाह।

लिस्ट दिपेश सेहो पढ़लक। ओ संशकित भऽ कऽ बाजल, 'मम्मी हमरा तऽ ई बाबा पुरा पुरा ढोंगी लगैत अछि।'

'नहि दिपेश, तोँ एखन छोट छे। फेर एक हजार रुपैयाक खर्चक बात अछि ? कम सँ कम मोनक शान्ति तऽ भेटत, ' पापा सहमति दैत दिपेशके चुप करा देलाह।

दिपेशके मोन नहि मानि रहल छल, ओ ई बात अपन मित्र अनिशके कहलक। अनिशके सेहो आश्चर्य लगाल। अनिशक पिता पुलिसमे इन्स्पेक्टर छलाह। ओ दुनू गोटे अनिशक पिता लग गेल। अनिशक पिता कहलन्हि, 'दिपेश अहाँ रातिमे ओ अघोड़ी सभके देखैत रहब ओ कि करैत अछि, फेर टेलिफोन सँ रातिमे हमरा सूचित करब।'

दोसर दिन भोरे बाबा एकटा युवक चेलाक सँग दिपेशक घर एलाह। ओ बाहरमे एकटा खदिया खुना होम जाप करय लगला। बाबाक पूजाक कारण दिपेश स्कुलो नहि गेल। पूजा समाप्त भेलाक बाद रातिमे सभ गोटे सुति रहल। मुदा दिपेश खिड़की खोलि बाबाक चाल पर निगरानी कऽ रहल छल। आधा राति भेलाक वाद ओ देखलक बाबा आ हुनकर चेला दिपेशक बगल बला देवाल बाटे पड़ोसीक घरमे जा रहल अछि।

किछुए देरमे दुनू घरके ताला तोरि सभ समान पैक कऽ बाहर निकलयके कोशिस कएलक। तखने अचानक ओ घर पुलिसक जिपक हेडलाइट सँ चमैकि उठल। दुनू बाबाके पुलिस पकड़ि लेलक। बाबा स्वीकार कएलन्हि,' हम सभ बहुत दिन सँ रामप्रितजीके घर पर नजरि रखने छलहुँ। हमरा पता चलल पुरे परिवार कतहुँ बाहर गेल छथि। बाहर वला देबाल बहुत उच्च अछि आ बाहर बला ताला तोड़ब रिस्क छल। एहि द्वारे हम सभ बगलवाला घर सँ घुसयकेँ योजना बनेलहुँ।

'ओ हड्डी सेहो आँगनमे तोहि सभ फेकने छलाएँ की ?' पुलिस पुछलक ।

'हँ, हम सुनने छलहुँ दिपेशक मम्मी बहुत अन्ध विश्वासी छथि, तखने हम सभ ई योजना बनेलहुँ ।'

ई सुनि क' दिपेशक मम्मी के माथ लाज सँ झुकि गेल । पुलिस चोरके ल'क' चलि गेल ।

दिपेशक मम्मी पापा दुनू गोटे दिपेश दिस ताकय लागल आ बाजल, 'तौँ कोना पुलिसके बजौलएँ ?'

एहि पर दिपेश अपन मित्र अनिशसँग भेल बातचित आ ओकर पापाके सल्लाहमे ई भेल बात कहलाक बाद मम्मी पापा दिपेशके कोरामे उठा लेलन्हि । आ बच्चाक प्रति गर्व महसुस भ' रहल छलन्हि । दिपेशक पापा बजला,'दिपेश तौँ बड़का काज कएलाएँ यदि रामप्रीत जीके घरमे हमरा कारण चोरी भेल रहथि त' हम ककरो मुहँ देखाबयके अवस्थामे नहि रहितहुँ ।'

एकर बाद दिपेश मम्मी पापा सँग सुतय चलि गेल । ओकरा भोरे अनिशके चोर पकरयके कहानी सुनावएके छल ।



ज य ज य

एकटा सुन्दर गाम छल । चारु दिशि पहाड़सँ घेरल छल । पहाड़क पाछू एकटा बाघ रहैत छल । जहिया ओ उँचाइपर चढ़ि गरजैत छल त' गामक लोक सभ डेराक' काँप' लगैत छल ।

ठण्ढाक समय छल पूरे गाम बरफसँ भरल छल । बाघ बहुत भूखल छल ओ कतेक दिनसँ किछु खएने नहि छल । शिकारक लेल ओ निचा उतरल आ गाममे घूसि गेल । ओ शिकारक खोजीमे घूमि रहल छल । दूरसँ एकटा फुसक घर देखाइ देलक । खिड़कीसँ एकटा दीपके प्रकाश सेहो आबि रहल छल । बाघ सोचलक किछु नहि किछु भोजन अवश्य भेटि जाएत । ओ खिड़कीक निचामे जाक' बैसि गेल ।

घरक भीतरसँ बच्चाके कान'के आवाज आबि रहल छल । अँए....अँए...... । ओ लगातार कानि रहल छल । बाघ एमहर ओमहर ताकिक' घरमे घुसहेबला छल कि ओकरा एकटा महिलाक आवाज सुनाइ देलक,'चुप रहू बाबू देखू नढ़िया आबि रहल अछि । बाप रे कतेक बड़का नढ़िया अछि ? कतेक बड़का ओकर मुँह छैक । कतेक डर लगैत अछि ओकरा देखिक' ।'

मुदा बच्चा कानब बन्द नहि कएलक ।

ओ महिला फेर बाजल, 'बउवा रे देखही भालू अएलइ...... भालू खिड़की लग बैसल छैक । चुप भ' जो नहि त' भालू भीतर आबि जएतहुँ ।' मुदा

बच्चा कनिते रहल । ओकरा ओ सूनिकऽ कोनो असर नहि पड़ि रहल छल ।

'देखि..देखि...' महिलाक फेर आवाज आएल, 'देख बाघ आबि गेलहुँ, देखही खिड़कीक निचामे ठाढ़ छैक ।'

मुदा वच्चा तैयो चुप नहि भेल, तैयो कानब बन्द नहि कएलक । ई सूनिकऽ बाघकेँ बहुत आश्चर्य भेल आ बच्चाक बहादुरीसँ ओकरा डर सेहो लागऽ लागल । ओकरा चक्कर जेकाँ आबए लागल ।

'ओ कोना जाइन गेल जे हम खिड़की लग छी, ' बाघ सोचलक । किछुए देरक बाद ओकरा जानमे जान आएल आ ओ खिड़कीके भीतर तकलक बच्चा एखनो कानि रहल छल । ओकरा बाघक नाम सुनलाक बादो डर नहि लागि रहल छल ।

बाघ एखनधरि कोनो एहन जीव नहि देखने छल जे ओकरासँ डेराइत नहि हो । ओ तऽ इएह बूझि रहल छल जे संसारक सभ जीव डरे काँपए लगैत अछि, मुदा ई विचित्र बच्चा हमर कोनो परवाह नहि कएलक । ओकरा ककरोसँ डर नहि होइत अछि ।

आब बाघकेँ चिन्ता होबऽ लागल । तखने महिलाक आबाज फेर सुनाइ देलक,' बेटु आबो तऽ चुप रह ई देखही जयजय....।'

बच्चा किछुए देरमे कानब वन्द कऽ देलक । रुम पूरे शान्त भऽ गेल ।

बाघ सोचलक,' ई जयजय के अछि ? बहुत खुँखार हएत ।'

आब तऽ बाघकेँ जयजय के विषयमे सोचिते डर लागऽ लागल छल । ओहि समय कोनो भारी चीज धम्मसँ ओकर पीठपर खसल । बाघ अपन जान बचाकऽ ओतऽसँ भागल । ओ सोचलक कि ओकर पीठपर हो न हो जयजये कूदल अछि ।

असलमे ओकर पीठपर एकटा चोर कूदल छल जे महिलाक घरमे गाय महींस चोराबऽ आएल छल । अन्हारमे बाघकेँ गाय बूझिकऽ चोर एकटा गाछपरसँ ओकर पीठपर कूदल छल ।

डर तऽ चोरोकेँ भेल ओकर तऽ जाने निकलि गेल । जखन ओकरा पता लागल जे ओ बाघक पीठपर सवार अछि, गायक पीठपर नहि ।

बाघ बहुत तेजीसँ पहाड़ दिशि दौड़ल । चोर बाघकेँ कसिकऽ पकड़ने

छल ओ बुझैत छल यदि कोनो ढंगसँ खसलहुँ तऽ बाघ जीवैत नहि छोड़त ।

बाघकेँ अपन जानक डर छल आ चोरकेँ अपन जानक ।

किछुए देरमे भोर होबऽ बला छल । चोरकेँ एकटा गाछ देखाइ देलक ओ डाढ़ि पकरिकऽ जल्दीसँ गाछक उपर चढ़ि गेल । बाघकेँ पीठसँ छुटकारा भेटलाक बाद चयनक साँस लेलक ।

बाघ सेहो जान बचाबऽ लेल भगवानकेँ लाख-लाख धन्यवाद देलक । जयजय तऽ बहुत भयानक जीव अछि सोचैत बाघ भूखल पियासल अपन गुफामे चलि गेल ।



जनकक बंशज

मिथिलामे एकटा बहुत धर्मात्मा आ ज्ञानी राजा छलाह। हरेक समय प्रजाक लेल काज करैत रहैत छलाह। राजमहलक सुख सुविधा हुनका लेल खासे अर्थ नहि रखैत छल।

एक बेर एकटा महात्मा हुनकासँ भेटबाक लेल अएलाह। राजा महात्माके बहुत सम्मान कएलैन्हि आ दरवारमे अएबाक कारण पुछलैन्हि। महात्मा बजलाह,' राजन सुनलहुँ अछि जे अपने राजसी ठाट-बाटसँ अलग रहैत छी। अपने राज महलमे रहिकऽ ई सभ कोना करैत छी। '

राजा उत्तर देलैन्हि,'महात्मा क्षमा करब अपने असमय अएलहुँ अछि। एखन हमर काज करबाक समय अछि अपनेक प्रश्नक जबाब किछु देरक बाद देब। ताधरि अपने ई दीप लऽकऽ हमर महलके देखि आउ। '

किछु देर रुकैत राजा आगा बजलाह, 'महात्मा ध्यान राखल जएतैक जे दीप मिझाए नहि, नहि तऽ अपने बाट बिसरि सकैत छी।'

महात्मा दीप लऽकऽ आगा बढ़ि गेलथि। किछु घण्टाक बाद जखन ओ घुरलाह तऽ राजा बिहुँसिकऽ पुछलैन्हि, 'कहल जाउ, स्वामी जी हमर महल केहन लागल ?'

महात्मा बजलाह,'राजन हम अपनेके हरेक भागमे पहुँचलहुँ, सभ किछु देखलहुँ, मुदा बढियाँ जेकाँ नहि देखि सकलहुँ।'

राजा पुछलैन्हि,'से किए ?'

'हमर पुरे ध्यान एहि दीपपर लागल छल जे कहीं ई मिझा ने जाए। '

राजा उत्तर देलैन्हि, 'महात्मा जी ई राज्य चलबैत काल हमरा इएह होइत रहैत अछि...., महात्माकेँ राजाक बात बुझएमे नहि आबि रहल छल। ओ राजा दिस ताकए लगला।

फेर कनिक रुकैत राजा बजला,'हमर पुरे ध्यान जनताक सेवामे लागल रहैत अछि। चलैत फिरैत उठैत बैसैत, एक्के बात आगामे रहैत अछि जनताके हम सेवक छी, जनताके कोनो अभाव नहि होइक।'

महात्माक मुँहपर सन्तुष्टि आ प्रशन्नताक भाव छल ओ बजलाह, 'राजन हम अपनेक विषयमे जखन सुनलहुँ तऽ विश्वासे नहि भऽ रहल छल आब देखिकऽ मानि गेलहुँ अछि जे अपने सहीमे जनकक वंशज छी।'



उपकारी कौआ

बहुत पुरान बात अछि। कोनो गाछपर एकटा कौआ रहैत छल। ओकरा दोसरकेँ मदत कएलासँ बहुत प्रशन्नता भेटैत छल। इएह कारण छै जे गाछक अन्य चिड़ै सभके मोनमे ओकरा प्रति विशेष आदर छल।

एक बेरक बात अछि। अत्याधिक वर्षा भऽ रहल छल। तखने एकटा कारी खतरनाक देखाएबला साँप कतहुँसँ सरसर करैत गाछ लग आएल। ओ गाछक जड़ि लग कतहुँ नुकाएबाक कोशिस कऽ रहल छल। शायद साँपक विल्लुरमे पानि चलि आएल छल।

गाछक एकटा मोटका डाढ़िपर धोधैरिमे नुकाएल कौआ बिजलौकाक चमकमे साँपकेँ बास स्थान तकबाक प्रयास कऽ रहल देखलक। ओकरा दया आएल, मुदा भारी पानिमे ओ कैए कि सकैत छल ? पानिसँ भीजल साँप कखनो गाछपर रहि-रहिकऽ चढ़बाक प्रयत्न करैत छल आ खसैत छल।

कौआसँ रहल नहि गेल। ओ ई बूझितो जे साँप चिड़ैके दुश्मन होइत अछि। ओकर मद्दति करबाक निर्णय कएलक। 'काँ-काँ !' कौआ बाजल। कौआक आवाज सूनिकऽ साँप अपन फन उठाकऽ उपर तकलक। 'काँ-काँ, उपर चलि आउ, हमर घर खाली अछि। पानि रुकिते चलि जाएब,' कौआ मद्दतिक लेल हाथ बढ़ओलक।

'एक तऽ फ्रिमे घर, उपरसँ शिकार सेहो। वाह !' पानिसँ भीजल साँपक शरीरपर कौआक आवाज सूनिकऽ प्रशन्नताक गर्मी चलि आएल।

'अबैत छी, अबैत छी !' कहिकऽ साँप सरसराइत कौआक ओहि धोधैरिमे पहुँच गेल।

दुश्मन दूर रहए तऽ ओकर शक्तिक ओतेक भय नहि होइत अछि। मुदा लगमे आबि गेलासँ नहि चाहैत सेहो हृदय डरसँ काँपऽ लगैत अछि।

एकाएक कारी साँपकेँ जी लपलपबैत देखि कौआ डेरा गेल। ओकरा लागल किओ गरम लोहाक छड़ देहपर राखि देलक अछि।

तैयो कौआ दम साधिकऽ दुबकल रहल। एमहर ठण्डासँ कपैत साँपकेँ धोधैरिमे गर्मी भेटल तऽ ओ अपन सिकुरल शरीरकेँ फैलाबएके शुरु कऽ देलक एहिसँ कौआकेँ बहुत असुविधा होबऽ लागल।

साँपक शरीरसँ ओकर पाँखि सैटि गेल। कौआ कनी फरफरएबाक कोशिस कएलक, मुदा ओतबो स्थान नहि छल वेचारा कौआ फैसि गेल छल। अपने घरमे पराया जेकाँ बुझाए लागल छल।

कौआ चुपचाप एके अवस्थामे बैसल रहल। साँपकेँ भूख लागल। कौआकेँ अनुभव भेल जे ओकर शरीरपर किओ कैसि रहल अछि ओ साँपक नियत बूझि गेल। हाथ जोड़िकऽ बाजल, 'की कऽ रहल छी भाइ ! हम अहाँकेँ रहबाक स्थान देलहुँ अछि।'

'हमरा बहुत जोरसँ भूख लागल अछि !'

'तऽ की हमरे मारिकऽ खाएब ?'

'अहाँ सन भोजन कोनो दोसर भऽ सकैत अछि ?'

'एना नहि करु। नहि तऽ फेर किओ ककरोपर उपकार नहि करत।'

'मूर्ख ओ होइत अछि, जे दुश्मनोपर उपकार करए,' हँसैत साँप कौआक शरीरकेँ जोड़सँ पकैड़ि लेलक।

'ओह ! उपकारक ई बदला ? '

मृत्यु आगामे देखि कौआ डेराएल नहि मुदा साँपक नियत आ उपकारक ई बदला देखि कौआक आँखि भरि आएल, ओ कानऽ लागल। मने मोन परमात्मासँ अपन मुक्तिक कामना करऽ लागल।

तखने कौआ देखलक बाहर बहुतरास चिड़ै सभ चैं-चैं कऽ रहल अछि। आ ओहि धोधैरिके मुँहपर एकटा भयानक चिल्लोहरि साँपकेँ घूरि रहल सेहो देखलक। चिल्लोहरिकेँ देखिते एकाएक कौआकेँ ओ दृश्य स्मरण आबि गेल

जखन ओ अपन जानपर खेलिक؛ शिकारीसँ चिल्लोहरिकेँ रक्षा कएने छल ।

एकटा विचित्र आवाज करैत चिल्लोहरि धोधैरि भीतर अपन मुँह घुसिअएलक । चिल्लोहरिकेँ चोच देखि साँप डेरा गेल तखने चिल्लोहरि साँपकेँ गरदैनि अपन चोचमे दबबैत सराकसँ आकाशमे उड़ि गेल ।

मानू कौआसँ कहैत हुअए, 'संकटमे अहाँ सभकेँ रक्षा करैत छी फेर अहाँकेँ किओ कोना संकटमे फँसए देत । दोसरकेँ सेवा करएबलाकेँ भगवानो बँचबैत अछि मित्र ।'

कौआक आँखिमे नोर चैलि आएल । ओकरा अपनापर गर्व भेल, मुदा एकटा शिक्षा सेहो भेटल, दुश्मन चाहे जेहन हुए ओहिसँ सदैब सावधान रहबाक चाही ।



चिड़ैक खोंता

धनुषाक जटही गाममे घनश्याम अपन कनियाँ आ बच्चाक संग रहैत छथि ।

जनकपुरमे हुनकर दोकान छन्हि, जे गाम सँ बहुत दूर नहि अछि । घनश्याम प्रत्येक दिन भोरमे जनकपुर जाइत छथि आ साँझमे अपन घर चलि अबैत छथि ।

एक दिन ओ जनकपुर सँ आम किन क؛ अनलाह, हुनकर बच्चा आम खएलक आ खेल-खेलमे आँठी जमीनमे गाड़ि देलक । किछु दिनक बाद ओ आँठीमेसँ पेंपी निकलल । घनश्यामक कनियाँ ओ पेंपीकेँ देख भाल कर؛ लगली । ओहिमे पानि रखथि, जल्दी पेंपी गाछ बनि गेल । ओ गाछमे खरी वा अन्य घरक मल सभ रखथि । समय बितैत गेल ओ छोटकी गाछ बड़का गाछ बनि गेल । ओ घनगर भ؛ गेल । एक समय एहन भेल जे ओहि गाछपर आमक मज्जर लागल । देखिते-देखिते ओ आमसँ भरि गेल ।

ओहि गाछपर एकटा चिड़ै खोंता बनओने छल । किछु समयक बाद ओकरा बच्चा भेल त؛ चिड़ै अपन बच्चा संग रह؛ लागल । बच्चा एखन छोट छल, उड़؛ नहि जनैत छल । चिड़ै ओकरा सभक लेल भोरे-भोरे भोजन लाब؛ जाइत छल । एक दिन जखन चिड़ै बच्चाक लेल भोजन लाब؛ गेल त؛ बच्चा घनश्यामक कनियाँक आबाज सुनलक ।

ओ अपन घरबलासँ कहि रहल छलीह, 'एहि गाछपर बहुत आम फरल छैक । किछु आम तोरबा दिअ, अँचार बनाएब ।'

घनश्याम कहलन्हि, 'हँ-हँ किए नहि ? हम पड़ोसमे रहल मजिबुलासँ कहि

दैत छियैक ओ काल्हि आम तोड़ि देत। ' ई कहलाक बाद घनश्याम जनकपुर चलि गेलाह।

जखन चिड़ै भोजन लऽकऽ आएल तऽ बच्चा बाजल, 'माँ हमरा बहुत डर लगैत अछि, काल्हि घनश्यामक पड़ोसी आम तोरबाक लेल गाछपर चढ़त। एहिसँ हमर खोँता टूटि जाएत, एहिसँ हम पकड़ा सेहो सकैत छी।'

चिड़ै कहलक, 'बेटा डेराउ नहि, भोजन करु आ सूति रहू। आम नहि टुटत, नहि किओ गाछपर चढ़त।' ठीके तीन-चारि दिन बीत गेल, घनश्यामक पड़ोसी आम तोड़ऽ नहि आएल।

ओकर दू तीन दिनक बाद घनश्यामक कनियाँ फेर स्मरण दिऔलन्हि एहिपर घनश्याम बजलाह, 'ठीक छैक, हम अपन छोट भाइसँ कहि दैत छियैक ओ आएत आ आम तोड़ि जाएत। '

खोंतामे बैसल बच्चा सभ बात सुनलक जखन चिड़ै भोजन लऽकऽ आएल, तऽ बच्चा सभ बात बतओलक मुदा चिड़ै बच्चासँ फेर कहलक, 'तोँ डेरो नहि, कोनो चिन्ताक बात नहि।'

किछु दिन एहिना बित गेल, घनश्यामक भाइ सेहो आम तोड़ऽ नहि आएल। चिड़ैके बच्चा आओर बड़का भऽ गेल। ओकर पाँखि सेहो किछु मजगुत भऽ गेल।

फेर एक दिन चिड़ै बच्चाक लेल भोजन लाबऽ गेल तऽ बच्चा सभ घनश्यामक कनियाँक आवाज सुनलक। हुनका स्मरण करओलाक बाद घनश्याम बजला, 'ठीक छैक, काल्हि हमर दोकान बन्द रहत हम स्वयं भोरे-भोरे आम तोड़ि देब तहन अहाँ अँचार बना लेब।'

जखन चिड़ै घूरिकऽ आएल, तऽ बच्चा सभ घनश्याम आ हुनकर कनियाँ बीच भेल बातचीत ओकरा सुनओलक। एहिपर चिड़ै बच्चासँ कहलक, 'आब तऽ ठीके किछु सोचऽ पड़त। एखनधरि घनश्याम दोसर लोकक भरोसे छलैथि मुदा आब स्वयं अपने काज करबाक बात कऽ रहल छथि तऽ भोरे ओ आम तोरताह आब हमरा ई स्थान शिघ्रहि छोड़ि देबाक चाही। नव स्थानपर अपन खोंता बनेएबाक चाही।'

बच्चा सेहो बड़का भऽ गेल छल। ओ उड़ऽ सेहो लागल छल। चिड़ै आ ओकर बच्चा एकटा नव स्थानक खोजीमे उड़ि गेल।



शक्तिशाली मनुष्य

एकटा छल बिलाड़ि। ओ गाममे रहैत छल। ओ लोकक घरमे घुमैत रहैत छल। जे भेट जाइत छल खा लैत छल। ककरो घरमे दुध पीब लैत छल तऽ ककरो घरमे माछ। घरबला सभ पिटए अबैत छल तऽ तीव्र गतिमे कूदि कऽ भागि जाइत छल। फेर घूमिफिरकऽ आबि जाए ओछाएनक नीचा वा केवारक दोगमेसँ बाजए, 'म्याँउ!' कतबो चोरा नुकाकऽ किए नहि आबए एहन कोनो दिन नहि होइत छल जाहि दिन ओकरा मारि नहि लगैत छल।

अहिना एक दिन मारि खेलाक बाद बहुत दुःखी छल। सोचलक, 'एहि गाममे आब नहि रहब, हम आब जंगल भागि जाएब ओतऽ बहुत जीव सभ अछि हुनकें सभ संग रहि जाएब तखन एहन मारि तऽ नहि लागत।'

एना सोचिकऽ बिलाड़ि एक दिन जंगल दिस विदा भऽ गेल। ओ जंगलक बात तऽ सुनने छल मुदा कहियो देखने नहि छल।

'आब कतऽ जाउ ? हाथी, बाघ, भालु, सिंह आदी कतेको बड़का प्राणी अछि। ओ एकटा छोटका जीव अछि। हाथी सन विशाल जानवरक आगामे चलि जाइ तऽ ओतऽ पएरके निचामे पिच देत, ' एना सोचिए रहल छल कि देखलक एकटा बाघ आबि रहल। बाघ हाउ-हाउ कऽ आबि रहल छल। ओकरा देखिकऽ जंगलके दोसर जानवर एमहर ओमहर भागऽ लागल छल। बाघकें चेहरा देखिकऽ बिलाड़िकें डर भऽ गेल ओ अपन जान बचाकऽ गाछपर चढ़ि गेल।

बाघ आबिकऽ ओहि गाछक नीचा रुकि गेल । उपर दिशि मुँह घुमएलक, ओ पहिने कहियो बिलाड़ि नहि देखने छल आ देखलक पुरापुर ओकरे जेहन मुँह मुदा देखऽमे बहुत छोट एकटा जानवर । ओ पुछलक, 'के छैं तो गाछपर किए नुका रहलैं ? नीचा चलि आ ।'

डरे बिलाड़ि काँपऽ लागल । ओ मात्र बाजल, ' म्याँउ-म्याँउ ! '

बाघ नीचा रहिकऽ माटि खोधैत गरजए लागल, ' हाउ-हाउ ।'

फेर बाजल ,' तोरा कहैत छिऔक , नीचा चलि आ तो बात किए नहि मानैत छैं ?'

बिलाड़ि डेरा गेल ओ काँपैत कानए लागल, ' म्याँउ-म्याँउ ।'

एकटा छोटका जीवकेँ देखि बाघकेँ दया चलि आएल कनि नरम भऽ कऽ बाजल,' तों तऽ हमर पोता जेकाँ छैं, गाछपर नुकाइ किए छैं ?

नीचा चलि आ हम तोरा कनि बढ़ियाँ जेकाँ देखऽ चाहै छियौ ।'

कनि साहसकऽ बिलाड़ि बाजल,' बाबा अहाँकेँ देखिकऽ हमरा डर लगैत अछि ।'

बाघ बाजल,' तोरा बूझल छौक ? हम छी जंगलके राजा हमरासँ सभ डेराइत अछि मुदा हम वचन दैत छिऔक तोरा किछु नहि करबौक नीचा चलि आ, नहि तऽ समस्यामे पड़ि जएबैं ।'

बिलाड़ि डरे नीच उतरि गेल आ बाजल, ' बाबा प्रणाम ।'

बाघ किछु देर बिलाडिकेँ नांगरिसँ लऽ मोछधरि अवलोकन कएलक आ फेर पुछलक,' तों कतऽ छलैं कतऽसँ एतऽ चलि अएलैं ?'

बिलाड़ि तखन अपन पीड़ा भरल खिस्सा सुनओलक, ' हम गाममे छलहुँ लोक हमरा एतेक पिटलक जे ओकरासँ बचबाक लेल जंगलमे चलि अएलहुँ ।'

बाघ गरजल आ बाजल,' हमर पोताकेँ पिटऽबला के अछि ? ओ लोक देखऽमे केहन अछि, ओकरामे की एतेक ताकत छै जे तों डेराकऽ जंगलमे चलि अएलैं ।'

बाघ तऽ मनुष्यकेँ देखनहे नहि छल ।

बिलाड़ि बाजल,' बाबा मनुष्यकेँ बात नहि करु, बहुत शक्तिशाली अछि ।'

बाघ अपन मोछकेँ फुलाकऽ बाजल,' की हमरोसँ शक्तिशाली अछि ?'

बिलाड़ि कहलक, ' हँ बाबा अहूँसँ बेसी शक्तिशाली मनुष्य होइत अछि ।

बाघ कहलक,' अच्छा तऽ चल ओकरा लग ओकरामे देखबैक कतेक तागत छै ।' बिलाड़ि बाघ दिशि तकलक आ बाजल,' ओ तऽ गामे रहैत अछि एतऽसँ बहुत दूर । हम एतऽ पैदल अएलहुँ अछि थाकि गेल छी । ओतेक दूर आब चलि नहि पाएब । दू दिन रुकि जाउ । पएरमेका दर्द हँटऽ दिऔक तखन चलब । '

बाघ बाजल, ' हम दू दिनधरि प्रतीक्षा नहि कऽ सकैत छी एखने चल हम ओकरा संग लड़य चाहैत छी, तोरा पाएरमे दर्द छौक तऽ आ हमरा पीठपर बैसि रह, हम तोरा लऽ चलबौ । '

बिलाड़ि कूदिकऽ बाघक पीठपर बैसि रहल, बाघ झुमैत चलऽ लागल ।

दुनू जंगल पार कएलक । जंगलके कातमे एकटा कुरहरिया गाछ पाङ्गि रहल छल दूरसँ ठक-ठककेँ आबाज आबि रहल छल । बिलाड़ि ओकरा देखलक आ बाघसँ कहलक, 'बाबा कनि रुकू आगा नहि बढ़ू , एक गोटे लकड़ी काटि रहल अछि ।'

बाघ ओहि मनुष्यके देखलक आ जोरसँ हँसऽ लागल । बाजल, 'हेरौ पोता एहने मनुष्यसँ डराकऽ तों गाम छोड़ने छलैं ? ई तऽ हमर भोरका जलपानोमे कम पड़ि जाएत ।'

बिलाड़ि बाजल,' बाबा एना नहि कहियो एहिमे बहुत तागत छैक ।' बाघ बिलाड़ि दिशि आँखि तरैड़िकऽ बाजल, ' हम तऽ ओहन लोक सन ४ गोटेकेँ पीठपर बैसाकऽ लऽ जाएब ।'

बिलाड़ि कहलक,' ओकरा शरीरमे जतेक तागत अछि ओहिसँ बेसी ओकर दिमागमे । ई बात बाघकेँ बुझऽमे नहि आएल, लगैत अछि तों हमरा एमहर ओमहरके बात सुनाकऽ भ्रममे पारए चाहैत छैं ।'

बिलाड़ि कहलक,' बाबा ओकर दिमाग बहुत तेज छैक तँए ओ सभसँ शक्तिमान अछि । ओ सभकेँ अपना वसमे कब्जा कएने अछि ।'

बाघ बाजल,' ठीक छै ओकरा लग चल कनी ओकर बलके परीक्षा लेल जाए ।'

बाघ आ बिलाड़ि दुनू लकड़ी काटऽबला दिशि बढ़ल । कुरहरिया देखलक एकटा बाघ अपना दिशि आबि रहल अछि ।

ओकरा पीठपर एकटा विलाड़ि बैसल अछि । ओकरा बहुत हँसी आएल । ओ सोचलक, ई केहन बाघ अछि ? ओ दुनू हाथमे कुरहरि उठा कऽ ठाढ़ भऽ गेल ।

बाघ कुरहरिया लग आबिकऽ बाजल, ' तोरा शरीरमे बहुत तागत छौक आ हमरासँ पटका लड़ ।'

कुरहरिया बाजल,' किछु देर पहिने तोरे जेहन एकटा बाघ आबिकऽ कुश्ती लड़ने छल । ओकरा पटैकि देलियै आ ओ डराकऽ भागि गेल ।

तँए जारैन चीरएमे अबेर भऽ गेल तो आ सहयोग कर । जारैन चीरब समाप्त भऽ जाएत तखन कुश्ती लड़ब ।'

बाघ बाजल,' जल्दी काठ चिरबाक काज समाप्त कर हमरा कि करवाक अछि कह ।'

कुरहरिया एकटा बड़का ढेंगपर कुरहैरि मारऽ लागल दू-चारि बेर मारलाक बाद ओहिमे छेद भऽ गेल ।

कुरहरिया बाघसँ कहलक,' एहि छेदमे हात लगाकऽ खिच । जोरसँ खिचलापर लकड़ी चिरा जाएत । काज समाप्त भऽ जाएत , फेर हम लड़ब ।'

बाघ ओहिना कएलक कुरहरिया तुरन्त ढेंगमेसँ कुरहैरि निकालि लेलक तखन बाघक दुनू हाथ ओहि दरारमे फँसि गेल, आब ओ जाए तऽ कतऽ ? जोड़सँ चिचिया लागल,' पोता बचाले हम तऽ मरि गेलियौ ।'

बिलाड़ि बाजल, 'बाबा हम मना कएने छलहुँ मनुष्य जातिसँ दूरे रहूँ ओकर बुद्धिकेँ किओ चुनौती नहि दऽ सकैत अछि आब फल भेटल ने ।'

बाघकेँ प्राण निकलऽके स्थितिमे छल ओ कुरहरियाकेँ प्रार्थना कएलक भाइ छोरा दे हमरासँ तो बहुत शक्तिशाली छैं ।' कुरहरिया फेर ढेंगपर कुरहैरिकेँ चोट लगौलक तखन मात्रे बाघ अपन दुनू हाथ निकालैत जंगल दिशि भागल । बिलाड़ि दिशि तकबो नहि कएलक ।

कुरहरिया देखलक, एकटा सुन्दर बिलाड़ि ठाढ़ अछि ओकरा उठाकऽ प्रेमसँ पीठ थपथपओलक आ बाजल, ' चल हमरा संग, हमरे घरमे रहिहें घरमे मुसकेँ भगबिहें हम तोरा दुध भात, माछ माउस खुएबौ तोरा लेल ई जंगल सुरक्षित नहि छौक ।'

बिलाड़ि खुशीसँ बाजल,' म्याँउ !'

कुरहरिया लकड़ीक बोझ माथपर रखलक हाथमे कुरहैरि रखलक आ फेर बिलाड़िकेँ कनहापर बैसओलक । दुनू घर दिशि विदा भऽ गेल ।



सामान बेचबाक कला

नथुनी दासक अपनामे एकटा अलगे व्यक्तित्व छलाह । हरेक समय अपने बराइ करैत रहैत छलाह । आगा बलाकेँ बात सूनऽके फुर्सते हुनका लग नहि रहैत छलन्हि । राइसँ लऽ इलाइचीक पातधरिक मशालाकेँ लेल हुनका गजबकेँ खिस्सा तैयार रहैत छलन्हि । यदि हुनकर खिस्सा एक बेर शुरु भेल तऽ पुरा कएने बिना ओ दम नहि लैत छलैथि ।

एक बेर एक गोटे नथुनी दास लग लाल रंग किनऽ आएल । 'नथुनी दासजी रंग बढ़ियाँ होएबाक चाही बेटाक विवाह अछि ? धोती रंगबाक अछि एना नहि हुअए जे धोइते रंग धोखरि जाए ? '

ग्राहकके बात सूनिकऽ नथुनी दास एना मुँह बनओलैन्हि, जेना किओ जवरदस्ती हुनका मुँहमे चिरैता ठूसि देने हो । हुनक बिगरल रुप देखिकऽ ग्राहक बाजल, 'लगैत अछि, हमरा बातसँ अपने तमसा गेलहुँ अछि ?'

'खुशिओ कोना होइतहुँ ! अहाँ बाते किछु एहन कहलहुँ ? चन्द्रमाक इजोरियामे मिलावट भऽ सकैत अछि मुदा आइधरि किओ एहन नहि सुनने हएत नथुनी दासक दोकानक मालमे मिलाबट भेल हुए ।' रहल बात लाल रंगक, तऽ सुनू, 'हमरा लग एहन लाल रंग अछि जे आजीवन नहि छुटत । विश्वास नहि हुअए तऽ कोनो सुगाक लोल देखि लिअ ।'

नथुनी दासक बात सूनिकऽ ग्राहक सेहो असमञ्जसमे पड़ि गेल, लाल रंगक मिलावट नहि हएबासँ सुगाक लोलक की सम्बन्ध अछि ?

हिम्मतकऽ पुछिए लेलैन्हि , ' नथुनी दासजी ई सुगाक लोल बला बात नहि बूझि सकलहुँ ।'

'अहाँ कहियो सुगाक लोलके ध्यानसँ देखने छियैक ? '

'जी हँ कतेको बेर ।'

आब नथुनी दास दोसर प्रश्न कएलैन्हि,' ओकर रंग केहन होइत छैक ?'

'जी लाल !'

'अहाँ कहियो देखने छी वा सुनने छी कोनो सुगाक लोलक रंग उड़ि गेल होइक वा कच्चा भऽ गेल होइक । '

'जी नहि !'

नथुनी दास गौरवसँ अपन माथ उँच करैत कहलैन्हि, 'तऽ फेर कोनो चिन्ता नहि करैत रंग लऽ जाउ हमरा लग उएह लाल रंग अछि जे सुगाक लोल रंगल गेल अछि ।'

एतेक सुनब छल की ग्राहकके मुँह आश्चर्यसँ खुजल से खूजले रहि गेल ।

'लगैत अछि, हमरा बातपर विश्वास नहि भेल ?' नथुनी दास तमसाकऽ बजला ।

नथुनी दासक प्रश्न सूनि ग्राहक किछु बजैत एहिसँ पहिने ओ खिस्से शुरुकऽ देलैन्हि ।

' तऽ लिअ, हम अहाँकेँ सभ बात कहि दैत छी बात बहुत पुरान अछि हमर पूर्वज सेहो दोकानदारिए करैत छल । दोकानो इएह छल । ओहि समय हरेक सुगा पुराके पुरा हरियर होइत छल, ओकर लोलो हरियरे होइत छल । '

'की ई सत्य अछि पहिलेके जमानामे सुगाक लोल हरियर होइत छल ?'

ग्राहककेँ पुछलाक बाद नथुनी दास बिगैरिकऽ बजला, 'आओर नहि तऽ की, हम झूठ बाजि रहल छी ? हँ तऽ हम कहि रहल छलहुँ ओहि दिनमे हरेक सुगाक लोल हरियर होइत छल । पुरे शरीरक रंग एक समान भेलाक कारणे ओहिमे ओतेक अकर्षण नहि होइत छल ।

'एक दिन हमर कोनो पूर्वज सोचलैन्हि यदि सुगाक लोल कोनो दोसर रंग होइक तऽ कतेक नीक होइत । हुनकर दिमागमे आएल हरियर शरीरक संग लाल लोल बहुत जमत ताहिसँ ओ निर्णय कएलैन्हि जे कहुना ने कहुना सुगाक लोलक रंग लाल कएल जाए ।'

'आखिर हुनका एक दिन युक्ति सुझिए गेल । एक दिन ओ बहुत हरियर मिरचाइ जमाकऽ ओहिमे लाल रंग भरि देलैन्हि फेर ओकरा भोरे-भोर एहि दोकानक छतपर राखि देलाह .....' फेर किछु सोचैत नथुनी दास कहलैन्हि, ' भेल ई जकर आशा छल हरियर मिरचाइक लोभमे झुण्डक झुण्ड सुगा छतपर आएल आ चोंच गराकऽ ओकरा बढ़ियाँ जेकाँ खाए लागल ओ बेचारा सभकेँ ई नहि बूझल छल जे मिरचाइमे लाल रंग भरल अछि ।

जे-जे सुगा मिरचाइ खाइ, ओकर लोले लाल होइत जाइ । एहि तरहे देखिते-देखिते सभ सुगाक लोल लाल भऽ गेल । आओर तऽ आओर ओकर बच्चो भेल तऽ लोलक रंग लाले भऽ गेल ।'

नथुनी दासक खिस्सा सूनिकऽ ग्राहक सेहो मस्तीमे माथ हिलाकऽ बाजल,' तखन तऽ ई रंग बहुत पक्का अछि ।'

'ओहि लाल रंगमेसँ जे बँचल अछि से देलहुँ अछि आब अही कहूँ जे ई रंग कच्चा भऽ सकैत अछि ?'

ग्राहक बेचारा किछु सोचि पबितैथि एहिसँ पहिने नथुनी दास रंगक पुरिया हुनका हाथमे दऽ देलन्हि । ग्राहक चुपचाप अपन पैसा दऽ अपना घर दिशि बढ़ि गेल । बाटभरि ओ सुगाक लाल लोलक विषयमे सोचैत रहल ।



रोशनीक जीत

धनुषाक बभनगामासँ भोइल जाएवला बाटमे एकटा बहुत पुरान पाखैरिके गाछ छल। ओहि गाछपर रोशनी नामक एकटा चिड़ै रहैत छल। ओ सिधासाधा मुदा बुद्धिमान छल। कहियो कोनो शिकारी जखन खढ़ियाके पाछू पड़ैत छल तऽ रोशनी चीं-चींकऽ हल्ला कऽ दैत छल आ खढ़ियाकेँ जानकारी भऽ जाइत छल आ खढ़िया सुरक्षित स्थानपर भागि जाइत छल। कहियो रोशनी जखन जाल बिछबैत देखैत छल तऽ नव चिड़ैकेँ चेतावनी दैत छल जे जालमे राखल अनाज दिशि ताकहो लेल नहि। दानाक लोभमे तों सभ फैसि सकैत छँ एहि तरहें अपना दिशिसँ चिड़ै सभकेँ मद्दति करैत रहैत छल।

ओहि पाखैरि गाछपर एकटा चिल्होरि रहैत छल ओ आकाशमे तेजीसँ उड़ैत छल, ओकरा अपनापर बहुत अभिमान छल। ओ बराबर रोशनी चिड़ैयासँ कहैत छल, हम सभ चिड़ैमे सभसँ तेज छी। हम चिड़ैके राजा छी, हमरा किओ उड़एमे नहि हरा सकैत अछि हम महान छी।'

बेचारी रोशनी चिड़ैया ओकर बात सूनिकऽ सोचैत छल, ' किओ एकरा हरबैत किओ एकर घमण्ड तोड़ैत।' तखने रोशनीक मोनमे एकटा बात आएल आ बिहुँसिए लागल। आब रोशनीकेँ अवसरक प्रतीक्षा छल।

एक दिन रोशनी पाखैरिक डाढ़िपर बैसल छल। तखने कतहुँसँ घुमैत

फिरैत चिल्होरि ओतऽ पहुँचल आ रोशनीके आगा अपन गप्प हाँकऽ लागल तखने रोशनी ओकरासँ कहलक, ' छोरु बात बनाएब, अहाँ की उडान उरब अहाँसँ बेसी तऽ हम उड़िकऽ देखा सकैत छी।

चिल्होरि अविश्वसनियतासँ रोशनी दिशि देखलक। फेर बाजल,' की बजलहुँ अहाँ कनी जोड़सँ बाजू हमरा विश्वास नहि भऽ रहल अछि।'

रोशनी जखन अपन शब्द दोहरओलक तऽ चिल्होरिके हँसी आबि गेल।

रोशनी बाजल,' चिल्होरि भाइ अहाँकेँ डर लगैत अछि ? '

चिल्होरि बाजल,' हम किए डराएब अहाँ एकटा छोटका चिड़ैया आ हम चिड़ैके राजा ! हमरा अहाँकेँ प्रतिस्पर्धे की ?'

रोशनी चुनौती देलक, 'जखन डर नहि होइत अछि तऽ प्रतिस्पर्धा किए नहि करैत छी ?'

चिल्होरि बाजल,' ठीक छैक प्रतिस्पर्धा कएल जाए। '

प्रतिस्पर्धा शुरु भेल। चिल्होरि पाँखि फैलओलक आ संगमे रोशनी सेहो उड़ल फेर चिल्होरि तुफान गतीमे उड़ब शुरु कएलक। एहि बिच चिल्होरिके आँखि रोशनीकेँ खोजि रहल छल। रोशनी कतऽ गेल ? जखन चिल्होरि बहुत उच्च पहुँचल तऽ ओ बाजल,' रोशनी अहाँ कतहुँ देखाइ नहि दऽ रहल छी ? '

रोशनी बाजल, 'हम अहाँकेँ कोना देखाइ देब, कारण हम अहाँ सँ उपर बैसल छी चिल्होरि भाइ।'

बादमे रोशनी चिल्होरिकेँ कहलक,' हम तऽ अहाँक पीठ उपर तखने चैढ़ि गेलहुँ जखन अहाँ पाँखि पसारिकऽ उड़बाक तैयारी कऽ रहल छलहुँ।'

ओकर बाद चिल्होरि अपन गप्प हाँकब छोड़ि देलक आ दुनू बढ़ियाँ मित्र बनिकऽ रहऽ लागल।



हरिणक चलाकी

धनुषाक ढल्केवर लग रहल चारनाथ खोला जंगलमे एकटा हरिण रहैत छल । ओकरा जामुनक फल बहुत नीक लगैत छलैक । लगेके गाममे एकटा शिकारी रहैत छल । ओ ई बात बुझैत छल । एक दिन शिकारी शिकार खेलबाक लेल भोरे उठि जंगल दिशि बिदा भऽ गेल । ओ ओहि गाछपर मचान बनओलक जतऽ हरिण जामुन खाए लेल पहुँचैत छल ।

हरिण प्रत्येक दिन जेकाँ घुमैत-फिरैत जामुनके गाछ दिशि आबि रहल छल । जामुनके फलक गाछ देखिते ओकर मुँहमे पानि चलि आएल । तखने अचानक ओकर ध्यान जमीनपर बनल मनुष्यके पएरक निशानपर पड़ल, 'अवश्य लगपासमे कोनो शिकारी अछि, जे हमरा शिकार करबाक लेल नुकाएल अछि,' हरिण सोचलक ।

एमहर, शिकारी हरिणके रुकैत देखि सोचमे पड़ि गेल, फेर ओकर मस्तिष्कमे बिचार आएल आ ओ गाछ परसँ जामुन तोरिकऽ बाटमे फेकब शुरु कऽ देलक । ओ सोचलक जे जामुनक लोभमे जखन हरिण आगा बढ़त तऽ ओ पकैड़ि लेत मुदा हरिण शिकारीके चलाकी बूझि गेल । ओकरा गाछके बगलमे बनल मचान देखाइ देलक । फेर ओकरा एकटा युक्ति सूझल । ओ सोचलक कि किए नहि गाछसँ बात कएल जाए, फेर देखल जाए जे की होइत अछि ?

'गाछ भाइ, अहाँ प्रत्येक दिन फल जमीनपर खसबैत छी, आइ हमरा दिशि किए फेक रहल छी ?' हरिण बाजल ।

मुदा गाछ दिशिसँ कोनो प्रतिक्रिया नहि आएल । 'भाइ गाछ जखन अहाँ अपन रीति छोड़ि सकैत छी तऽ हमहुँ अपन रीति छोड़ैत छी । हम कोनो दोसर गाछक फल खा लेब ।'

एमहर, शिकारी सोचलक अवसर हाथसँ निकलल जा रहल अछि । ओ हरिण दिशि भाला फेकलक, मुदा हरिण ओकर पहुँचसँ दूर निकलि गेल छल । ओ चिचियाइत ओतयसँ भागि गेल, 'शिकारी, हम तोहर चालिके बूझि गेल छियौक फेर कहियो भाग अजमैहें ।



दाई

विजय हरेक बेर छुट्टीमे अपन मम्मी पापाक संग दाई बाबासँ भेटबाक लेल गाम अवश्य अबैत छल। ओकर बाबा दाई मिथिलाक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल सलहेश स्थानक लगेके सिरहा जिल्लाक एकटा गाममे रहैत छल। विजय छुट्टीके गाम आबएके बहुत उत्सुकतासँ प्रतीक्षा करैत रहैत छल। कतऽ काठमाण्डूक भिड़भाड़ आ होहल्ला, दैनिक व्यस्तता आ कतऽ सिरहा जिल्लाक शान्त गाम।

मम्मी पापा तऽ किछु दिन रुकिकऽ काठमाण्डू घूरि जाइत छला, किए कि दुनू गोटेकेँ अफिससँ कम छुट्टी भेटैत छल मुदा विजय अपन पुरे छुट्टी ओतहि काटैत छल आ बाबा ओकर होमवर्क पुरा करऽमे सेहो मद्दति करैत छला। दाई ओकरा रंगविरंगक वस्तु सभ बनाकऽ खुअबैत छल। बाबाके आँगुर पकड़िकऽ खेतक आड़ि सभपर कूदि-कूदिकऽ चलैत छल। राहरि बला आड़िपर घुमऽमे बाब संगे आसपास वा चोरानुकी सेहो भऽ जाइत छल।

रातिमे दाई लग सुतैत छल, तऽ ओ ओकरा सिरहाक जीवन, ओकर पापाके बच्चाक जीवन आ अपन बच्चाके कतेको कथा कहानी सुनवैत छली। भोरमे जल्दी उठऽ आ रातिमे जल्दी सुतऽ बला बाबा बेर-बेर ओकरा सुतबाक लेल कहैत छला, तऽ दुनू सिरकमे मुँह नुकाकऽ कनफुसकी बात कऽ खुब हँसैत छल।

ठीके ६० सालक बुढ़ दाइ विजयके संग बिलकुल छोट बदमास बच्चा

बनि कतेक हँसैत छली। समयके जेना पाँखि लागि जाइत छल।

मुदा १० सालसँ चलैत आबि रहल ई सुखद क्रम ओहि समय टूटल, जखन जाढ़मे अचानक हृदयघात भेलाक कारण बाबाक निधन भेल, विजयकेँ पापा एखन एहि दुःखसँ उबरबाक चेष्टामे छला कि दाईके पक्षाघात भऽ गेल। गाममे इलाज आ देख भालक बढ़ियाँ व्यवस्था नहि भेलाक कारण पापा दाइके अपने लग काठमाण्डू आनि लेला।

बढ़ियाँ इलाज आ दिन रातिक सेवासँ दाईके किछु सुधार तऽ भेल मुदा ओ चुपचाप रहऽ लगली। हरेक समय बाबाके स्मरण करैत कानऽ लगैत छली। चुपचाप वालकोनीमे बैसि काठमाण्डूक बड़का-बड़का घर सभ निहारऽ लगैत छली। मम्मी वालकोनीमे राखल गमलामे पानि दैत छली तऽ दाइ अपन गामक खेत, दलान स्मरण करैत बहुत चिन्तित भऽ जाइत छली।

पापा बहुत सम्झाबैथि,'माँ, तो चिन्ता नहि कर। हम खेतमे बटिदार लगा देबै। घर आ आमक गााछीक देख रेख करबाक लेल सेहो एक गोटेके राखि देने छियैक।' मुदा दाईके मोन शान्त नहि होइत छल।

विजय स्कूल चलि जाइत छल, मम्मी पापा अफिस। मम्मी अफिससँ जखन फोनकऽ काम करऽ बालीसँ दाईके हालचाल पुछैत छली तऽ सूनिकऽ निराश भऽ जाइत छली।

'असगरे बैसिकऽ कनलासँ कतहुँ जीवन चलैत छैक ?' मम्मी बहुत प्रयास कएली मुदा गाममे बहुत समान्य जीवन बितबऽ बाली दाई टिभी सिरियलमे कनिको रुची नहि लैत छली।

पक्षाघातक कारण दहिना हाथमे एखनो कनेक कम्पन छल।

तँए मम्मी हुनकासँ घरक कोनो काजमे सहयोग नहि लैत छली। घरके काम काजमे कुशल दाई गाममे क्षण भरि खाली नहि बैसैत छली, आब हुनका बहुत आश्चर्य लागि रहल छल। सभ हुनकर हालतसँ दुःखित छल, मुदा ककरो कोनो बाट नहि सूझि रहल छल।

एमहर विजय बीतल एक महिनासँ आओर व्यस्त भऽ गेल छल। स्कूलमे वार्षिकोत्सवक तैयारी चलि रहल छल। एहि बेर ओकर स्कूलक परीक्षाफल बढ़ियाँ छल सभ अध्यापक आ विद्यार्थी ई आयोजनके लऽ कऽ बहुत उत्साहित छल। बहुतरास कार्यक्रमक बीच प्रिन्सिपल एकटा नव सुझाव देलैन्हि।

हुनकर कहब छल एहि बेर स्कूलक प्रवेशद्वार विशेष रुपसँ सजाओल जाए। संगहि मुख्य द्वारक बीच एकटा बहुत सुन्दर अरिपण देल जाए। सभके ई सुझाव बढ़ियाँ लागल। मुदा समस्या तखन आएल जखन ककरो बनाओल अरिपण प्रिन्सिपलके पसिन नहि अएलैन्हि। तखन प्रिन्सिपल घोषणा कएलैन्हि जे सर्वश्रेष्ठ अरिपण बनाब़ बलाके पुरस्कार देल जाएत।

विजय घर आएल, प्रत्येक दिन जेकाँ दाइके कोरामे माथ राखि ओ स्कूलक सभ बात सुनओलक। हरेक दिन जेकाँ ओकर पुरे बात चुपचाप सुनैत अचानक दाई अरिपण बला बातपर चौंकि उठली। अपन केसपर दाइके आँगुर रुकि गेलाक बाद विजय हुनका दिशि तकलक। दाईके उदास आँखिमे गजबके चमक आबि गेल छल।

अरिपण बनाएब बहुत असान अछि। हम तऽ हरेक पाबैनिमे गाममे अरिपण बनबैत छलहुँ। विजय, तौं सिखबे, हमरासँ अरिपण ?' उत्साहित भऽकऽ दाई बजली।

विजय दाई दिशि गम्भिरता पूर्वक तकैत बाजल,'दाइ तोरा अरिपन बनाबऽ अबैत छौ ? एखने सिखो। कह तऽ कोन-कोन रंगसँ कोना बनाओल जाइत छैक ?' विजयके बिच्चेमे रोकैत दाई बजली, 'रंग नहि हम तोरा बहुतरास अलग-अलग फूलके रंगोली धरि बनाबऽ सिखा देबौ। बहुत फूल। गुलाव, गेना, जुही, मोगरा, सूर्यमुखी आ ओहिपर जरैत कतेको माटिक दीप। मुदा कि ई सभ फूल स्कूलमे भेटतौ तोरा ?'

'हँ दाई, अहाँ चिन्ता नहि करु। हम मम्मी पापाके फोन करैत छी। मम्मीके साथीके बड़का फूलक दोकान अछि ओतऽ सभ फूल भेट जाएत। दीप तऽ दीयावातीमेका बँचल अछि,' प्रशन्नतासँ भरल विजय फोन दिशि बढ़ल।

साँझ खन मम्मी पापा एकटा बड़का झोरामे बहुत रास फूल लऽकऽ आएल। वालकोनीमे बीतल ६ महिनासँ राखल कुर्सी दाई पापासँ कहिकऽ हँटबओली आ धीरे-धीरे निच्चामे बैसि रहली। फूलक एकटा ढेर दाई एक दिशि लगओली। किछु देर सोंचलाक बाद जखन एक-एकटा फूलक पत्तीके रचि-रचिकऽ निक जेकाँ सजओली तऽ सभ देखिकऽ आश्चर्यमे छल। कतेको प्रकारक फूलके एहन बढ़ियाँ मेल ! दाई अपन काजमे डूबल रहली। मम्मी

पापा दाईके एहन बढ़ियाँ जेकाँ काज करैत देखलैन्हि, तऽ प्रशन्नतासँ हुनकर आँखिमे नोर चलि आएल।

वार्षिकोत्सवमे एखनो एक हप्ता बाँकी छल। ई एक हप्तामे दाई लग बैसि विजय अरिपणक सँग अद्‌भुत फूलबला रंगोली बनबऽ सिख लेलक। एकर परिणाम ओकरा प्रथम पुरस्कारक रुपमे भेटल। ओ खुशीसँ नाचि उठल। लोकके आँखि ओकर अरिपण आ रंगोलीसँ हँटिते नहि छल। सभ ओहि रंगोलीके मोवाइल क्यामरामे उतारि रहल छल।

विजय प्रिन्सिपलके अपन दाई आ हुनकर आश्चर्यजनक कलाके विषयमे बतओलक, तऽ ओहो बहुत प्रभावित भेला। सरस्वतीके एकटा फोटो ओ धन्यवादक रुपमे दाईके पठओलैन्हि तऽ दाईके प्रशन्नताक ठेकान नहि छल।

मम्मीके कतेको संगी दाईसँ रंगोली, अरिपण सिखबाक इच्छा व्यक्त कएलक। दाई एकरा सहर्ष स्वीकारकऽ लेलैन्हि। बेटी अहाँ सभ, 'खाली रंगोलीए किए, अँचार, मोरब्बा, अरिकोंच, अदौरी, कुम्हरौरी जे चाही सिख लीय।'

आब वालकोनीमे राखल कुर्सीके लगपासमे महिला सभ दाईके घेरने रहैत अछि। मम्मी पापा दाईके जीवनमे आएल ई सुखद परिवर्तनसँ बहुत प्रशन्न अछि। विजय सभसँ प्रशन्न छल। ओकरा फेरसँ ओहिना हँसैत बजैत, कथा कहानी कहऽ बली गुड़िया सन दाई भेट गेल अछि।



मित्रता बराबरीमे

एकटा सपेरा जंगलमे साँप पकरलक। ओ साँपके अपन बाँसक पौतीमे बन्दक९ लेलक। सपेरा शहर जाक९ साँपक खेल देखाब९ चाहैत छल। जंगलसँ शहरके दुरी बहुत छल ई सोचिक९ सपेरा एकटा मुसके सेहो पकरलक आ पौतीमे बन्दक९ देलक।

कारण साँपके भोजन भेट सकए।

मुसके पौतीमे आएल देखि साँप बहुत खुशी भेल। ओ अपन जीह लप-लपबैत मुँह खोलिक९ आगा बढ़ल, मुस डरसँ काँप९ लागल।

ओ हाथ जोड़िक९ साँपसँ निवेदन कएलक, 'मित्र, अहाँ हमरा नहि मारु, हम अहाँके सपेराके जेलसँ मुक्त कराब९ चाहैत छी।'

साँप हँस९ लागल। ओ बाजल, 'मुस, हमरामे एतेक ताकत अछि तैयो हम पौती नहि खोल९ सकै छी, तोँ त९ कमजोर जन्तु, तोँ कि हमरा मुक्त करा सकबेँ ? तोँ बात नहि बना, हमरा बहुत जोरसँ भूख लागल अछि, तोरा खा क९ हमरा सन्तुष्टि भेटत।'

'साँप भैया कनि सोचियौ अहाँके एतेक भूख लागल अछि आ हमरा सनके छोट जन्तुसँ अहाँक पेट कोना भरत ? एहिसँ अहाँके भूख आओर बढ़ि जाएत। एहिसँ बढियाँ हम अहाँके स्वतन्त्र क९ दी आ अहाँ जंगलमे जा क९ मन पसिनक भोजनक९ सकी। सपेराक जेलमे रहिक९, ओकर बीनक

इशारापर नाचिक९ अहाँके दम नहि फुलत ?'मुस सम्फओलक।

साँपके मुसक बात बढ़ियाँ लागल। ओ अपन दुष्ट स्वभावके हिसावसँ सोचलक, 'देखल जाए ई कोना हमरा मुक्त करबैत अछि। एक बेर मुक्त करबा देत त९ फेर एकरो खा लेब।'

ओ मुससँ कहलक, ' ठीक छैक हम तोरा नहि खएबौ, आब कह तोँ हमरा कोना स्वतन्त्र करबा सकैत छेँ ?'

'हम अहाँके माथपर बैसिक९ मन्त्र पढ़ब। जाधरि हम मन्त्र पढ़ब ताधरि अहाँ आँखि मूनिक९ राखब,' मुस बाजल।

साँप अपन फेचकेँ फैला लेलक। मुस कूदिक९ ओकर माथपर बैसि रहल। एहि प्रकारे पौतीके झपनाधरि पहुँच गेल। ओ तेजीसँ पौतीकेँ झपनाके कतर९ शुरु क९ देलक।

जल्दिए मुस झपनामे एकटा भूर बनाब९मे सफल भ९ गेल। जहिना निकल९के स्थान बनल, मुस तीव्र गतिसँ भूरसँ निकलि गेल आ जमीनपर कूदि गेल। माथसँ मुसके गायब देखि साँप आँखि खोललक। ओ मुसके नहि देखलक मुदा ओकरा उपरमे झपनाके भूर नजैरि आएल। अवसर बढ़ियाँ देखि ओ धीरे-धीरे बाहर निकैलि गेल। ओकरा स्वतन्त्र हएबाक जतेक खुशी छल, ओहिसँ बेसी चिन्ता ओकरा मुसके खोजब छल।

साँप चारु दिशि ओहि मुसके खोज९ लागल। ओकरा मुसपर बहुत तामस भ९ रहल छल। बहुत खोजलाक बाद सेहो मुस कतहुँ नजैरि नहि आबि रहल छल।

एहि बातके बीतला कतेको दिन भ९ गेल। साँप ओ घटनाके करीब-करीब बिसैरि गेल तखने ओकरा ओ मुस देखाइ देलक। साँप पाछूसँ खिहारलक, 'मुस भाइ तो ओहि दिन भागि किए गेल छलेँ ? हम तोरा धन्यवाद कह९ चाहैत छियौक। एत९ आ हमर मित्र हम तोरासँ बात कर९ चाहैत छियौक। '

साँप असलमे मुसके खाए चाहैत छल। मुस साँपक चलाकी बूझि गेल। ओ दौड़क९ अपन बिल्लुरमे घूसि गेल। साँप ओकर बिलक लगमे आएल। बाजल, 'मित्र बाहर आउ ने, मित्रसँ डर कथीके ?'

मुस बिल्लुरके भीतरसँ बाजल, 'केहन मित्र ? अहाँ हमर दुश्मन छी हम

जहिना बाहर आएब अहाँ हमरा खा लेब । ओ तऽ समयके आवश्यकता छल, हमरा जान बचाबऽके छल, तँए हम अहाँसँ क्षणिक मित्रता कएने रही। एहिसँ हमरा आ अहाँ दुनूके फाइदा भेल ।'

साँप चुपचाप सुनैत रहल । मुस आगा बाजल,'साँप भाइ मित्रता हरेक समय बराबर बलासँ मात्रे निमहैत अछि, हम अहाँक बराबरीमे नहि उतरैत छी तँए हम मित्र कहियो नहि भऽ सकैत छी ।' साँप अपना सन मुँह बनाकऽ चलि गेल । मुस तऽ चतुर चलाक अछि, से आब ओकरा बुझएमे भांगठ नहि छल ।



महाकञ्जुस

एकटा चुल्हाइ छला । जे महाकञ्जूस मक्खिचूस । अपनो बच्चापर जओं खर्च करैत छला तऽ अछताइते पछताएते । हुनकर कञ्जुसीक खिस्सा गली-गलीमे प्रचलित छल । लोक हुनका देखि खौंझबैत छल, 'सोनाके रोटी, चानीके दालि खएता हमर चुल्हाइ ।'

मुदा चुल्हाइके एहन कोनो सओख नहि छल जाहिसँ ओकर खर्च होइक । जहिया कोनो पावैनि अबैत छल, चुल्हाइ अपन कनियाँ आ बच्चाके लऽकऽ कोनो कुटमइतामे पहुँच जाइत छला । ओतहि ओ खाथि-पिवैथ, मौज उड़वैथ । एहि तरहे बहुत सस्तामे बिना खर्चे पानिके सभ किछु निपैटि जाइत छलन्हि ।

मुदा एहि साल हुनकर कनियाँ ई ठानि लेली जे एहि बेर ओ होरी अपने घरमे मनओती । कनियाँक निर्णयसँ चुल्हाइ संकटमे पड़ि गेला । पावैनि अछि, तऽ मलपुवा आ पुरीसभक खर्च हएबे करत । ओ कनियाँसँ कहला, 'कोनो एहन भोजन बनाउ जे बहुत सस्ता होइक । '

कनियाँके नजरिमे एहन कोनो भोजन नहि छल जे सस्तामे बनैत होइ । स्वयं बढ़ियाँ जेकाँ बिचार कऽ चुल्हाइ कहलैन्हि, 'एहि बेर होरीमे हलुवा आ परोठा बनाउ ।'

कनियाँ आ बेटी जमीनपर सूति रहल पड़ोसीके घरपर पुवा, माउँस,

जिलेबी, सेवइके खिर कि-कि बनत आ ओ हलुवा आ परोठा बनवैथ एना कोना चलत ? मुदा चुल्हाइ एहिसँ बेसी पैसा खर्च करबाक लेल तैयार नहि छला । कनियाँ कि करैथि, हुनका मानहे पड़ल । चुल्हाइ पुछलैन्हि, 'हलुवा बनाबऽमे कोन-कोन चीजके आवश्यकता परैत छैक ?'

कनियाँ बजली,'शुद्ध घी, सुजी, चिन्नी आ मसल्ला ।'

चुल्हाइके माथपर पानि पड़ि गेलन्हि । हुनका तऽ बूझल छल हलुवा मात्र आँटा आ गुँरसँ बनैत अछि। ओ विचार कएला ,'कि बिना सुजी आ मसल्लाके हलुवा नहि बनि सकत ? ई तऽ अपन इच्छापर निर्भर करैत अछि जे कि सभ राखल जाए कि सभ नहि ।'

एखन पावैनि आबऽमे किछु दिन बाँकी छल । चुल्हाइ अपन मोनक बात कनियाँके बता कऽ सोचबाक लेल कहलैन्हि । कनियाँकेँ भीतरसँ मन जड़ि गेलैन्हि, उपरसँ कहलैन्हि,'ठीक छैक, जे उचित बुझाए उएह कएल जाए । हलुवा तऽ बनाएल जाए ।'

दू दिन बीतल चुल्हाइ फेर सोचलैन्हि, 'कि बिना शुद्ध घीके हलुवा नहि बनाओल जा सकैत अछि ? इहो तऽ लोकके मोनेपर होइत अछि । मोन भेल तऽ शुद्ध घीमे बनाउ नहि तऽ सरिसो तेलमे ।'

कनियाँ चुल्हाइके गप्पसँ उबि गेल छली । ओ तमसा कऽ कहली,'जेना अहाँक ईच्छा, ओहिना बना देब ।'

आखिर पावैनि आबिए गेल मुदा चुल्हाइ हलुवाके लेल समानके व्यवस्था करऽसँ कतरा रहल छला । कनियाकेँ धैर्यक सीमा पार करय लागल । ओ चुल्हाइसँ कहलैन्हि,'आब तऽ गुँर आ आँटा लऽ आउ, आबो नहि आनब तऽ कहिया लाएव ? पावैनि बितऽमे १२ घण्टा मात्र बाँकी अछि ।'

'नहि से तऽ अनबे करब । सोचैत छी बिना गुँरके हलुवा बनि सकत की नहि ?' चुल्हाइ बजला ।

'भगवती-भगवती ! हमरा घरबलाके लाज दिअ कनी,'कनियाँ माथ पकैरि लेलैथि ।

'ई कोन जन्मक बदला लऽ रहल छी भगवन । अगल-बगलसँ मलपुवा आ माउसके सुगन्ध आबि रहल अछि। आ एकटा ई छथि जे हलुवा बनएबाक नव-नव तरिका सोचि रहल छथि ।'

कोइली घूरि आउ

तखने पड़ोसक महिला देबालसँ झाँकि कऽ पुछली, 'कनियाँ एहि बेरके होरीमे की-की बनेलहुँ अछि ? अहाँके घरसँ बहुत गमक आबि रहल अछि । '

कनियाँ एहि बातसँ आओर जरि गेली आ बजली,'हँ हँ बनेलहुँ अछि । आउ, अहूँके निमन्त्रण दैत छी सभके लऽ आउ हम हावाके मिठाइ आ हावाके परोठा बनेलहुँ अछि । सभकेओ संगे खाएब । गलती हमरे अछि जे हम अपना घरमे पावैनि करबाक सोचलहुँ । हम तऽ चललहुँ नैहरि ।'

चुल्हाइ सम्भवतः इएह चाहैत छला । कनियाँ अपन बेटीके लऽकऽ तखने नैहरि चलि गेली ।



खजाना

फुलवारीमे सेउके एकटा पुरान गाछ छल। गर्मीके मौसममे गाछके डाढ़ि सभ सेउसँ भरि जाइत अछि। गर्मी आ वर्षासँ सेउ स्वद्‌गर सेहो भऽ जाइत अछि।

आब सेउके समाप्त होबऽके समय आबि गेल अछि। सेउके पुरान गाछपर मात्र तीनटा सेउ बँचल छल। गाछ प्रतीक्षा कऽ रहल अछि, जे किओ ओकर फलके तोरिकऽ खाए लेल आबए।

जखन कखनो हावा चलैत अछि तऽ ओ गबैत अछि, 'हमरा लग तीनटा सेउ अछि जे एकरा लेत ओकरा खजाना भेटतैक।' एक दिन रुपेश फुलवारीके बगल दऽकऽ स्कूल जा रहल छल। ओकरा ओ सेउके गाछ देखाइ देलक ओ सेउ तोरऽ लए फुलवारीमे प्रवेश कऽ गाछ दिशि आगा बढ़ल तखने हाबा चलल आ गाछ अपन गीत गाबऽ लागल।

गाछसँ एकटा सेउ खसल रुपेश तुरन्त सेउके उठा लेलक। सेउ उठाकऽ खा लेलक। बीचक भाग ओ ओतहि फेककऽ चलि गेल।

उदास भऽकऽ सेउके गाछ गीत गएलक,'आब तऽ बँचल अछि हमरा लग दूटा सेउ, समाप्त भऽ गेल खजाना जे छल अहाँ लग।'

दोसर दिन सोनी सेहो ओहि बाटे जा रहल छल ओ गाछपर दूटा सुन्दर सेउ देखलक तखने हावा चलल आ गाछ गीत गेलक,'दूटा सेउ अछि हमरा

लग, दुनूमे अछि खजाना किछु विशेष।'

तखने गाछसँ एकटा सेउ खसल। सोनी लपकिकऽ ओकरा उठा लेलक।

'एतेक सुन्दर सेउ एकरा हम कोनो हालतमे नहि खाएब। हम घरमे लऽ जा कऽ सम्हारिकऽ राखब,' सोचिकऽ सोनी ओतऽसँ चलि गेल।

गाछ फेर उदास भऽ कऽ गाबऽ लागल,'समाप्तकऽ देलाएँ तौं ओ खजाना, बँचल अछि मात्र एकटा सेउ हमरा लग।'

सोनी घर पहुँचकऽ सेउके बहुत इन्तजाम कऽ एकटा डिब्बामे रखलक। किछु दिनक बाद ओ सेउ सड़ि गेल। एहि क्रममे एक दिन नेहा सेहो ओहि बाटे जा रहल छल। ओ गाछपर एकटा सेउ देखलक। गाछ फेर एक बेर गीत गेलक,'देखही हमरा गाछपर एकटा सेउ, ई एकटा सुन्दर खजाना अछि।'

नेहा आगा बढले छल कि ओ सेउ धब्बसँ निच्चा खसि पड़ल। नेहा ओकरा उठा लेलक। लग-पासमे एकटा नोखी बला बाँसक बत्ती देखाए देलकै। ओतऽ जा कऽ बत्तीसँ सेउके आधा कटलक आ ध्यानसँ ओहिमे रहल सभटा बिया निकालि लेलक। ताहिके बाद बियाके हाथमे लऽ कऽ फुलवारीके दोसर दिशि गेल।

ओतऽके माटि एखनो मोलायम छल ओ बत्तीके नोखी लऽकऽ माटिके कोरिअएलक आ ओहिमे बिया सभ छिट देलक आ ओ चुपचाप सेउ खाए लेल बैसि रहल।

सेउ खएलाक बाद फुलवारीसँ बाहर जाए लागल, तखने हवा चलल आ गाछ प्रशन्न भऽकऽ गाबऽ लागल, 'गाछ लगाएब खजाना जेकाँ होइत अछि, आब हमर काज भऽ गेल।'

नेहा अपन घर चलि आएल।



इमान्दारीक फल

एकटा राजा रहथि । जे बहुत बुढ़ भऽ गेल छलाह । एक दिन ओ अपन उत्तराधिकारी चयन करबाक निर्णय कएलैन्हि । अपन सहायक आ करकुटमैतामे ककरो उत्तराधिकारी ओ नहि चुनऽ चाहैत छलाह । हुनकर इच्छा छल, कोनो योग्य युवा राज्यके जिम्मेवारी सम्हारे तँए ओ राज्यके सभ महत्वाकांक्षी युवा सभके दरवारमे बजओलैन्हि । राजा हुनका सभसँ कहलैन्हि, 'हम बहुत बुढ़ भऽ गेल छी आब राजकाज सम्हारब हमरा लेल मुस्किल भऽ रहल अछि । हम चाहैत छी अपनेमे सँ कोनो युवक ई जिम्मेवारी सम्हारए ।'

राजा आगा कहलैन्हि,'आइ हम सभ गोटेके एक-एकटा बिया दैत छी अहाँ सभ ई बियाके अपन घरमे लऽ जा कऽ रोपू, खाध-पानि दिय आ एक सालक बाद लाबिकऽ हमरा देखाउ । ओही समयमे अहाँ सभमे सँ एक गोटेके अपन उत्तराधिकारी चुनव ।'

सुनील नामक एक युवक सेहो राजाके दरवारमे पहुँचल रहए । हुनको राजासँ एकटा बिया भेटल छल । ओहो उत्साह सँ घर अएलाह । ओ अपन माएके बिया देखओलैन्हि । संगहि ओ राजाक इच्छा सेहो माएके कहलैन्हि । हुनकर माए हुनका एकटा गमला देलक । खाध बला बढ़ियाँ माटि आनि सुनील गमलामे भरिकऽ, बिया रोपि लेलैन्हि । ओ समय-समयपर ओहिमे पानि दैत रहलाह । गमलाके रौदमे सेहो रखैत छलैथि । ओ देखलैन्हि तीन

हप्ता धरि गमलामे किछु नहि उगल अछि जखन कि हुनकर संग राजदरवार पहुँचल अन्य युवा सभक गमलामे पेँपी निकैलि आएल छल ।

एहिना चारि हप्ता आओर बीत गेल मुदा सुनीलके गमलामे किछु नहि निकलल । ओ बराबर पानि दैत रहलाह । देखिते-देखिते ६ महिना बीत गेल, मुदा सुनीलके गमलामे किछु नहि उगल । दोसर युवक सभके गमलामे लागल गाछ सभमे तऽ फूल सेहो फुलाए लागल छल । ओ किछु कहऽ वा बुझऽके स्थितिमे नहि छलाह । मुदा तइयो ओ गमलामे पानि दैत रहलैथि ।

आखिर एक साल पुरा भऽ गेल । तय भेल दिन सभ युवक अपन-अपन गमला लऽकऽ राजाक दरवारमे हाजिर भेला । राजा पुरा दृश्य देखिकऽ आश्चर्य चकित रहि गेलैथि । आगामे ठाढ़ युवा सभके गमलामे गाछ बड़का-बड़का भऽ गेल अछि । अधिकांश गमलामे सुन्दर-सुन्दर फूल सेहो फुलाएल छल । राजा देखिलैन्हि लाइनक अन्तिममे एक युवक अपन खाली गमला लऽ ठाढ़ अछि । राजा सेवकसँ कहलैन्हि, 'ओहि युवकके हमरा लग आनल जाए ।' हुनकर खाली गमला देखिकऽ सभ युवक हाँसऽ लागल । लजाइत सुनील बजला, 'महाराज बराबर कोरिएलहुँ, पानि देलहुँ तइयो गमलामे किछु नहि उगल । '

राजा सुनीलके पीठ थपथपबैत कहलैन्हि, 'नहि युवक हम देखि रहल छी अहाँक एहि गमलामे इमान्दारिक गाछ अछि । बूझल अछि एक साल पूर्व अहाँ सभके भूजल बिया देने छलहुँ जे कहियो ओहिमे सँ गाछ भइए नहि सकैत अछि । अहाँके छोड़िकऽ सभ बिया बदैलि देलैन्हि । अहाँक इमान्दारी आ साहस देखिकऽ हमरा दृढ विश्वास अछि अहीं उत्तराधिकारीक योग्य छी ।'

'भलेही अन्य युवक समस्यामे दोसर विकल्प चुनए सफल भेल मुदा हम इमान्दार व्यक्ति चाहैत छलहुँ , ' ओ आगा कहलन्हि ।

राजा घोषणा कएलैन्हि,'आइसँ एहि राज्यक उत्तराधिकारी ई युवक सुनील छथि ।'

जय घोषके संग दरवार अपन नव राजा सुनीलके स्वागत कएलक । बृद्ध राजा अपन मुकुट हुनकर माथपर राखि देलैन्हि ।



बैकुण्ठ अंकलक होरी

होरीके अवसरपर टोलक सभ मजकिया बच्चाके एक्केटा इच्छा होइत छल कोनो तरहें बैकुण्ठ अंकलके रंग लगाकऽ परम सुख प्राप्त करी । ओना तऽ टोलमे अनेक अंकल छल, मुदा बैकुण्ठ अंकलक व्यक्तित्व आ प्रशनाल्टी सभसँ अलग छल । हुनकर भारी शरीर दोसरसँ अलग छल । जखन ओ घरसँ निकलैति छलैथि तऽ देखऽ बलाके भ्रम भऽ जाइत छलैक जे सर्कस छोड़िकऽ हाथीक बच्चा कत्तऽसँ चलि अएल ।

बच्चामे हिनकर माए बाबु बैकुण्ठ नाम एहि दुआरे रखने छलन्हि जे ओ एक प्रकारसँ मरिएकऽ जीयल छलैथि । सभ कहि देने छल बच्चा बैकुण्ठ चलि गेलैक । बैकुण्ठ अंकल दिनमे दू बेर घरसँ निकलैत छलाह । भोर आ साँझ टहलऽके लेल जाहिसँ हाथी सनके देह घटिकऽ कोनो तरहे मनुक्ख सनके भऽ सकए ।

सभ दिन जेंका साँझू पहर ओ घूमिकऽ आबि रहल छलैथि । टोलक पुरान स्कूलक बरण्डापर बदमास बच्चा सभके सभा देखिकऽ रुकि गेलैथि । हुनकर कान सक्रिय भऽ गेल । कानमे सञ्जुके आबाज आएल, 'मित्र सभ एहि बेर होरीके मज्जा तखने आएत जखन बैकुण्ठ अंकलके रंग लगाओल जाए । एहिके लेल हमरा सभके किछो करऽ पड़त तऽ करब । होरीके एक हप्ता मात्र बँचल अछि तँए सभ किओ अपन-अपन डाँढ़ कैसि लिए ।'

सभ सञ्जुके बातके समर्थन कएलक । एहिपर रामु आश्चर्य भड़ल स्वरमे बाजल, 'हमरा ई बात बुझऽमे नहि आबि रहल अछि जे बैकुण्ठ अंकलके होरीके नामसँ एतेक खौंझ किए अछि ?'

श्याम बतबऽ लागल,'बूझल अछि कहिओ बैकुण्ठ अंकलपर किओ रंगक सँग कबछुआ लगा देने छल बस ओही दिनसँ बैकुण्ठ अंकल होरीके अपन दुश्मन मानऽ लागल छथि । '

सञ्जय किछु देर सोचैत रहल, ताहिके बाद बाजल,'ठीक छैक मित्र, हमहुँ निर्णय कएलहुँ अछि जे बैकुण्ठ अंकलके रंग लगाइएकऽ छोड़ब । एहिके लेल मारिए किए नहि खाए पड़ए ।'

बैकुण्ठ अंकल सुनलैन्हि तऽ डेरा गेलैथि ।

एहि बिच विकास बैकुण्ठ अंकलके लगे बाटे सभा स्थलमे पहुँचल आ बच्चा सभके हुनका बारेमे कहलक । बच्चा सभ ओतऽसँ छिटकऽ लागल, मुदा बैकुण्ठ अंकलके आबाज सूनिकऽ रुकि गेल । ओ सभ देखलक ओकर सभक आशा बिपरित ओ बिहुँसि रहल छलैथि । तऽ सभ किओके बहुत आश्चर्य भेल ।

'हम बुझैत छी बच्चा अहाँ सभ कए बर्षसँ होरी खेलऽ लेल छटपटा रहल छी ।' बैकुण्ठ अंकल बजलाह, 'मुदा एहि साल हम अहाँ सभके निराश नहि होबऽ देब । हमहूँ अहाँ सभ संग होरी खेलब ।'

'बुरा न मानो होरी है, हिप हिप हुर्रे....।' बच्चा सभ बाजि उठल तऽ अंकल सेहो हँसऽ लगलाह ।

सभक चेहरापर प्रसन्नतासँ चमैकि उठल आ बैकुण्ठ अंकल सभके हाथ हिलबैत ओतऽसँ चलि देलाह ।

बैकुण्ठ अंकल बच्चा सभके खुशी करबाक लेल स्वीकृति तऽ दऽ देलैन्हि मुदा ओ बढ़िया जेकाँ बुझैत छलाह जे होरी खेलऽके लेल ओ स्वंयम्के कोनो हालतमे तैयार नहिकऽ सकता । होरीसँ बँचऽके लेल हुनका कोनो तरिका निकालहे पड़त । अचानक हुनका एहि सभसँ बँचबाक लेल एकटा युक्ति सूझल । ओ आश्वस्त भऽकऽ ठोढ़पर थोड़े मुस्की अनलैन्हि ।

ओमहर लड़का सभके सेहो आश्चर्य भऽ रहल छल । होरीक नाममे डेराए बला बैकुण्ठ अंकल अतेक जल्दी कोना मानि गेलैथि ? अवश्य एहिमे

कोनो चाल हएत।

'मित्र हम हुनकर कोनो चालके नहि चलऽ देब, 'सञ्जु छाती फुलाकऽ बाजल।

होरीके तैयारीमे हप्ता बित गेल। आइ रंग खेलल जाएत। घरक माए, बहिन, भौजी सभ मीलिकऽ मालपुवा बनाबऽ लगली। भइया आ बाबु माउस किनऽ दोकानपर चलि गेलैथि आ एमहर बच्चा सभ अपन-अपन तैयारीक संग टोलक चौबटियापर पहुँच गेल। सञ्जय सभसँ पुछलक, 'रंग लऽ अनलहुँ की नहि ?'

'हँ, खूब कड़ा अछि, पण्डा जी दोकानक अछि।' विकास गर्वसँ भड़ल स्वरमे बाजल। 'रामु लग उजरका पेन्ट आ सोनू लग मोविल अछि। एहि बेर बैकुण्ठ अंकलके एहन रंग लगएबैनि जे अगिला होरी तक छोड़बैत रहता। '

'फेर शायद बैकुण्ठ अंकल होरी बिसरिए जएता।' सञ्जुके चुटकी लेलाक बाद सभ हँसऽ लागल।

आब ओ टोली बैकुण्ठ अंकलके घर चलि पड़ल। बाटमे जे भेटल तेकरा पिचकारीसँ रंग पटबैत गेल। मुदा प्रमुख लक्ष्य बैकुण्ठे अंकल छल। बैकुण्ठ अंकलक गेट बन्द छल। ओ गेटके भीतर डेराएल छलैथि। हुनका अभास भऽ रहल छल कनिको एम्हर-ओमहर भेल तऽ रंगसँ पोता जाएब। ओ नहुएसँ बजलाह, 'हमर समस्या बुझू अहाँ सभ हमरा हर्ट अटैक ...।' ओ वाक्यके पुरा करितथि ताहिसँ पहिने गेट खूजि गेल आ धीया-पुता सभ हुनका बाहर लऽ आएल आ रंग मलऽ लागल।

एहिसँ पहिने बच्चा सभ बैकुण्ठ अंकलके रंगसँ नहबैत रहए ताहि समयके अपनबुधि लगएबाक सही समय देखि अचानक धरफड़ाकऽ जमिनपर खसि पड़लैथि। हुनकर साँस कुम्हारके चाक जेकाँ जोर-जोरसँ चलऽ लागल। धीया-पुताके होश उड़ि गेल। 'नहि जानि की भऽ गेल बैकुण्ठ अंकलके।' सभ आश्चर्यमे छल।

तखने रामु आ श्याम अपनामे कानफुस्की करऽ लागल, 'लगैत अछि अंकलके कोनो नव चाल अछि। ' सञ्जु बाजल,'शायद मिर्गी लागि गेल छैन्हि चमराके जुत्ता सुँघेलासँ सभ ठीक भऽ जएतैन्हि।' रामु जखने अपन

जुत्ता सुँघएबाक लेल पएरसँ उतारलक कि बैकुण्ठ अंकल हिलऽ लगलैथि। ई हिलब देखि बच्चा सभ बूझि गेल एहिमे भग्गलके गन्ध अछि। श्याम बाजल, 'सन्नीके मामा पशुके डाक्टर छथि हुनका बजाओल जाए ओ बडका सुइया देतैन्हि तकरबाद ओ अपने ठीक भऽ जएताह।' सुइयाके नाम सूनिएकऽ बैकुण्ठ अंकलके देह सिहैरि गेल आब हुनका लगलैन्हि चाल उल्टा पड़ि गेल अछि ओ डेराएले उठलाह। हुनका उठैत देखिकऽ बच्चा सभमे खुशीक लहैरि चलि आएल। हुनकर अवस्था पुछऽसँ पहिने सभ हुनकापर रंग लगएबाक लेल टूटि पड़ल। अपने जालमे फँसल बैकुण्ठ अंकल चुपचाप धीया-पुतासँ रंग लगबा रहल छलैथि। जखन धीया-पुता हुनका छोड़लक तखन ओ धरफड़ाएल घरमे जाकऽ अपन मुँह अएनामे देखलैन्हि तऽ बुझएलैन्हि जे हुनकर मुँह नइँ किओ दोसर होइ।

❒

